

IDEAL - VOL. - V ISSUE - II 2017-18 ISSN 2319 - 359X (I.F.-4.08)



ISSN 2319 - 359X

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY HALF YEARLY
RESEARCH JOURNAL

IDEAL

VOLUME - V ISSUE - II MARCH-AUGUST - 2017

AURANGABAD

IMPACT FACTOR
2016
4.08
Impact Factor (www.sjifactor.com)

+ EDITOR +

Assit. Prof. Vinay Shankarrao Hatole

M.Sc (Math's), M.B.A. (Mkt), M.B.A (H.R),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod & Dirt), M.Ed.

+ PUBLISHED BY +



Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)

EDITORIAL BOARD

Editor : Vinay Shankarrao Hatole

Mehryar Adibpour Faculty of Computing London Metropolitan University, Holloway Road, London.	Dr. Ashaf Fetoh Eata College of Art's and Science Salmau Bin Abdul Aziz University. KAS
Dr. Altaf Husain Pandi Dept. of Chemistry University of Kashmir, Kashmir, India.	Dr. Ramdas S. Wanare Associate Professor & Head Accounts & Applied Stat, Vivekanand Art's Sardar Dalip Sing Commerce & Science College Samarth Nagar, Aurangabad (M.S.) - India.
Dr. Prashant M. Dolia Dept. of Computer Science and Applications Bhavnagar University, India.	Dr. P. A. Koli Professor & Head (Retd) Dept. of Economics, Shivaji University, Kolhapur - (M.S.) India.
Dr. S. Karunanidhi Professor Head, Dept. of Psychology, University of Madras. India.	Dr. Joyanta Barbora Head Dept. of Sociology University of Dibrugarh- India.
Dr. Rana Pratap Singh Professor & Dean School for Environment Science, Dr. Babasaheb Bhimrao Ambedkar University of Raebarcily, Lucknow- India.	Dr. A. V. Tejankar Asso. Prof. & Head Dept. Geology, Deogiri College, Aurangabad (M.S.) - India.
Dr. Jagdish R. Baheti H.O.D., SNJB College of Pharmacy Neminagar, Chandwad, Nashik (M.S.) - India.	Prof. P. N. Gajjar Head, Dept. of Physics, University of School of Sciences, Gujarat University, Ahmedabad- India.
Dr. Memon Ubed Mohd Yusuf Asst. Prof. Dept. of Commerce Sir Sayyed College Aurangabad (M.S.) - India.	

+ PUBLISHED BY +

Ajanta Prakashan

Jaisingpura, Near University Gate, Aurangabad. (M.S.) 431 004 (INDIA)

Contact : (0240) 6969427, Cell : 9579260877, 9822620877

E-mail : anandcafe@rediffmail.com, info@ajantaprakashan.com, Website : www.ajantaprakashan.com



CONTENTS

Sr. No.	Name & Author	Pages
24	Culture of India Ambikadevi R. Belamgi	125-128
25	A Status of Legal Education in India: Critical Study Nikhil Pradip Dube	129-130
26	Portrayal of Outdated Educational System in Mulk Raj Anand's Novel Lament on the Death of a Master of Arts Dr. Suresh B. Bijawe	131-135
27	New Trends in Boxing Scoring Shri. Sangram S. Deshmukh Dr. Netaji Muley	136-138
	Hindi	
१	आधुनिक समाज में तीन तलाक और नारी सशक्तीकरण अरुण कुमार गुप्ता	१-५
२	नासिरा शर्मा की कहानियों में मुस्लिम समाज और संस्कृति डॉ. अश्विनीकुमार नामदेवराव चिंचोलीकर	६-८

2

नासिरा शर्मा की कहानियों में मुस्लिम समाज और संस्कृति

डॉ. अश्विनीकुमार नामदेवराव चिंचोलीकर

सहयोगी प्राध्यापक, राजीव गांधी महाविद्यालय, करमाड, जि. औरंगाबाद.

हिंदी साहित्य संसार में नासिरा शर्मा एक ऐसी शख्सियत है, जो लगातार एशियाई समाज की विशेषकर मुस्लिम ऐशियाई समाज की तमाम समस्याओं को संसार के सम्मुख अपनी लेखनी के माध्यम से लाती रही है। उन्होंने अपनी कहानियों, उपन्यासों, अनूदित तथा वैचारिक आलेखों में वैश्विक मुस्लिम समाज की सजीव झोंकी प्रस्तुत की है। उनकी कहानियों में मुस्लिम समाज अपनी तमाम समस्याएँ, कुंठा, अभिलाशा, हर्ष, अभिशप्तता और प्रथा-परम्पराओं को अपने मूल रूप में लिए हुए है।

मुस्लिम समाज में 'मेहर' एक प्रथा है, जो नारी को पति के परिवार की ओर से उसके भविष्यनिर्वाह नीधि के रूप में उपलब्ध होता है। मेहर के संबंध में मौलवी इमाम का कथन है— "मेहर जितना जादा बँधवा लो, उससे क्या फायदा! लडकेवाले शान से आकर राजी हो जाते हैं, क्योंकि उन्हें देना तो एक छदम नहीं है। दिल को बहलाना है, जितने का बँधवा लो, वरना इस्लाम में मुताबिक तो निकाह के फौरन बाद मेहर की रकम की अदायगी का हुक्म है।"

इसी मेहर की रकम के लिए फरजाना-पति जुबैर से बैर पर उतर आती है।

चार बहनें शीशमहल की 'और' 'दहलीज' की कहानियों में मुस्लिम परिवार की लडकियों पर किए जानेवाले संस्कारों को रेखांकित किया गया है। आज के वैज्ञानिक युग में यह पुरातन मानसिकता व्यक्ति विकास में बाधक सिद्ध होगी। अतः नासिरा जी व्यक्ति विकास के लिए तथा राष्ट्र विकास के व्यक्ति स्वातंत्र्य या नारी स्वतंत्रता की शिफारिश करती हैं।

'दहलीज' कहानी की हुमैरा अपने पुराने विचारों के दादी की कैद से मुक्ति पाकर कहती है— "कैद और आजादी के बीच अकलमन्द आजादी को चुनेगा दादीजान! आपकी फेंकी कमन्द से दूर मुझे वहाँ तक जाना है जहाँ आसमान और जमीन मिलते हैं।"

नासिरा शर्मा 'दिलआरा' कहानी को अपनी प्रिय कहानी मानती है, जिसमें उन्होंने नारी से संबंधित मुस्लिम समाज के कानून के प्रमाणों के साथ अनेक बातों की व्याख्याएँ की हैं। वे कहती हैं— "पैगम्बर—ए—इस्लाम ने अपने वक्त को लड़के हुर औरतों के लिए बेहतर से बेहतर कानून बनायेकृ उन्हें अपनी पसन्द से शादी और मरजी से तलाक का हक दिया। समाज की जायदाद में हिस्सा और बेवा होने पर दूसरी शादी की एजाजत दी, गर्ज कि उस—दौर—ए—जिहालत में इस्लाम खासतौर से आजादी का पैगाम लेकर आया।"

पुराना-कानून और 'नई हुकूमत' कहानियों में नासिरा जी 'तीन तलाक' की चुनौती देती हैं। आज पुरुष-प्रधान व्यवस्था में पुरुष विवाह के बाद नारी का जीवन उसके आधार पर टिका हुआ डोला है। विधवा नारी को 'टूटे तरु' की / छूटी सपना-सी दीन माना जाता है। किंतु पुरुष पत्नी की उपस्थिति में अनेक स्त्रीयों से विवाह कर सकता है। मुस्लिम समाज में पुरुष के मात्र तीन बार 'तलाक' शब्दोच्चारण पत्नी उसका रिश्ता समाप्त हो जाता था। आज इस संबंध में पुख्ता कानून बनवाया गया है। किंतु नासिरा जी ने इस संबंध में काफी पहले अपने विचार प्रकट किए हैं— "तलाक उल सुन्नत को मान्यता शरियत में दी है। यह दो तरह की होती है। पहली तलाक—उल—अहसन जिसमें औरत नहायी धोयी हो और शौहर उस समय एक



ही वाक्य में तलाक दे दे और फिर बीवी से पत्नीवाला संबंध न बनाए । दूसरी तलाक उल-हसन है । इसमें शौहर तीन महीने अलक समय में यानी हर माह लहुर की स्थिती में (जब मासिक धर्म न हो) तलाक कहें तो अन्तिम बार तलाक मान लेता है और यह तलाक फिर तोड़ी नहीं जाती ।” 4

कहानी में शमीम अपनी बयाहता पत्नी को गॅवार समझ जीन्स पहननेवाली रुबीना से प्रेम करने लगता है जो घर रहने चला जाता है ,तब पंचायत बैठकर शमीम के होश ठिकाने लगाती है ।

‘पत्थर -गली’ संग्रह की कहानियों में भी भारतीय मुस्लिम समाज की प्रथा-परम्पराएँ ,रीति-रीवाज,त्यौहार और जीवन तमाम समस्याओं को उजागर कर मुस्लिम समाज और संस्कृती से परिचित कराने में दिलचस्पी दिखाई है

आलोच्य संग्रह की कहानियों में रुढिग्रस्त मुस्लिम समाज के साथ ही रुढियों की जंजीरों में जकडा समाज उन्हें मुक्त आकाश की सैर करना चाहता है । इस समाज में व्याप्त जडता या यथास्थिति तो दृष्टव्य है,किंतु हृदय की गहन मुक्ति की कामना अदृश्य है,जिसे हम नहीं देख पाते है । इस समाज का लहूलुहान होती स्थिति के प्रति लेखक का दृष्टिकोण है कि,“ आज मुसलमान पात्र जब आता है तो या तो हिंदू-मुसलमान दंगों में या फिर ईद के दिन पढी गयी नमाज और सुन्नत पर सुन्नी-शिया फसाद में, मगर कौन जानने की कोशिश करता है कि, उसकी कोमल भावनाएँ, उसकी कुतूहल अरमान,उसके खयालात क्या है ?” 5

‘सरहद के इस पार’ कहानी रेहान-सुरैया की दुखान्त प्रेम कहानी है । किंतु इसमें जातिजनजाति भेद का उल्लेख किया-गया है । त्रासदी यह है कि सय्यद की लडकी शेख को कैसे दी जा सकती है ?

आलोच्य कहानी में मुस्लिम समाज के इस यथार्थ की ओर भी इंगित किया गया है कि, बँटवारे में जो मुसलमान पाकिस्तान गए उन्हें वहाँ के मुसलमानों ने कभी भी अपना नहीं समझा और इधर हिंदू उन्हें पानी में देखते है । जब कि इनका यह कि भारत के मुसलमान मात्र भारत की पैदावार है । वे इसे ही अपना देश मानते है । इस तथ्य को वे पात्र स्वयं ही व्यक्त करती है -“ साले,कहते है कि तुम पाकिस्तानी हो । जाकर पूछो इनसे,तुम्हारे बाप-दादा कहाँ है । मेरे बाप उसी घरती के आगोश में गढे है । सबूत चाहिए तो जाकर देखो हमारे कब्रिस्तान,सबके सब मौजूद है वहाँ -”

तात्पर्य भारतीय मुस्लिम समाज असुरक्षा और जाति-जनजाति के पाटों पिसता नजर आ रहा है ।

‘ताबूत’ कहानी में मुस्लिम समाज के परिवार की सदस्य संख्या तथा खोखली खानदानी आन में अपने अरमान को अपने हाथों घोटने के लिए विवष परिवार चित्रण है । यहाँ नासिरा जी मुस्लिम समाज के ऐसे वास्तव को अंकित करती है जो आर्थिक विपन्नता से ग्रस्त होने के बाद भी खोखले आदर्शों और मुर्दा मर्यादाओं का दिंडोरा पीटते है । पात्रों की मानसिक स्थिति को वाणी देते हुए वे लिखते है-“ उस आँगन से डौली नहीं पाँच जनाजे निकलेंगे । जब तक वे पाँचों जीवेंगी,तब तक तक रेकार्ड घीसकर टूट न जावे, न घर से कदम निकालें ! ऐसे करम करेंगी तो बाबा की नाक नहीं कट जावेगी ?”

तात्पर्य मुस्लिम समाज अपने खोखले आदर्शों ,अंधविश्वास,अपने पर ही स्वयं लादे निर्बंध और पुरखों की इच्छा में अपने विकास की गति को बाधक बनाए हुए है । वह स्वयं इन सारी बातों से निकास पाने के लिए छटपटाता है । विकास के लिए तडपता है,किंतु परम्परा की जंजीरे उसे रोके हुए है ।

‘संगसार’ संग्रह की कहानी ‘गूंगा आसमान’ कहानी की मेहरअंगीज अपने पति श्री कैंद से तीन नारिकों की मुक्ति के अपने पति के विरुद्ध विद्रोह करती है । उसकी इस हरकतके फलस्वरूप उसे पति के अमानवीय कोप का मानी बनना पड़ा है । किंतु वह यह सबकुछ सहनेके लिए विवश है ।

नासिरा शर्मा एक विशिष्ट वर्ग पर लिखते हुए भी उनके मन-मस्तिष्क मात्र भारत ही नहीं, अपितु वैश्विक समाज को उपस्थित रहता है। नंद भारद्वाज उनके संबंध में कहते हैं - " एक लेखक की संवेदनाएँ, उसके अनुभवों का दायरा उन मानव तरह की बंदिशों को तोड़कर आम इन्सानों के दुख-दर्द से जुड़ जाता है। उसके सरोकार विराट मानव समाज से जुड़कर नज़रों को देखते हैं और उसके लिए कोई अपना या पराया नहीं होता।"

सारांश

नासिरा शर्मा जी ने अपनी कहानियों में मुस्लिम समाज को उसकी संपूर्ण संस्कृति के साथ सजीव किया है। वे इस समाज को वैश्विक समाज की तुलना में पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करती हैं। वे अपनी कहानियों के माध्यम से मुस्लिम समाज के अज्ञान, निराशा, भय, असुरक्षा के भाव और उसकी तमाम समस्याओं के प्रति पाठकों को सोचने के लिए विवश करती हैं।

संदर्भ ग्रंथ

- 1) खुदा की वापसी, नासिरा शर्मा पृ. 15
- 2) वही पृ. 79
- 3) वही पृ. 83
- 4) वही पृ. 108
- 5) पत्थर गली, नासिरा शर्मा पृ. दो शब्द
- 6) वही पृ. 29
- 7) वही पृ. 94
- 8) अक्सर - अप्रैल-जून 2012 पृ. 27



PRINCIPAL
RAJIV GANDHI ARTS, COMMERCE
& SCIENCE COLLEGE, KARMAD
TQ. & DIST. AURANGABAD.

11 > 1 >

178

IDEAL - VOL. - VI ISSUE - I ISSN 2319 - 359X (I.F.-4.08)



AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY HALF YEARLY
RESEARCH JOURNAL

IDEAL

VOLUME - VI ISSUE - I SEPTEMBER-FEBRUARY - 2017-18 AURANGABAD

IMPACT FACTOR
2016
4.08
Impact Factor (www.sjifactor.com)

+ EDITOR +

Assit. Prof. Vinay Shankarrao Hatole

M.Sc (Math's), M.B.A. (Mkt), M.B.A (H.R),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod & Dirt), M.Ed.

+ PUBLISHED BY +



Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)

EDITORIAL BOARD**Editor : Vinay Shankarrao Hatole**

<p>Mehryar Adibpour Faculty of Computing London Metropolitan University, Holloway Road, London.</p>	<p>Dr. Ashaf Getoh Eata College of Art's and Science Salmau Bin Abdul Aziz University. KAS</p>
<p>Dr. Altaf Husain Pandi Dept. of Chemistry University of Kashmir, Kashmir, India.</p>	<p>Dr. Ramdas S. Wanare Associate Professor & Head Accounts & Applied Stat, Vivekanand Art's Sardar Dalip Sing Commerce & Science College Samarth Nagar, Aurangabad (M.S.) - India.</p>
<p>Dr. Prashant M. Dolia Dept. of Computer Science and Applications Bhavnagar University, India.</p>	<p>Dr. P. A. Koli Professor & Head (Retd) Dept. of Economics, Shivaji University, Kolhapur - (M.S.) India.</p>
<p>Dr. S. Karunanidhi Professor Head, Dept. of Psychology, University of Madras. India.</p>	<p>Dr. Joyanta Barbora Head Dept. of Sociology University of Dibrugarh- India.</p>
<p>Dr. Rana Pratap Singh Professor & Dean School for Environment Science, Dr. Babasaheb Bhimrao Ambedkar University of Raebareilly, Lucknow- India.</p>	<p>Dr. A. V. Tejankar Asso. Prof. & Head Dept. Geology, Deogiri College, Aurangabad (M.S.) - India.</p>
<p>Dr. Jagdish R. Baheti H.O.D., SNJB College of Pharmacy Neminagar, Chandwad, Nashik (M.S.) - India.</p>	<p>Prof. P. N. Gajjar Head, Dept. of Physics, University of School of Sciences, Gujarat University, Ahmedabad- India.</p>
<p>Dr. Memon Ubed Mohd Yusuf Asst. Prof. Dept. of Commerce Sir Sayyed College Aurangabad (M.S.) - India.</p>	

✦ PUBLISHED BY ✦
Ajanta Prakashan

Jaisingpura, Near University Gate, Aurangabad. (M.S.) 431 004 (INDIA)

Contact : (0240) 6969427, Cell : 9579260877, 9822620877

E-mail : ajanta1977@gmail.com, Website : www.ajantaprakashan.com

1171

179



IDEAL - VOL. - VI ISSUE - I ISSN 2319 - 359X (I.F.-4.08)

SEPT.-FEB 2017-18

CONTENTS

Sr. No.	Name & Author	Pages
५	एक समान सिविल संहिता अरूण कुमार गुप्ता	१३-१६
६	कृष्णा अग्निहोत्री के उपन्यास नीलोफर में प्रतिबिम्बित आधुनिक नारी डॉ. अश्विनीकुमार नामदेवराव चिंचोलीकर	१७-२०

'आयडिल' या सहामयि प्रसिध्द झालेली मते मुख्य संपादक, संपादक मंडळ व सल्लागार मंडळास मान्य असतीलच असे नाही. या नियतकालिकात प्रसिध्द करण्यात आलेली लेखकाची मते ही त्याची वैयक्तिक मते आहेत. तसेच शोधनिबंधाची जबाबदारी स्वतः लेखकावर राहिल.

हे नियतकालिक मालक, मुद्रक, प्रकाशक विनय शंकरराव हातोले यांनी अजिंठा कॉम्प्युटर अँड प्रिंटर्स, जयसिंगपूरा, विद्यापीठ गेट, औरंगाबाद येथे मुद्रित व प्रकाशित केले.

t
s
e
c
t
i
a
e
p

6

कृष्णा अग्निहोत्री के उपन्यास नीलोफर में प्रतिबिम्बित आधुनिक नारी

डॉ. अश्विनीकुमार नामदेवराव चिंचोलीकर

सहयोगी प्राध्यापक, राजीव गांधी महाविद्यालय, करमाड, जि. औरंगाबाद.

आधुनिक का अर्थ “ नूतन ,नवीन,अर्वाचीन,अभिनव A Modern , new, recent”

भाषा शब्दकोष में आधुनिक का अर्थ इस तरह दिया हुआ है —“वर्तमान समय का,आजकल का,नवीन नव्य, नया ।”

प्रा.रजनी भोले आधुनिकता का अर्थ स्पष्ट करते हुए कहती है,“आधुनिकता मूल्य है,प्रक्रिया है,संवेदना है । साहित्यकार प्राचीन परंपरा के आधार पर कोई रचना लिखता है,तब वह उसे नए परिप्रेक्ष्य में,आधुनिक संदर्भों के साथ जोड़ता है । परंपरा हमारा जमीन पर रखा हुआ पैर है, तो आधुनिकता हमारा जमीन से ऊपर उठाया हुआ पैर है ।”

आधुनिकता के बारे में शुक्ल सुरेश चंद्र का मत है,“आधुनिकता का संदर्भ वर्तमान से है तथा वर्तमान की धारणा समय सापेक्ष है । अतः स्पष्ट है कि प्रत्येक युग में आधुनिकता के इस अर्थ का रूप परिवर्तित होता रहता है ।”

* उपर्युक्त परिभाषाओं से हमें यह बात स्पष्ट होती है कि जहाँ आधुनिकता होती है वही आधुनिक है । हर बात अपने-अपने समय के अनुसार आधुनिक ही होती है । यह कहा जाता कि आधुनिकता का अपना एक दायरा होता है ।

साहित्य क्षेत्र भी आधुनिकता से अछूता नहीं रहा है । साहित्य में आधुनिकता का प्रयोग हुआ है । पुराने कहानियों में वर्णनात्मकता होती थी और उसमें घटनाओं का क्रम होता था । आधुनिक रचनाकार चरित्र की संवेदना को अधिक महत्त्व देता दिखाई दे रहा है । अतः साहित्य के क्षेत्र में सुधार भी आधुनिकता का द्योतक है । आधुनिकता में नये का निर्माण तथा परिवर्तन प्राचीन काल की नारियों अपने दायरे से बाहर नहीं निकलती लेकिन आधुनिकीकरण के कारण नारी में परिवर्तन दिखाई देता है ।

आधुनिक महिला रचनाकारों में कृष्णा अग्निहोत्री,उषा प्रियंवदा,नासिरा शर्मा,मनु भंडारी,प्रभा खेतान,चित्रा मुद्गल,सूर्यबाला ,मेहरनिस्सा परवेज आदि महिला लेखिकाओं का नाम उल्लेखनीय है । इन रचनाकारों ने महिलाओं का दुख-दर्द,उनकी समस्याओं ,यातनाओं का वर्णन अपने साहित्य में किया है । इस शोध निबंध के लिस कृष्णा अग्निहोत्री के ‘नीलोफर’ उपन्यास का चयन किया गया है । इस उपन्यास में प्रतिबिम्बित आधुनिक नारी का वर्णन किया जा रहा है । नारी के विभिन्न रूपों को उजागर करने का प्रयास किया जा रहा है ।

कृष्णा अग्निहोत्री का जन्म ८ अक्टूबर १९३४ में नसीराबाद राजस्थान में हुआ है । कृष्णा जी हिंदी की शीर्ष महिला कथाकार मानी जाती है । उन्होंने मध्यम वर्ग की विदूरपताओं के साथ-साथ उनकी खुशियों को भी अपनी रचनाओं में प्रमुखता से जगह दी है । कृष्णा जी का पहला उपन्यास ‘जोधा मीरा’ १९७८ में प्रकाशित हुआ था । उनके चर्चित उपन्यासों में टपरेवाले,नीलोफर,बीता भर की छोकरी,बात एक औरत की आदि माने जाते हैं । अब तक उनके १० से अधिक उपन्यास,१२ कहानिसंग्रह,पाँच बालकथा संग्रह,दो आत्मकथा एवं एक रिपोर्टाज प्रकाशित हो चुके हैं ।

इनको 'रत्नभारती पुरस्कार', 'अक्षरा सम्मान' पुरस्कार प्राप्त है। फिलहाल वह इंदौर में रहकर साहित्य की सेवा कर रही है। कश्णा अग्निहोत्री लिखित उपन्यास 'नीलोफर' में आधुनिक नारी के विभिन्न रूप दृष्टिगोचर होते हैं। इस उपन्यास में प्रतिबिम्बित आधुनिक नारी का वर्णन किया जा रहा है।

भातीय संस्कृति में नारी को गौण स्थान दिया है मगर पाश्चात्य नारी की स्थिति इससे अलग है। आज नारी मुक्ति, नारी शिक्षा, समान अधिकार, आरक्षण, नारी सबलीकरण आदि बातों पर जोर दिया जात रहा है। आत्मनिर्भरता आधुनिक नारी का एक गुण है। आधुनिक नारी अपना ही नहीं तो अपने परिवार का पालन-पोषण करती नजर आती है। आधुनिक नारी आर्थिक दृष्टि से स्वयंपूर्ण होती दिखाई देती है। इस विवेच्य उपन्यास में आधुनिक नारी को परिवार का पालन-पोषण करने के लिए उसे अपने निजी जीवन की होली करनी पड़ती है। आधुनिक नारी उच्च शिक्षित होते हुए भी वह अपना जीवन दबावों में जी रही है। इस उपन्यास में 'नीलम' नामक नारी अपने परिवार का भरण-पोषण करती है। वह अपने घर की जिम्मेदारी संभालती है। सास के कहने में ही उसे रहना पड़ता है। सास नीलम को पैसा कमाने का साधन मानने लगती है। नीलम पेशे से डॉक्टर है। नीलम का डॉक्टरी व्यवसाय अच्छे से चलता है। नीलम की सास नीलम से कहती है, "नीलू, कुछ पेशेंट घर पर ही देख लिया करो। अहमद का बिजनेस अभी ठीक नहीं। घर-खर्च में आसानी रहेगी।" सास के साथ-साथ पति अहमद भी उसे पैसे कमाने का साधन मात्र समझता है। पति अहमद नीलू से झूठ बोलता है। आगे वह देशद्रोही बनता है। तब आधुनिक नारी नीलू चुप नहीं बैठती वह उसे मार डालती है।

एक काल ऐसा था जो नारी को सिर्फ घर की दहलज तक ही सीमित रखा जाता था। लेकिन शिक्षा के प्रचार-प्रसार के कारण आज की नारी पढी-लिखी सुशिक्षित नजर आती है। इसका श्रेय ज्योतिबा फुले को जाता है। उनकी बदौलत ही आज की आधुनिक नारी हमें नौकरपेशा नजर आती है। नारी में परिवर्तन आ गया है। वह सिर्फ चुल्हा-चक्की तक ही सीमित नहीं रह गई है। आज की आधुनिक नारी हर क्षेत्र में नौकरी करने लगी है। नौकरी करते-करते उसे अनेक मुसीबतें आ जाती हैं, वह उन मुसीबतों का सामना करती है और उसमें वह कामयाब भी होती है। विवेच्य उपन्यास 'नीलोफर' में आधुनिक नौकरीपेशा नारी को उजागर करने का प्रयास किया गया है। इस उपन्यास की नारी नीलम पढी-लिखी नौकरीपेशा है। लेकिन वह नौकरी में घुटन महसूस करती है। उसका दिल नौकरी में नहीं लगता। जाती भेद के कारण नौकरी से उब जाती है। नौकरी करने के बाद भी उसे घर का काम करना पड़ता था। नौकरी से थककर आने के बाद भी नीलू की सास उसे काम में जोत देती है। नौकरी से उबने कारण उसके पति की पैसों की हवस भी है।

'यत्र पूज्यन्ते नार्यस्तु, तत्र वस्तुते देवतं।' ऐसा पुराणों में कहकर नारी को ईश्वर तुल्य समझा गया। किंतु वास्तविक रूप आज के पुरुष प्रधान युग में नारी को दोयम दर्जा का मान उस से सारे नीच या हल्के स्तर के काम करवाये जाते हैं। दामकाजी जीवन में व्यस्त रहने के बाद भी घर और बाहर ऐसे कठिन पाठों के बीच वह पीसी जा रही है। आधुनिक नौकरीपेशा नारी परिवार की दृष्टि से एक पैसे कमाने का साधन मात्र बन जाती है। इस विवेच्य उपन्यास में भी नीलू परिवार का शिकार हो जाती है। नीलू की सास हमेशा नीलू को कोसती है, लेकिन नीलू की तनखाह देखकर उससे प्यार से भी पेश आती दिखाई देती है। इस उपन्यास का एक उदाहरण दृष्टव्य है,—"उसके बाद सब खाने पर टूट पड़े और फिर से हँसी मजाक में मशगूल हो उठे। उस घर में भूखी-प्यासी नीलू भरे-पूरे माहौल में एकदम अकेली



मायूस—सी लेटी थी।" १६ ऐसा लगता है कि कहीं कशणा जी अपना जीवन इस उपन्यास में बताने लगी है क्योंकि उनकी सास के कारण उनका परिवार में जीना कठीण हो रहा था। वह पति का घर छोड़कर पिता के पास आत्मनिर्भर के लिए चली जाती है। लेकिन पति के बिना उन्हें कुछ अच्छा नहीं लगता था। उनका विवाह एक टूजेडी बनकर रह गया था। मेहरुनिसा परवेज इनके बारे में लिखती है—“जो घाव समाज से मिले है, उन घावों से हम खुद ही अगर अपने पाठकों को परिचित करा दे तो यह एक अच्छी पहल है। इस पहल के लिए कशणाजी बधाई की हकदार है। निसंदेह जितने भी शब्द जितने भी घाव उन्होंने सहे हैं वे सारे शब्द के रूप में आ गए हैं और ये जो शब्द हैं वे सम्मान दिलाएंगे, मान दिलाएंगे।” १७

विवेच्य उपन्यास में नेतृत्व करनेवाली आधुनिक नारी का भी चित्रण हुआ है। इस उपन्यास की नायिका नीलम जाति-भेद नष्ट करने का नेतृत्व करती दिखाई देती है। आज हम देखते हैं कि आधुनिक नारी हर क्षेत्र में नेतृत्व करती दिखाई देती है चाहे फिर वह राजनीति हो, समाजकार्य हो, खेल क्षेत्र हो, अंतरिक्ष क्षेत्र हो। नीलम हिंदू धर्म की होने के बावजूद वह एक मुस्लिम लड़का अहमद से शादी करती है। इस शादी का विरोध उनके पापा करते हैं। तब वह अपने पापा से कहती है, “मैं धर्म को प्यार में अडंगा नहीं बनाऊँगी क्योंकि प्रेम का तो कोई धर्म नहीं है वह तो अपने आप में पूर्ण है।” १८ नीलम तो उस मुस्लिम लड़के से विवाह कर लेती है। विवाह के बाद वह सास के धार्मिक विचारों का शिकार हो जाती है। सास के धार्मिक विचारों को नीलम स्वीकार नहीं करती। वह अपने पति से कहती है, “मैं वापस जा रही हूँ अहमद। मुझसे नमाज पढ़ने की बात नहीं निभेगी।” १९ इस विवेच्य उपन्यास ‘नीलोफर’ में मार्गदर्शन करनेवाली नारी का भी रूप हमें मिलता है। नीलम का पति देशद्रोही है। वह अपने पति को भी मार्गदर्शन करती है। जब नीलम को पता चलता है कि अपना पति देशद्रोही है तो वह उसे मार डालती है। आधुनिक विचारों की नारी देश की भलाई के लिए नेतृत्व करती दिखाई देती है। नीलम की सहेली साबिहा बेटों की ओर ध्यान नहीं देती थी। वह अपने बॉयफ्रेंड के साथ ही रहती थी। उसे सही राह पर लाने का कार्य भी नीलम ही करती है। अतः हम यह कह सकते हैं कि नीलम एक श्रेष्ठ नेतृत्व निभानेवाली नारी है जो सभी को सही मार्गदर्शन कर सही राह पर लाना चाहती है। अगर कोई सही मार्ग पर नहीं आ रहा है तो उसे समाप्त कर देनेवाली आधुनिक नीडर नारी है।

आधुनिक नारी प्राचीन काल की नारी की तुलना में प्रगत दिखायी देती है। प्राचीन काल की नारीयों अन्याय—अत्याचारों को सह लेती थी। किंतु आज की नारी अन्याय—अत्याचार के विरोध करती दिखाई देती है। इस विवेच्य उपन्यास नीलोफर में भी हमें आधुनिक नारी के रूप मिलते हैं जो अति अन्याय—अत्याचार सहने के बाद विद्रोही बन जाती है।

इस उपन्यास की नायिका नीलम एक सुशिक्षित डॉक्टर। वह धर्म से हिंदू होते हुए भी एक मुस्लिम से विवाह कर लेती है। नीलम की सास मुस्लिम धर्म के अनुसार बर्ताव करने के लिए बाध्य करती है। तब नीलम इस प्रकार के अन्याय को सह नहीं करती। वह अन्याय—अत्याचार के खिलाफ विद्रोह करती है। उसकी सास उसे मुस्लिम धर्म के अनुसार पर्दा करने को कहती है तो वह उसका विद्रोह करती है। नीलम का पति देश में रहते हुए भी देश से गद्दारी करता है तब वह उसका विरोध करती है। इसका एक उदाहरण द्रष्टव्य है, “क्यों? देश तोड़ने के लिए हथियार बाँटते? कभी हिंदू को, कभी मुसलमान को।” २० नीलम देश के प्रति और अन्याय के प्रति विद्रोही बन जाती है। वह परंपरावादी विचारों के प्रति भी विद्रोही बनती है।

विवेच्य उपन्यास में नारी का अंतराष्ट्रीय रूप भी उभर कर आया है। भारतीय नारी शिक्षा के कारण आज विदेशों में भी दिखायी देती है। आज की भारतीय नारी का दायरा सिमित नहीं रहा है। उसने रुढ़ी प्रथा, परम्परा के सभी जंजीर तोड़कर अंतराष्ट्रीय उड़ान भरी है। हमें आज की भारतीय नारी शिक्षा, वकालत, डॉक्टरी पेशा, विज्ञान के माध्यम से देश-विदेश में भी दिखायी देती है। पारिवारिक विरोध को झेलते हुए व्यापार के लिए विदेश में जा बसी है। उस पर अनेक लांछन भी लगाये जाते हैं। उसे व्यापार बंद करने के लिए डराया-धमकाया जाता है। लेकिन आधुनिक नारी डरती नहीं वह अपने क्षेत्र में कामयाब होने का निरंतर प्रयास करती दिखायी देती है। ऐसी ही एक नारी विवेच्य उपन्यास में हमें दिखायी देती है जो पेशे से डॉक्टर है। वह दुबई में जाकर भी अपनी डॉक्टरी पेशा अच्छे से निभा रही है। इस डॉक्टर का नाम नीलम है। इस डॉक्टर का कहना है कि, "अरबी डॉक्टरों से अधिक काम भारतीय व पाकिस्तानी डॉक्टरों को करना पड़ता। एमरजेंसी ड्यूटी में पूरे चौबीस घंटे काम और काम।" "इस कथन से हमें यह पता चलता है कि पारिवारिक कठिनाइयों के बीच में भी नीलम एक सफल डॉक्टर के रूप में हमारे सामने दिखायी देती है। वहाँ जाकर अपना रौब जमाने में वह कामयाब हुई है।

निष्कर्ष

विवेच्य उपन्यास कश्णा अग्निहोत्री लिखित 'नीलोफर' का अध्ययन करने के बाद हम इस निष्कर्ष पर आते हैं कि आधुनिक नारी जो शिक्षित है और नौकरीपेशा है कभी-कभी उसे भी अपने अधिकारों से वंचित रहना पड़ा है। परिवार की जिम्मेदारियाँ निभाते, समय अपने जीवन में बहुत कुछ सहना पड़ता है। आधुनिक नारी सिर्फ नौकरी ही नहीं करती अपितु वह घर भी संभालती है। आधुनिक नारी की महत्वपूर्ण बात यह भी है कि कठिन परिस्थिति के बावजूद भी वह डगमगाती नहीं है। पुरुष प्रधान परिवार उसपर कई अन्याय ढाता है फिर भी वह उसका विद्रोह करती है। आधुनिक नारी कठिन परिस्थितियों के बीच भी सभी क्षेत्र में अपना योगदान दे रही है। उसका अंतराष्ट्रीय रूप भी हमें दिखायी देता है। वह विदेश में जाकर अपना व्यापार बढ़ाने का कार्य कर रही है।

संदर्भ

- 1) गोपीनाथ श्रीवास्तव—राजपाल पर्यायवाची कोश, हिंदी-अंग्रेजी, पृष्ठ २५
- 2) डॉ. रामचंद्र शुक्ल 'रसाल'—भाषा शब्दकोश, पृष्ठ २०४
- 3) सं. प्राचार्य सु. मो. शाह — 'राष्ट्रभवाणी' द्वैमासिक, पृष्ठ ४७
- 4) शुक्ल सुरेश चंद्र —आधुनिक हिंदी नाटक, पृ. ९
- 5) कश्णा अग्निहोत्री, नीलोफर—इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली संस्करण १९९८ पृ. १७३
- 6) वही २०२
- 7) मधुमती —जून १९९७ पृ. २९
- 8) कश्णा अग्निहोत्री, नीलोफर—इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली संस्करण १९९८, पृ. १६७
- 9) वही १७२
- 10) वही १८३
- 11) वही १८३

182

ROYAL - VOL. - VI ISSUE - II ISSN 2278 - 8158

DECEMBER-MAY- 2017-18

ISSN 2278 - 8158

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY HALF YEARLY
RESEARCH JOURNAL

ROYAL

VOLUME - VI ISSUE - II DECEMBER - MAY - 2017-18

AURANGABAD

Peer Reviewed Referred and UGC Listed Journal

IMPACT FACTOR - 2016

4.42

www.sjifactor.com

+ EDITOR +

Assit. Prof. Vinay Shankarrao Hatole

M.Sc (Math's), M.B.A. (Mkt), M.B.A (H.R),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod & Dirt), M.Ed.

+ PUBLISHED BY +



Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)

EDITORIAL BOARD

Editor : Vinay Shankarrao Hatole

Prof. P. T. Srinivasan Professor and Head Dept. of Management Studies, University of Madras, Chennai.
Dr. P. A. Koli Professor and Head (Retdf.), Dept. of Economics, Shivaji University, Kolhapur.
Dr. Sadique Razaque University Dept. of Psychology, Vinoba Bhave University, Hazaribagh, Jharkhand.
Dr. Uttam Panchal Vice Principal, Dept. of Commerce and Management Science, Deogiri College, Aurangabad.
Dr. Kailas Thombre Research Guide and Asst. Prof. Deogiri College Aurangabad.
Dr. Shekhar Gungurwar Hindi Dept. Vasanttrao Naik Mahavidyalaya Vasarni, Nanded.
Dr. Manerao Dnyaneshwar Abhimanji Asst. Prof. Marathwada College of Education, Dr. Rafique Zakaria Campus, Aurangabad.

Dr. Rana Pratap Singh Professor & Dean, School for Enviromental Sciences, Dr. Babasaheb Bhimrao Ambedkar University Raebareilly Road, Lucknow.
Dr. Kishore Kumar C. K. Coordinator Dept. of P. G Studies and Research in Physical Education and Deputy Director of Physical Education, Mangalore University, Mangalore.
Dr. S. Karunanidhi Professor & Head, Dept. of Psychology, University of Madras.
Dr. Ganesh S. Chandanshive Asst. Prof. & Head of Dept. in Lokkala Academy, University of Mumbai, Mumbai.
Dr. Rushikesh B. Kamble H.O.D. Marathi S. B. College of Arts and Commerce, Aurangpura, Aurangabad. (M.S.)
Dr. Jagdish R. Baheti H.O.D. S. N. J. B. College of Pharmacy, Meminagar, A/P. Tal Chandwad, Dist. Nashik.
Memon Sohel Md Yusuf Dept. of Commerce, Nizwa College of Technology, Nizwa Oman.

+ PUBLISHED BY +

Ajanta Prakashan


Jaisingpura, Near University Gate, Aurangabad. (M.S.) 431 004 (INDIA)

Contact : (0240) 6969427, Cell : 9579269877, 9822620877

E-mail : anandcafe@rediffmail.com, info@ajantaprakashan.com, Website : www.ajantaprakashan.com



CONTENTS

Sr. No.	Name & Author	Pages
३	वीर क्षत्राणी राणी पदमावती (पदमीनी) की युद्ध रणनीती इंदिरा रजेसिंग गिरासे डॉ. कुमार भुजंगराव कदम	१०-११
४	महिला सशक्तीकरण का यथार्थ चित्रण असि. प्रो. श्रीमती सांळुके आय.सी.	१२-१६
५	एक ऐतिहासिक फैसला ! तीन तलाक प्रा.डॉ.सुलक्षणा जाधव संज्योती जगन्नाथ रोठे	१७-१९
६	भारतीय अर्थव्यवस्था की मजबूती का आधार नोटबंधी फेल हुई? डॉ. सुभाष राठोड	१९-२२
७	शिल्प-कलाओं की प्रासंगिकता एवं बदलते प्रतिमान Ujjwal S. Kadode	२३-२६
८	हिन्दी भाषा के विकास में आकाशवाणी का योगदान प्रा. विक्रम जी. राठोड	२७-२८
९	डॉ. सुशीला टाफभर्रे के कविताओं में दलित विचार धारा सुनंदा तुकाराम सालवे	२९-३१
१०	दिखावट पर अमल प्रा. अरूण वामन आहरे	३२-३४
११	तुलसीदास के साहित्य की प्रासंगिकता प्रा. डॉ. राजेश्री भामरे	३५-३६
१२	कमलेश्वर के उपन्यासों में महानगरीय जीवन संजय सिताराम गायकवाड	३७-३८
१३	हिंदी - मराठी कहानियों में समाज और संस्कृति डॉ. अश्विनीकुमार नामदेवराव चिंचोलीकर	३९-४२
	 PRINCIPAL RAJIV GANDHI ARTS, COMMERCE & SCIENCE COLLEGE, K. V. ROAD, TQ. & DIST. AURANGABAD.	

'रॉयल' या सहामयि प्रसिद्ध झालेली मते मुख्य संपादक, संपादक मंडळ व सल्लागार मंडळास मान्य असतीलच असे नाही. या नियतकालिकात प्रसिद्ध करण्यात आलेली लेखकाची मते ही त्याची वैयक्तिक मते आहेत. तसेच शोधनिबंधाची जबाबदारी स्वतः लेखकावर राहिल.

हे नियतकालिक मालक, मुद्रक, प्रकाशक विनय शंकरराव हातोले यांनी अजिंठा कॉम्प्युटर अँड प्रिंटर्स, जयसिंगपूरा, विद्यापीठ गेट, औरंगाबाद येथे मुद्रित व प्रकाशित केले.

हिंदी - मराठी कहानियों में समाज और संस्कृति

डॉ. अश्विनीकुमार नामदेवराव चिंचोलीकर

सहयोगी प्राध्यापक, राजीव गांधी महाविद्यालय, करमाड, जि. औरंगाबाद.

कहानी मनोरंजन के साथ ही सामाजिक प्रबोधन करने वाली साहित्य की एक ऐसी विधा है, जो पाठकों के मन मस्तिष्क को प्रभावित कर उन्हें एक विशिष्ट उद्देश्य से प्रेरित कर, उनमें चेतना का संचार करती है।

प्रत्येक समाज की अपनी एक विशिष्ट भाषा होती है, जो उसकी संस्कृति को प्रतिबिम्बित करती है। भारतीय राष्ट्र में 1971 की जनगणना के आधार पर 1652 भाषाओं की पहचान प्राप्त हुई। प्रत्येक भाषा में कई बोलियाँ होती हैं। इस विभिन्नता में भी एकात्मता भारतीय संस्कृति की महत्त्वपूर्ण विशेषता है। इस एकात्मता को और अधिक दृढ़ बनाने का कार्य साहित्य करता है।

राष्ट्रीय एकात्मता के लिए भिन्न भारतीय भाषाओं के साहित्यिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन महत्त्वपूर्ण माना जाता है। इसी अहम उद्देश्य को पूर्ति के प्रयास में इस विषय का चयन किया गया है।

हिंदी-मराठी कहानी ने अपने जीवन में प्रारंभ से लेकर आज तक अनेक मोड़ पार किए। आज वह उसके परिष्कृत रूप में अपनी तेज गति से समाज सेवा एवं समाज परिष्कार का महत्त्वपूर्ण कार्य कर रही है। वह सामाजिक परिष्कार के साथ ही निश्चित रूप से सांस्कृतिक परिष्कार में भी अपना योग देती है।

विशिष्ट भू-प्रदेश में रहने वाले, निश्चित भाषा में व्यवहार करनेवाले, समान वेश-भूषा, खान, पान, परम्परा, रीति, रीवाज और उत्सवादी मनाने वाले जन समूह को समाज कहते हैं।

तात्पर्य, समाज और संस्कृति भिन्न होते हुए भी परस्पर अभिन्न हैं। डॉ. माधव सोनटक्के जी ने कहा है, "हर भाषा-क्षेत्र के साथ एक अलग सांस्कृतिक पहचान जरूर जुड़ी होती है, कृवह देश की प्रधान संस्कृति का एक अंग मात्र होती है।"

डॉ. रामधारी सिंह दिनकर जी के अनुसार, "वह सभ्यता से भिन्न गुण है। कृअन्य वस्तुएँ, संस्कृति नहीं है सभ्यता के सामान, है। मगर पोषाक पहनने और भोजन करने में जो कला है, वह संस्कृति की चीज है।"

तात्पर्य, घर-परिवार में हम पर जो संस्कार किए जाते हैं, समाज में जीवन-यापन करते समय उनका बाह्य प्रकटीकरण ही संस्कृति है।

साहित्य को समाज का दर्पण माना जाता है। इस कारण हिंदी-मराठी कहानियों में अपने समाज और संस्कृति का सम्पूर्ण प्रामाणिकता के साथ किया हुआ प्रस्तुतिकरण दृष्टिगोचर होता है।

भारतीय समाज की संस्कृति में विवाह एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण सामाजिक संस्कार माना जाता है। हिंदी-मराठी कहानियों में विवाह विधि का समान चित्रण किया गया है। इस अवसर पर घर को साफ सुथरा कर फुलों और पताकाओं से सजाया जाता है। दीप जलाकर सारे घर को प्रकाशित किया जाता है। हिंदी-मराठी कहानियों में इस सामाजिक विधि का सजीव चित्रण किया गया है। नासिरा शर्मा की कहानी 'खुदा की वापसी' में फरजाना के बी.ए. उत्तीर्ण करने के बाद उसके विवाह की तैयारी शुरू कर दी जाती है।

घर की नौकरानी चंदा गाना गाकर आनंद व्यक्त करती है—“ बन्नो तेरी आँखें सुरमेदानीकृ । वर की साफ सफाई की चिंता में अपनी सहयोगी को कोसती हुई वह कहती हैकृ” कल सुबह पुताईवाले आवे को है और ई चौधरीदेन सुबह से खाने छॉट नहीं पायी है ।”³

मराठी कहानीकार आशा बगे जी की कहानी 'रुक्मिणी' में भी विवाह का वर्णन है। कहानी की नायिका रुक्मिणी का विवाह अपने बाल सखा अनंत से निश्चित किया जाता है। इसके पूर्व पसंद नापसन्द, कपडों की खरिदारी, विवाह की रस्म और विवाहोपरान्त गहनों से सजी दुल्हनकी पहली रात आदि सभी बातों का सजीव चित्रण कहानी में किया गया है।

तात्पर्य भारतवर्ष के सभी धर्मों में विवाह विधि को समान रूप से मनाया जाता है। विवाह के पूर्व वर-वधू दोनों ओर के माता-पिता अपनी कन्या या सुपुत्र के लिए योग्य साथी की तलाश करते हैं। इस प्रथा का चित्रण भी हिंदी मराठी कहानियों में किया गया है। सुभद्राकुमारी चौहान की कहानी 'गौरी' में पिता राधाकृष्ण अपनी कन्या गौरी के अनुरूप वर की तलाश में जगह-जगह फिरता है।

नासिरा शर्मा की 'पुराना कानून' में नन्हा माली अपनी कन्या के अनुरूप वर की तलाश करता है।

आशा बगे की कहानी 'अज्ञात' का बापू भी अपनी बेटी मधुरा के लिए वर की तलाश में मारा-मारा फिरा करता है। यहाँ हिंदी मराठी दोनों कहानियों में पिता अपनी कन्या के विवाह के लिए छटपटाता है। उसका संवेदनात्मक हनन, शोषण और हृदयगत पीडा की समान अभिव्यक्ति हुई है। भारतीय संस्कृति की इस प्रथा में लडके-लडकी की पसंद-नापसंद को प्राथमिकता दी जाती है। इसी प्रकार उनकी 'पंख' और 'मल्हार' कहानियों में भी वधु-पिता की छटपटाहट को दिखाया गया है।

'यत्र पूज्यन्ते नार्यस्तु, तत्र वस्ते देवतं ।' ऐसा पुराणों में कहकर नारी को ईश्वर तुल्य समझा गया। किंतु वास्तविक रूप आज के पुरुष प्रधान युग में नारी को दोगम दर्जा का मान उस से सारे नीच या हल्के स्तर के काम करवाये जाते हैं। कामकाजी जीवन में व्यस्त रहने के बाद भी घर और बाहर ऐसे कठिण पाटों के बीच वह पीसी जा रही है। हिंदी-मराठी कहानीकारों ने नारी की इस दशा को यथार्थ रूप में चित्रित किया है।

मेहरुन्सिसा परवेज की 'विद्रोह', मनु भंडारी की 'क्षय', शशि प्रभा शास्त्री की 'समानांतर' और चंद्रकांता की 'पत्थर के राग' कहानियों में कामकाजी नायिकाएँ अपने पिता की गृहस्थियों चलाती हैं। किंतु फिर भी परिवार द्वारा उपेक्षित मानी जाती हैं।

नासिरा शर्मा की कहानी 'बावली' की सलमा जीवन में अनेक प्रकार से संघर्ष करती हुई अंत में अध्यापिका और खालिद जैसे सुशिल युवक की पत्नी बन जाती है। किंतु विवाह के चार वर्षों बाद भी संतान न होने की वजह से सास के द्वारा बुरी तरह आहत करा दी जाती है। इसी प्रकार उनकी 'मुट्ठीभर धूप', 'पतझड के फूल' में नारी जीवन की व्यथा को व्यक्त करनेवाली कहानियाँ हैं।

मराठी कहानीकार आशा बगे की कहानी 'चंदन' की मिसेस जावडेकर तत्वज्ञान की प्रोफेसर होने के बाद भी घर के सारे काम करती हैं और अपने मनोरुग्ण पति की सेवा भी। किंतु फिर भी अपने पति द्वारा कोसी जाती हैं।

मराठी कहानीकार अरविंद गोखले जी की डॉ. चंद्रकांत बंदिवाडेकरजी द्वारा अनूदित कहानी 'गंजुला' की नायिका मुजुला एक कामकाजी नारी है। वह अपने घर का पूर्ण ध्यान रखती है और ऑफिस से अर्पना काम भी पूर्ण तत्परता के साथ करती है। किंतु पति उसी से पूछता हैकृ. "अपने को छोडकर तुम्हारा ध्यान कहीं और होता भी है चाय के लिए भी मुझसे नहीं पूछा

तात्पर्य, आधुनिक युग में भी पुरुष वर्ग नारी की ओर मात्र हीन भाव से ही देखता है। नारी को मात्र दासी या सेविका के रूप मानता है।

हिंदी-मराठी कहानीकार भारतीय समाज की नारी की ओर देखने की दृष्टि में परिवर्तन की अभिलाषा व्यक्त करते हैं।

भारतीय समाज में मनुष्य के पश्चात श्राद्ध करने की परम्परा है। मान्यता है कि, ऐसा करने से मृतात्मा को शांति प्राप्त हो वह अनंत में लिन हो जाती है। किंतु आधुनिक भारतीय समाज आँखों देखी पर विश्वास करता है।

नासिरा शर्मा अपनी कहानी 'अपराधी' में भारतीय समाज को समझाना चाहती है कि मनुष्य ने समय और परिवेश के साथ बदलना चाहिए, अन्यथा उसमें ठहराव आ जायेगा और उसके व्यक्तित्व से एक बू आने लगेगी। कहानी का नायक मनोहर त्यागी एक रिटायर्ड एस.पी. है। वह छूत-अछूत में विश्वास के कारण किसके घर पानी तक नहीं पीता। यह देख अधिक दुखी होता है कि उसका मित्र चतुर्वेदी मांस भक्षण करता है। इसी अपराध बोध की सोच उन्हें अपने आप में वापस ले आती है।

मराठी कहानीकार विद्याधर पुंडलीक की कहानी सती का नायक पिता अपनी पत्नी की अंतिम ईच्छा की उसकी अस्तियाँ विसर्जित करायी जाय इस प्रथा परम्परा का विरोध करते हुए अपनी कन्या से कहता है, "इसके स्थान पर हम लोग तुम्हारी माँ की स्मृति में हिंदू संस्थाओं को दानस्वरूप कुछ रकम दे देंगे।"

आशा बगे की 'श्राद्ध' कहानी की सुमनताई अपने बेटे के आधुनिक विचारों का वरन कर भोजन और किया-कर्म में खर्च होनेवाले रुपये जरूरतमंद ब्राह्मण लडके को देते हैं। किंतु हफ्ते भर बाद वही लडका उन्हें विडी फूँकते हुए दिखाई देता है।

तात्पर्य समानुसार समाज और उसके वर्तन में परिवर्तन होता है, जिसे स्वीकार कर जीवन जीने में ही मनुष्य का उत्कर्ष है। हिंदी-मराठी कहानीकारों ने समाज में व्याप्त आडम्बर और अन्धश्रद्धा को नष्ट कर स्वस्थ एवं सुदृढ़ समाज की स्थापना का प्रयास किया है।

अपनी आधुनिकता की शकल में समाज का प्रत्येक मनुष्य इतना गतिशील बन गया है कि उसे अपने लिए भी समय नहीं है। मनुष्य स्पर्धामय जीवन में अपने रिश्ते-नाते सभी को विस्मृत कर देता है।

नासिरा शर्मा की कहानी 'दुनिया' की शोभना एक कॉलेज की प्राचार्य है। अपनी व्यस्तता में स्नह हँसना खेलना और रोना भी भूल गयी है। यही व्यस्तता उसे अपने पिता के अंतिम समय में दर्शन करने से भी रोकती है।

मराठी कहानीकार आशा बगे की कहानी 'हिवाला' का ऋषिकेश अपनी व्यस्तता के कारण अपनी माता के अंतिम समय में उसके पास भी नहीं जा सकता। माता की मृत्यु की वार्ता सुनकर उसका हृदय इतना आकोशित होता है कि फोन बंद होने पर भी वह फोन के ही पास खड़ा रहता है। नायक के भावों कहानीकार व्यक्त करती है "कृ" किंतु उसे ऋषिकेश का ही डर लगा। वह यह सब कैसे सहेगा। उसने उसके खंदे पर हाथ रखा। उसे उसने धिरे से हटा दिया। वह दरवाजा खोल बाहर बैंकयार्ड में आ गया। अंधेरा और ठंडी। बदन पर नाईट गाउन। ठंडी हवा दिल और दिमाग में उधम मचा रही थी।" 6

इन कहानियों के कथ्य से भारतीय समाज के विकास और व्यस्तता का बोध होता है साथ ही माता-पिता की सेवा को अपना धर्म कर्तव्य मानने वाली वृत्ति के न्हास की ओर भी ईशारा किया गया है। समाज की इसी प्रवृत्ति ने वृद्धाश्रम जैसी संस्थाओं को जन्म दिया है, जो सामाजिक न्हास की ओर इंगित करता है। किंतु आज ऐसे उदाहरण भी देखने में आते हैं कि आज का युवक अपनी अति व्यस्तता में भी अपने माता-पिता के लिए समय निकालता है, उनके खान-पान तथा भावों की कदर

करता है। साथ ही अपनी परम्पराओं का मान रखने के लिए स्वस्थ परम्पराओं को विकसित करने के लिए नये का समवाय कर उसे विकसित करने में योग देता है।

आशा बगे की कहानी 'मारवा' और 'अपराधी' में नायक अपने पिता की मान-मर्यादा और उनकी प्रथाओं का ध्यान रखते हैं।

इस प्रकार हिंदी मराठी कहानियों में भारतीय समाज और संस्कृति को जीवित रखने तथा उसे समृद्ध बनाने का प्रयास किया गया है।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि हिंदी-मराठी कहानीकारों ने अपनी कहानियों में अपने समकालीन समाज को उसकी संपूर्ण वास्तविकता के साथ प्रस्तुत किया है। समाज की तमाम इकाईयों को उनकी सभी समस्याओं के साथ अपनी कहानी में पेश कर संसार के सम्मुख रखा। हिंदी-मराठी कहानीकारों ने न्हास होती भारतीय संस्कृति की ओर भी इशारा किया है।

निष्कर्षत

कहा जा सकता है -

- 1) हिंदी-मराठी कहानीकारों ने अपनी कहानियों में समान रूप में कटू सामाजिक वास्तव को समाज सम्मुख रखा। जिससे समाज बोध ग्रहण कर अपनी कमीयों को दूर कर सके।
- 2) हिंदी-मराठी कहानियों में समाज की पीडा विरूपता, विसंगतियाँ और समाज में व्याप्त अनेक समस्याओं को समान रूप में वाणी देने का प्रयास किया गया है।
- 3) जिस प्रकार हिंदी कहानियों में समाज की परम्परागत अनेक प्रथाओं को अस्वीकार कर स्वस्थ प्रथाओं के निर्माण और विकास के प्रसार पर बल दिया गया उसी प्रकार मराठी कहानियों में भी।
- 4) हिंदी-मराठी कहानियों में समान रूप में नारी समस्या को वाणी प्रदान कर नारी की ओर देखने की समाज की दृष्टि में परिवर्तन की कामना की गयी है।

इस प्रकार हिंदी-मराठी कहानियों में समान रूप से समाज और संस्कृति के प्रश्नों को सुलझने की कोशिश की गई है।

संदर्भ

- 1) आधुनिक हिंदी-मराठी नाटक : डॉ. माधव सोनटक्के पृ.9
- 2) नवनीत अंक -7 वर्ष 60 जुलाई 2012 वृ.35
- 3) खुदा की वापसी : नासिरा शर्मा पृ.13
- 4) मराठी की चुनी हुई कहानियाँ: कमलेश्वर पृ.18
- 5) वही पृ.18
- 6) निसटलेले -आशा बगे पृ.67


PRINCIPAL
RAJIV GANDHI PNTS, COMMERCE
& SCIENCE COLLEGE, KARMAD
TQ. & DIST. AURANGABAD.



AJANTA - VOL. - VII ISSUE - I ISSN 2277 - 5730 (I.F.-5.2)



AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY QUARTERLY
RESEARCH JOURNAL

AJANTA

VOLUME - VII ISSUE - I JANUARY - MARCH - 2018 AURANGABAD

Peer Reviewed Referred and UGC Listed Journal



IMPACT FACTOR / INDEXING
2017 - 5.2
www.sjifactor.com

+ EDITOR +

Assit. Prof. Vinay Shankarrao Hatole

M.Sc (Math's), M.B.A. (Mkt), M.B.A (H.R),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod & Dir), M.Ed.

+ PUBLISHED BY +



Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)

EDITORIAL BOARD

Editor : Vinay Shankarrao Hatole

Dr. S. K. Omanwar Professor and Head, Physics, Sat Gadge Baba Amravati University, Amravati.	Dr. Rana Pratap Singh Professor & Dean, School for Enviromental Sciences, Dr. Babasaheb Bhimrao Ambedkar University Raebareilly Road, Lucknow.
Dr. Shekhar Gungurwar Hindi Dept. Vasantrao Naik Mahavidyalaya Vasarni, Nanded.	Dr. P. A. Koli Professor & Head (Retd.), Department of Economics, Shivaji University, Kolhapur.
Dr. S. Karunanidhi Professor & Head, Dept. of Psychology, University of Madras.	Prof. Joyanta Borbora Head Dept. of Sociology, University, Dibrugarh.
Dr. Walmik Sarwade HOD Dept. of Commerce Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University, Aurangabad.	Dr. Manoj Dixit Professor and Head, Department of Public Administration Director, Institute of Tourism Studies, Lucknow University, Lucknow.
Prof. P. T. Srinivasan Professor and Head, Dept. of Management Studies, University of Madras, Chennai.	Dr. Shankar Ambhore HOD Economics, Smt. Dankuwar Mahila Mahavidyalaya, Jalna.
Dr. P. Vitthal School of Language and Literature Marathi Dept. Swami Ramanand Teerth Marathwada University, Nanded.	Dr. Jagdish R. Baheti H.O.D. S. N. J. B. College of Pharmacy, Meminagar, A/P. Tal Chandwad, Dist. Nashik.
Dr. Sadique Razaque Univ. Department of Psychology, Vinoba Bhave University, Hazaribagh, Jharkhand.	Prof. Ram Nandan Singh Dept. of Buddhist Studies University of Jammu.
Dr. Gajanan Gulhare Asst. Professor Sant Gadge Baba Amravati University, Amravati, Amravati.	Dr. Madhukar Kisanrao Tajne Department of Psychology, Deogiri College, Aurangabad.

+ PUBLISHED BY +

Ajanta Prakashan

Jaisingpura, Near University Gate, Aurangabad. (M.S.) 431 004 (INDIA) Contact : (0240)
6969427, Cell : 9579260877, 9822620877 E-mail : anandcafe@rediffmail.com,
info@ajantaprakashan.com, Website : www.ajantaprakashan.com



२२	प्रा. डॉ. फड कालिदास दिनकर	आपत्ती व्यवस्थापन काळाची गरज	८९-९२
२३	डॉ. बाळासाहेब बाबुराव लिहिणार	व्यंकटेश मांडगूळकर यांच्या कथेची वैशिष्ट्ये	९३-९५
HINDI			
१	डॉ. आर. जी. बम्बोले	विनोबाजी का ब्रम्हचर्य एक अध्ययन	१-४
२	दुर्गा प्रसाद सिंह	मार्कंडेय की कहानियों में भूमि-समस्या	५-८
३	डॉ. विजयप्रसाद के. अवस्थी	भारतीय शिक्षा प्रणाली: कल आज और कल	९-१४
४	इंदिरा रजेसिंग गिरासे डॉ. कुमार भुजंगराव कदम	वीर शिरोमणी, अगम्य साहस और शौर्य का प्रतिक, स्थापत्यकला का जनक - महाराणा कुंभा	१५-१६
५	डॉ. वन्दना चौबे अमित गंगानी	गंगानी परिवार के आधर स्तंभ - पं. कुन्दनलाल गंगानी	१७-१९
६	प्रा. अरूण वामन आहेर	विष्णु प्रभाकर (अर्द्धनारीश्वर के विशेष संदर्भ में)	२०-२२
७	वैजनाथ मेघराज राठोड	बंजारन वेशभूषा	२३-२५
८	डॉ. लक्ष्मी गुप्ता	समकालीन महिला साहित्यकार निर्मला चौहान (इक्कीसवीं सदी की महिला साहित्यकार)	२६-२८
९	प्रा. डॉ. गुरुदत्त जी. राजपूत	संत तुकडोजी की सामाजिक चेतना	२९-३२
१०	प्रा. कृष्णा गायकवाड	सुरजपाल चौहान कृत - 'तिरस्कृत' में दलित जीवन और समस्याएँ	३३-४०
११	डॉ. अश्विनीकुमार नामदेवराव चिंचोलीकर	रूपनारायण सोनकर के साहित्य में अभिव्यक्त दलित चेतना	४१-४४

रूपनारायण सोनकर के साहित्य में अभिव्यक्त दलित चेतना



डॉ. अश्विनीकुमार नामदेवराव चिंचोलीकर

सहयोगी प्राध्यापक, राजीव गांधी महाविद्यालय, करमाड, जि. औरंगाबाद.

प्रास्ताविक

साठ के दशक में मराठी में प्रकाशित दलित लेखकों की आत्मकथाओं ने न केवल मराठी भाषिक समाज को बल्कि हिंदी भाषिक समाज को भी गहराई से प्रभावित किया है। दया पवार, शरणकुमार लिंबाले की आत्मकथाओं में अभिव्यक्त दलितों के शोषण की मार्मिक व्यथा ने इस तथ्य को स्थापित करने में मदद की है। दलित जाति के लेखक जिस विश्वसनीयता, तथ्यपरकता और संवेदना से अपने जीवन संघर्षों को व्यक्त कर सकते हैं। गैर दलित लेखकों द्वारा यह मुमकिन नहीं है। इन मराठी लेखकों के तथा अन्य तत्कालीन परिस्थितियों के परिणाम स्वरूप हिंदी में दलित लेखन का आरंभ हुआ। अपनी एक अलग वैचारिक शक्ति के साथ हिंदी प्रदेशों में दलित लेखक सामने आये। इनमें मोहनदास नैमिशराय, ओमप्रकाश वाल्मीकि, रमणिका गुप्ता, अजय नावरिया, डॉ. धर्मवीर, जयप्रकाश कर्दम, सत्यप्रकाश, प्रेमकपाडिया आदि का नाम आदर से लिया जाता है। इन सब में एक नाम रूपनारायण सोनकर का भी है, जो अपनी विशिष्ट एवं नयी दलित शैली के लिए प्रसिद्ध है। इन्होंने न केवल उपन्यास और कहानी ही लिखी बल्कि साहित्य के अन्य विधाओं में काव्य, नाटक आदि का भी प्रचूर मात्रा में लेखन किया है।

इन सभी लेखकों के लेखन के फलस्वरूप हिंदी में दलित साहित्य का अपना अलग अस्तित्व सामने आया है। जो दलित साहित्य से बहुत अर्थों में अलग है। वर्तमान समय में दलित साहित्य की सभी विधाओं में सृजन हो रहा है। इन दलित लेखकों अथक परिश्रम के परिणाम स्वरूप ही दलित साहित्य को व्यापक अर्थों में देखा जाने लगा। अगर डा. अम्बेडकर, कबीर, फुले, शाहु महाराज, रैदास, आदि के विचार ये स्वर नहीं देते तो शायद ही आज का दलित साहित्य इस मुकामपर पहुँचा होता। दलित के साथ जब साहित्य जुड़ जाता है तो वह साहित्य ऐसे लोगों का साहित्य हो जाता है जो मुख्यतः हिंदू समाज व्यवस्था में शस्त्र और शास्त्र में पीड़ित अपमानित और शोषित समुदाय में आते हैं। उनमें जहाँ अनुसूचित जातियाँ, अनुसूचित जनजाति, घूमंतू जातियाँ, आती हैं, वही वर्णव्यवस्था से पीड़ित जातियाँ, वेश्याएँ, देवदासियों, बंधुवा, मजदूर, झोपडपट्टीओं में रहकर नरकीय जीवन व्यतीत करनेवाले भी आते हैं।

आज दलित साहित्य का उद्देश्य दलित समुदाय में जागृति पैदाकर उनमें स्वाभिमान भरना और अपने ऊपर होनेवाले अन्यायों के विरुद्ध संघर्ष करने को तैयार करना है। दलित साहित्य में केवल दर्द, आह, पीडा, कसक ही अभिव्यक्त नहीं की जाती है। बल्कि उनके शमन के उपाय भी बताएँ जाते हैं। दलित साहित्य समाज में समता, स्वतंत्रता, बंधुत्वता और लोकतंत्र का हामी है। इसलिए जाति, वर्ण, रंग, नस्ल का विरोधी है। दलित साहित्य का अर्थ भाग्य भगवान, स्वर्ग, नरक, पुनर्जन्म, अवतार, मूर्तिपूजा इन, परंपरा रुढिवादीता का विरोधी है। डा. अम्बेडकर की विचारधारा से दलित साहित्य अनुप्रणित है। डा. अम्बेडकर के द्वारा चलाये गए

मुहीम की सार्थक परिणति है आज का दलित साहित्य है । इस दलित साहित्य की वृद्धि में रुपनारायण सोनकर भी अग्रणी है ।

रुपनारायण सोनकर द्वारा रचित दलित साहित्य की आंतरिक ऊर्जा या दलित चेतना जो है वह डा. अम्बेडकर के जीवन दर्शन और बुद्ध के तत्त्वज्ञान से संचालित है । समता,स्वतंत्रता,बंधुत्ववता,न्याय के जीवन अनुभव,संस्कृति और धर्म के नाम पर वास्तविकता को छिपा कर रखे गये ढोंग को नकारना,परिवर्तन के आधारपर जीवनमूल्यों का मूल्यांकन यथार्थ वर्णन आडम्बरहीन अभिव्यक्ति आदि उनके लेखन का सौंदर्य रहा है ।

समकालीन दलित साहित्य में सन 1962 ई नसेनिया जिला फत्तेहपुर (उत्तरप्रदेश) जन्में रुपनारायण सोनकर ने एक चर्चित नाटककार,कवि,कथाकार के रूप में अपनी पहचान बनाली है । रुपनारायण सोनकर ने अबतक लगभग 30 नाटक,तीन काव्यसंग्रह,तथा कई महत्त्वपूर्ण कथा संग्रहों एवं उपन्यासों के साथ समकालिन दलित साहित्य में अपनी उपस्थिति दर्ज की है । इन रचनाओं में 'खुबसुरत परियों का गलबहिया डांस' ' यदि गीदड नेता होता ' (काव्य) विषधर महानायक,समाजद्रोही एक दलित डिप्टी कलेक्टर (नाटयसंग्रह) छलछल नीति,छायावती(नाटक),जहरीली जडे(कहानी संग्रह),सदगति ,कफन,दूध का दाम (कहानी) डंक,सुअरदान (उपन्यास) तथा नागफनी (आत्मकथा) आदि विशेष ख्याति की रचनाएँ है । यह रचनाएँ न केवल दलित साहित्य की वृद्धि करती है बल्कि अपनी वैचारिक ,नए दलित सौंदर्य के संघर्ष को भी नई दिशा देती है ।

रुपनारायण सोनकर के 'महानायक' नाटक में धर्म के नाम पर जारी साम्प्रदायिकता का जीवन चित्रण किया गया है । तथाकथित आज के नेता कैसे अपने स्वार्थ के हितों की रक्षा के लिए दलित जनों का दलितों के द्वारा नरसंहार करवाते है ,इसका स्पष्ट और सटीक वर्णन किया है । एक ब्राह्मण कैसे अपने को सुरक्षित और अपने धर्म को बनाये रखने का कार्य किस रूप में करता है उसे महानायक के एक पात्रों के शब्दों में देखा जा सकता है," देखो वेदों में लिखा है कि प्रथम वर्ण का आदमी दिमाग से काम लेता है । बहादुर नहीं होता लेकिन बहादुरों को संचलित कर सकता है । द्वितीय वर्ण का आदमी बहादुर होता है जिनको आज क्षत्रिय कहा जाता है ,ये क्षत्रिय पिछड़ों दलितों को साथ लेकर अल्पसंख्यकों का जमकर मुकाबला करेंगे । ब्राह्मणों केवल जनसमुदाय को उकसाना है । जब दोनों तरफ गोलियाँ,चलने लगे तो ब्राह्मण चुपचाप वहाँ से हट जायेंगे । अन्य वर्ण के आदमी अल्पसंख्यों को सामना करेंगे ।" किंतु सोनकर का लेखन सिर्फ इस धर्मव्यवस्था को प्रस्तुत ही नहीं करता वरन इसका आकोश और हिम्मत से विरोध भी करता है ।

रुपनारायण सोनकर की आत्मकथा 'नागफनी' में देखा जा सकता है की,ग्राम नसेनिया में प्रत्येक वर्ष ब्राह्मणोंद्वारा रामचरित मानस का 24 घंटे का अखंड पाठ का आयोजन होता है । इस आयोजन में ब्राह्मणों के लडके-लडकियाँ अपने परिवार के साथ हिस्सा लेते हैं और अखंड पाठ करते है । संयोगवश हीरा(दलित) शाम के वक्त उधर जाता है । संधान के लडके ने उससे पाठ करने के लिए कहा । हीरा के मना करने पर भी वह नहीं माना और जिद करके उससे पाठ करवाता है । इतने में वहाँ ब्राह्मण शिवभजन अवस्थी पहुँच जाते है और हीरा को पाठ करते देख आग बबूला हो जाते है । आँख फाडते और गाली देते हुए उसे वहाँ से हटने के लिए कहा । हीरा इससे गुस्से में आता है और शिवभजन अवस्थी के मूँह पर रामचरित मानस को दे मारता है ।

शिवमजन अवस्थी ने मेरी तरफ बढ़ते हुए फिर गुस्सेलाल पीला होते हुए कहा -साले ! खड़ी-खड़ी हिंसा ताक रहा है-रख रामायण ।

रुपनारायण सोनकर के 'सुअरदान' उपन्यास में दलित और सवर्ण के बीच छुआछूत और भेदभाव के मुद्दे को भी व्यक्त किया गया है । दलित समुदाय की आर्थिक -सामाजिक स्थिति की तरफ इशारा करते हुए उपन्यासकार लिखता है कि झमन, छक्कन और बक्खन ने मिस हैरी सिल्वा को बताया कि जब बच्चे भूख से तड़पड़ते थे । हम लोग जानवरों के गोबर से जो दाने निकलते थे उसको घुलकर एवं सुखाकर पीसते थे फिर रोटिया बनाकर खाते थे । यह सुनकर किश्चयन लडकी आँखों में आँसू भर लेती है और कहती है-ओह! माई गॉड! लगता है हमारे समाज से यह कोई अलग समाज है । सदियों से ऐसा जीवन जीता आया है । ऐसे लोगों के जीवन में कोई उमंग नहीं । ऐसे लोग मरमर कर जीते हैं और जी-जीकर मरते हैं । इसके अलावा बड़े-बड़े शहरों में मजदूर वर्ग के रूप में कार्य कर रहे लोगों की जीवनस्थितियों का बड़ा ही सजीव चित्रण देखने को मिलता है ।

नागफनी में सोनकर जी के ग्रामीण समाज को समझने के लिए जो ब्राम्हणों का चाल चरित्र एवं षडयंत्रकारी सामंती आदि जो भी रूप है उसको हम कमशः देख सकते हैं । लेखक की चाची सर पर कलश रखने से ब्राम्हणों द्वारा पिटाई होने पर गाँव के सारे लोग यादव, खटिक, पासी, चमार, कोरी, वाल्मीकि सभी लोग एकजुट होकर पण्डितों से अपने अपमान का बदला लेने के लिए शर्तें रखी जो इस प्रकार हैं -पंडित अपने किए पर पश्चाताप करे और दलित महिलाओं की भी पीतल का कलश सिर पर रखकर चलने दें । इस तरह का अनुबंध दलित समाज की एकजूटता के माध्यम से ब्राम्हणों को मजबूर होना पड़ता है ।

लेखक अपने घर आये रिश्तेदार को चारपाई पर बैठाने से शिवमजन अवस्थी, हीरा को अपमानित करते हुए कहता है, -" साले ! अच्छूतो हमारे सामने चारपाईयों पर बैठे हो ये साला हीरा! तुम लोगों को चारपाईयों से नीचे उतरने से रोक रहा है।" आप सोच सकते हैं कि आजाद भारत में दलितों की क्या स्थिति है । 'नागफनी' में लेखक ने ब्राम्हणों को दलितों द्वारा योजना बनाकर चकव्युह में घेरा-"शिवमोहन चाचा उछल पड़े और बोले-अब साले ब्राम्हणों को ईंट का जवाब पत्थर से दिया जाएगा । तुम हीरा कतई मत घबराओ, इन सालों की ऐसी की तैसी... । वह आगे बोले -" समस्त गली के ब्राम्हण अपने जानवरों को लेकर पानी पिलाने तुम्हारे खेतों के अंदर से निकलते हैं क्योंकि तुम्हारे खेत बिल्कूल तालाब से लगे हैं ।"

रुपनारायण सोनकर का रचना-कर्म दलितजनों की उन सभी स्थितियों से अवगत कराता है, जिससे उनका शोषण होता है । दलितों को अस्पृश्य मानकर उन्हें समाज और धर्म से बहिष्कृत किया गया । इन की रचनाएँ सदियों से चली आ रही सड़ी-गली परम्पराओं पर बेदर्दी से चोट करती हैं । इस आत्मकथा में महत्त्वपूर्ण बात यह है कि लेखक ने अपने जीवन संघर्ष को रोया नहीं है बल्कि शान से जिया है जिसे आज का दलित युवक जीना चाहता है । अधिकार मांगने से नहीं मिलता अधिकार छिन जाता है ।" उक्त बातें आत्मकथा में पूर्ण रूप से पाठक को बोध कराती हैं । नागफनी भाषा, बिम्ब, वाक्य संरचना, तार्किकता, विलक्षण शब्द योजना आदि दृष्टि से अद्वितीय रचना है । जो दलित समाज को एक नई चेतना एवं पहचान के साथ जीने हेतु विवश करेगी एवं पथ प्रदर्शक साबित होगी ताकि दलित समाज को नये दिशा देगी ।

सारांश

इस प्रकार से रुपनारायण सोनकर दलित साहित्य के महानायक बनकर उभरे हैं। वह दलित साहित्य में एक अमिट छाप छोड़ रहे हैं। उनकी सभी रचनाओं में दलित चेतना अभिव्यक्त दिखाई देती है।

संदर्भ

1. महानायक, रुपनारायण सोनकर, दलित साहित्य एवं सांस्कृतिक अकादमी प्रकाशन, देहरादून।
2. दलित चेतना साहित्यिक एवं सामाजिक सरोकार, रमणिका गुप्ता।
3. नागफनी, रुपनारायण सोनकर, शिल्पायन प्रकाशन, दिल्ली।
4. अम्बेडकरवादी साहित्य की अवधारणा : तेजसिंह लोकमित्र।
5. सुअरदान, रुपनारायण सोनकर, शिल्पायन प्रकाशन, दिल्ली।



PRINCIPAL
RAJIV GANDHI ARTS, COMMERCE
& SCIENCE COLLEGE, KARMAD
TQ. & DIST. AURANGABAD.

132

AJANTA - VOL. - VI ISSUE - II ISSN 2277 - 5730 (L.F.-4.205)



AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY QUARTERLY
RESEARCH JOURNAL

AJANTA

VOLUME - VI ISSUE - II APRIL - JUNE - 2017 AURANGABAD

Peer Reviewed Referred and UGC Listed Journal



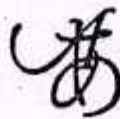
IMPACT FACTOR / INDEXING
2016 - 4.205
www.sjifactor.com

+ EDITOR +

Assit. Prof. Vinay Shankarrao Hatole

M.Sc (Math's), M.B.A. (Mkt), M.B.A (H.R),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod & Dirt), M.Ed.

+ PUBLISHED BY +



Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)

EDITORIAL BOARD

Editor : Vinay Shankarrao Hatole

Dr. S. K. Omanwar Professor and Head, Physics, Sat Gadge Baba Amravati University, Amravati.	Dr. Rana Pratap Singh Professor & Dean, School for Enviromental Sciences, Dr. Babasaheb Bhimrao Ambedkar University Raebareilly Road, Lucknow.
Dr. Shekhar Gungurwar Hindi Dept. Vasantao Naik Mahavidyalaya Vasarni, Nanded.	Dr. P. A. Koli Professor & Head (Retd.), Department of Economics, Shivaji University, Kolhapur.
Dr. S. Karunanidhi Professor & Head, Dept. of Psychology, University of Madras.	Prof. Joyanta Borbora Head Dept. of Sociology, University, Dibrugarh.
Dr. Walmik Sarwade HOD Dept. of Commerce Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University, Aurangabad.	Dr. Manoj Dixit Professor and Head, Department of Public Administration Director, Institute of Tourism Studies, Lucknow University, Lucknow.
Prof. P. T. Srinivasan Professor and Head, Dept. of Management Studies, University of Madras, Chennai.	Dr. Shankar Ambhore HOD Economics, Smt. Dankuwar Mahila Mahavidyalaya, Jalna.
Dr. P. Vitthal School of Language and Literature Marathi Dept. Swami Ramanand Teerth Marathwada University, Nanded.	Dr. Jagdish R. Baheti H.O.D. S. N. J. B. College of Pharmacy, Memnagar, A/P. Tal Chandwad, Dist. Nashik.
Dr. Sadique Razaque Univ. Department of Psychology, Vinoba Bhave University, Hazaribagh, Jharkhand.	Prof. Ram Nandan Singh Dept. of Buddhist Studies University of Jammu.
Dr. Gajanan Gulhare Asst. Professor Sant Gadge Baba Amravati University, Amravati, Amravati.	Dr. Madhukar Kisanrao Tajne Department of Psychology, Deogiri College, Aurangabad.

+ PUBLISHED BY +

Ajanta Prakashan

Jaisingpura, Near University Gate, Aurangabad. (M.S.) 431 004 (INDIA) Contact : (0240)
6969427, Cell : 9579260877, 9822620877 E-mail : anandcafe@rediffmail.com,
info@ajantaprakashan.com, Website : www.ajantaprakashan.com

नागरी लिपि विमर्श



सम्पादक

डॉ. शेख मुख्त्यार

डॉ. शेख मोहसीन

पराग प्रकाशन, कानपुर



मूल्य : छह सौ पचास रुपये मात्र

पुस्तक	:	नागरी लिपि विमर्श
सम्पादक	:	डॉ. शेख मुख्त्यार, डॉ. शेख मोहसीन
प्रकाशक	:	पराग प्रकाशन 311 सी. विश्व बैंक बर्रा, कानपुर- 208027
संस्करण	:	प्रथम, 2016 ई.
आवरण-सज्जा	:	छपाई घर, ब्रह्मनगर, कानपुर
शब्द-सज्जा	:	अथर्व ग्राफिक्स, जवाहर नगर, कानपुर
मुद्रक	:	साक्षी आफसेट कानपुर
मूल्य	:	650/-
ISBN	:	978-93-82409-19-9

- | | | |
|-----|--|-----|
| 14. | देवनागरी लिपि एक आदर्श लिपि
प्रा. राबन खुदाबक्ष मुल्ला | 85 |
| 15. | नागरी लिपि की वैज्ञानिकता
प्रा. डॉ. ऐनुर शब्बीर शेख | 89 |
| 16. | देवनागरी लिपि : स्थिति एवं गति
प्रा. डॉ. जंघाले झेड.एम. | 94 |
| 17. | देवनागरी लिपि : ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में
प्रा.डॉ. विठ्ठल वजीर | 99 |
| 18. | देवनागरी लिपि का विकासक्रम
प्रा. पवार एस.पी. | 101 |
| 19. | देवनागरी लिपि : विशेषताएँ और मानकीकरण
डॉ. संतोष रामचंद्र आडे | 108 |
| 20. | ब्राह्मी लिपि से देवनागरी लिपि का क्रमिक विकास
प्रा. डॉ. रमा दुधमांडे | 114 |
| 21. | आदर्श लिपि की कसौटी पर देवनागरी लिपि
का मूल्यांकन
डॉ. शेख अफरोज फातेमा शेखहबीब | 123 |
| 22. | देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता एवं महत्व
प्रा. आदिनाथ भाकड | 134 |
| 23. | वैज्ञानिक लिपि : देवनागरी
डॉ. अश्विनीकुमार चिंचोलीकर | 140 |
| 24. | देवनागरी लिपि : विकास एवं विशेषताएँ
डॉ. सुभाष इंगळे | 144 |
| 25. | देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता
डॉ. वसंत माळी | 149 |
| 26. | राष्ट्रीय एकात्मकता और देवनागरी लिपि
प्रा.डॉ. नंदनुरवाले | 152 |
| 27. | देवनागरी लिपि का उद्भव और विकास
प्रा. मुंडकर माधव राजप्पा | 156 |
| 28. | देवनागरी लिपि का इतिहास
डॉ. परमेश्वर जिजाराव काकडे | 160 |
| 29. | देवनागरी लिपि का विकास एवं सुधार की आवश्यकता
प्रा. प्रताप मिसाळ | 165 |





HINDI			
१	डॉ. अलका प्रकाश	रीतिकव्य का पुनर्पाठ - समाज शास्त्रीय विश्लेषण	१-३
२	संजय सिताराम गायकवाड	कृष्ण बलदेव के उपन्यास में मनोविज्ञान का चित्रण	४-६
३	प्रा. डॉ. गुरुदत्त जी. राजपूत	संत बहिणाबाई के हिंदी काव्य में कृष्णभक्ति	७-९
४	डॉ. अशफ़ाक़ इब्राहीम सिकलगर	'काला सूरज' उपन्यास में चित्रित मानवीय संबंधों का मार्मिक और यथार्थ चित्रण	१०-१२
५	डॉ. अश्विनीकुमार नामदेवराव चिंचोलीकर	शब्द विमर्ष	१३-१६

'अजिंठा' या त्रैमासिकात प्रसिध्द झालेली मते मुख्य संपादक, संपादक मंडळ व सल्लागार मंडळास मान्य असतीलच असे नाही. या नियतकालिकात प्रसिध्द करण्यात आलेली लेखकाची मते ही त्याची वैयक्तिक मते आहेत. तसेच शोधनिबंधाची जबाबदारी स्वतः लेखकावर राहिल. हे नियतकालिक मालक मुद्रक प्रकाशक विनय शंकरराव हातोलें यांनी अजिंठा कॉम्प्युटर अँड प्रिंटर्स जयसिंगपूरा विद्यापीठ गेट औरंगाबाद येथे मुद्रित व प्रकाशित केले.



करना, विरोध करना, व्यथित होना, मुक्त होना आदि सैकड़ों क्रियाएँ संस्कृत के कृदंत शब्दों से जोड़कर बनायी गयी है ।

हिंदी में प्रचलित "तत्सम शब्दों में कुछ तो संस्कृत के मूल प्रतिपदिक शब्द हैं और कुछ प्रथमा विभक्ति के एकवचन के रूप में।" जैसे—अन्न, फल, जल, अग्नि, कवि, रात्र आदि शब्द प्रतिपदिक हैं । संस्कृत में इन शब्दों के प्रथमा एकवचन के रूप अनुस्वार या विसर्ग लगकर बनते हैं । यह प्रयोग हिंदी प्रकृति के अनुकूल नहीं है । दूसरी ओर कुछ शब्दों को प्रतिपदिक रूप में न लेकर प्रथमांत रूप में ग्रहण किया गया है । माता(मातृ), पिता(पितृ), नेता(नेतृ), धनवान(धनवत्) आदि शब्द कोष्ठस्थ प्रतिपदिक रूपों से भिन्न प्रथमांत रूप में प्रचलित हैं ।

इसके अतिरिक्त कुछ शब्द ऐसे भी हैं, जिन्हें न तो मूल प्रातिपदिक रूप में ग्रहण किया गया और न ही प्रथमांत रूप में । इन शब्दों में या तो भाषा की प्रकृति के अनुसार ध्वनिपरिवर्तन कर लिया गया है, या मिथ्या सादृश्य या अज्ञान के कारण वे भिन्न रूप में प्रचलित हो गये हैं । चन्द्रमा, अप्सरा, यश, तेज आदि शब्द मूल रूप में (चंद्रमस, अप्सरस) सकारांत हैं और प्रथमा विभक्ति के एकवचन में विसर्गान्त । आधीन (अधीन), प्रण (पण) आदि शब्दों को भी वस्तुतः तत्सम शब्दों में गिनना चाहिए क्योंकि इनमें हुए ध्वनिपरिवर्तन भाषावैज्ञानिक नहीं, भ्रांतिजन्य हैं । अर्धतत्सम शब्द ।

"हमारे साहित्य में प्राचीन काल से ही अभिव्यक्ति की पूर्णता के लिए संस्कृत से शब्द ग्रहण करने की व्यापक प्रवृत्ति रही है । सूर, तुलसी, विहारी आदि कवियों की भाषा में परंपरागत तदभव शब्दों के अतिरिक्त बहुत बड़ी संख्या में ऐसे शब्द भी मिलते हैं जिन्हें निःसंदेह 'तत्सम' शब्द कहा जा सकता है ।" विरथा (वृथा), परीति (प्रीति), अमरित (अमृत), ग्यान (ज्ञान), जनम (जन्म) आदि इसी प्रकार के शब्द हैं, इन शब्दों को अवधी और ब्रजभाषा की प्रवृत्ति के अनुसार अपने ढाँचे में ढाल लिया गया है । संयुक्ताक्षरों का स्वरभक्ति के द्वारा सरलीकरण ऋ, ञ आदि का उच्चारण के अनुसार लेखन आदि ध्वनिपरिवर्तन प्राचीन और अर्वाचीन ब्रजभाषा, अवधी, राजस्थानी आदि बोलियों में सामान्य रूप से पाये जाते हैं । ऐसे शब्दों को 'अर्ध तत्सम' कहा जाता है । आधुनिक साहित्यिक भाषा में अर्धतत्सम शब्दों की संख्या अधिक नहीं है । कहानियों, उपन्यासों और नाटकों में स्वाभाविकता के आग्रह से ग्रामीण पात्रों की भाषा में 'अर्धतत्सम' शब्दों का प्रयोग हुआ है । मन्तर (मंत्र), किरपा (कृपा), सास्तर (शास्त्र), करम (कर्म), परसाद (प्रसाद) आदि शब्दों को 'अर्धतत्सम' वर्ग में परिगणित किया जा सकता है ।

2. तदभव शब्द

'तदभव' उन शब्दों को कहा जाता है, जिनका मूल स्रोत तो संस्कृत ही है, परंतु जो पालि, प्राकृत, अपभ्रंश आदि स्थितियों से होते हुए हिंदी में आये हैं और इस लंबी यात्रा में अनेक ध्वनि परिवर्तनों के कारण बहुत कुछ बदल गये हैं, जैसे —

आँख (<अँखि <अक्खि <अक्षि)

काम (<कम्म <कर्म)

चाक (<चक्क <चक)

पानी (<पानीअ <पानीय)

दूध (<दूदध <दुग्ध) हिंदी में सबसे अधिक संख्या तद्भव शब्दों की ही है । भाई,बहन,नाक,कान,मुँह,हाथ,पोंव दूध,दही,अनाज,पानी,तेल,घी,तालाब,कुआँ,खेत,घर,नींद,भूख,प्यास,नाच-गाना,खेल-कूद आदि शब्द तद्भव ही हैं ।

3. देशज शब्द

'देशज' या 'देशी' उन शब्दों को माना जाता है, जो या तो आर्यतर देशी भाषाओं से ग्रहण किये गये हैं या आर्यों ने ही उत्तरवर्ती काल में संस्कृतेतर धातुओं और शब्दों से गढे हैं । वस्तुतः यह पहचान पाना सरल नहीं है, कि कौन-सा शब्द आर्य भाषाओं से लिया गया है और कौन-सा आर्यतर भाषाओं से आया हुआ माना जाता है । शब्दों के स्रोतों का निर्दोष विश्लेषण व्यापक अध्ययन और अनुसंधान की अपेक्षा रखता है । अपभ्रंश काल में भी देशज शब्दों के संकलन का प्रयास हुआ था । आचार्य हेमचंद्र सूरि ने देशज शब्दों का एक कोश तैयार किया था, जो 'देशी नाम माला' के नाम से प्रसिद्ध है । इस कोश में अनेक तद्भव शब्दों को भी 'देशज' मानकर संग्रहीत कर लिया गया है । टी.बरो ने आर्यतर शब्दों का अध्ययन किया था । उसके अनुसार कुछ प्रचलित शब्दों का स्रोत इस प्रकार है -

1) द्रविड भाषाओं से गृहीत-अनल (अग्नि), कज्जल (काजल), नीर (जल), पंडित (विद्वान), माला (हार), मीन (मछली) ।

2) आग्नेय भाषाओं से गृहीत - कदली (केला), कर्पास (कपास), सर्षप (सरसों)

वस्तुतः यह सब कल्पना विकास मात्र है । डॉ. भोलानाथ तिवारी, डॉ. हरदेव बाहरी प्रभूति विद्वानों ने इन्हें 'अज्ञात व्युत्पत्तिमूलक' शब्द कहा है । डा. बाहरी ने गड़बड़, बड़बड़ाना, जगमग, छिलमिल, चिपचिपा आदि अनुकरण मूलक शब्दों तथा दादा, बाबा, काका आदि पारिवारिक शब्दों को भी 'देशज' शब्दों में गिना है ।

4. विदेशी शब्द

इस वर्ग में शब्द आते हैं, जिन्हें आर्यों ने अरबी, फारसी, तुर्की, अंग्रेजी, फ्रांसीसी, पुर्तगाली आदि विदेशी भाषाओं से लिया है । हिंदुस्थानियों पर अनेक देशों ने आक्रमण किया और यहा राज्य भी कई दिनों तक किया । उनमें से एक मुसलमान शासकों ने यहाँ अपनी सत्ता स्थापित कर ली और उनकी भाषा और संस्कृति व्यापक भारतीय भाषा और सांस्कृति का अंग बन गयी । शताब्दियों के इस संपर्क के कारण हिंदी में अरबी, फारसी और तुर्की के हजारों शब्द घुल-मिल गये हैं ।

कुछ प्रचलित अरबी-फारसी शब्द निम्नलिखित हैं- अल्लाह, रोजा, बुर्का, कमीज, पायजामा, शहर, देहात, आइना, इत्र, सरकार, हाकिम ।

यूरोपीय भाषाओं की भी काफी बड़ी शब्दावली हिंदी में विद्यमान है । पुर्तगाली और फ्रांसीसी ही नहीं उच्च और जर्मन भाषा तक के शब्द अंग्रेजी के माध्यम से हिंदी शब्दों में घुलमिल गये हैं । यूरोपीय भाषाओं के साथ हमारा संपर्क दो शतकों से अधिक का नहीं है, लेकिन अल्पकाल में ही शासन, वेशभूषा, खानपान, खेलकुद, रहन-सहन आदि से संबंधित हजारों शब्द हिंदी में आ गये हैं । जैसे-स्कूल, कालेज, युनिवर्सिटी, अस्पताल, नर्स, डाक्टर, रेल, इंजिन, मोटर, ट्रैक्टर, पम्प, रेडिओ, टेलीविजन, टेलीफोन, इंस्पेक्टर, डाइरेक्टर, पुलिस, पेन्ट, कोट, बुशशर्ट, क्रिकेट, फुटबॉल, हाकी, पोस्टकार्ड, मनीऑर्डर आदि ।

संकर शब्द - " हिंदी में कई शब्द, विशेषकर सामायिक शब्द, ऐसे हैं, जिनका एक अंश एक अन्य अंश दूसरी भाषा का । इन शब्दों को 'संकर शब्द' कहते हैं, जैसे - मोटर गाडी (अंग्रेजी+हिंदी), रेलयात्रा (अंग्रेजी+संस्कृत), बोरियत (अंग्रेजी+अरबी), चुहेदानी (हिंदी+फारसी), थानेदार (हिंदी+फारसी), घराना (हिंदी+ फारसी) आदि ।

डा.भोलानाथ तिवारी के निष्कर्ष⁵ के अनुसार हिंदी में चारों प्रकार के शब्दों का प्रतिशत इस प्रकार है -
तत्सम -20 प्रतिशत
तद्भव-70 प्रतिशत
गृहीत (विदेशी)-9 प्रतिशत
अज्ञात व्युत्पत्तिमूलक (देशज)-1 प्रतिशत

संदर्भसूची

1. हिंदी व्याकरण -पं.कामता प्रसाद गुरु पृ.55
2. हिंदी शब्दानुशासन -पं.किशोरीदास वाजपेयी,पृ.100
3. हिंदी व्याकरण - प.कामता प्रसाद गुरु,पृ.33
4. हिंदी व्याकरण विमर्श - तेजपाल चौधरी,पृ.45
5. हिंदी भाषा -डा.भोलानाथ तिवारी,पृ.66।

PRINCIPAL
RAJIV GANDHI ARTS, COMMERCE
& SCIENCE COLLEGE, KARMAD
TQ. & DIST. AURANGABAD.



ISSN 2277 - 5730
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

Volume - VII

Issue - III

July - September - 2018

English Part - IV / Hindi Part - III

**Peer Reviewed Referred
and UGC Listed Journal**

Journal No. 40776



ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

IMPACT FACTOR / INDEXING

2018 - 5.5

www.sjifactor.com

❖ EDITOR ❖

Assit. Prof. Vinay Shankarrao Hatole

M.Sc (Math's), M.B.A. (Mkt), M.B.A (H.R),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod & Dirt), M.Ed.

❖ PUBLISHED BY ❖



Ajanta Prakashan

Aurangabad. (M.S.)



The information and views expressed and the research content published in this journal, the sole responsibility lies entirely with the author(s) and does not reflect the official opinion of the Editorial Board, Advisory Committee and the Editor in Chief of the Journal "AJANTA".
Owner, printer & publisher Vinay S. Hatole has printed this journal at Ajanta Computer and Printers, Jaisingpura, University Gate, Aurangabad, also Published the same at Aurangabad.

Printed by

Ajanta Computer, Near University Gate, Jaisingpura, Aurangabad. (M.S.)

Published by :

Ajanta Prakashan, Near University Gate, Jaisingpura, Aurangabad. (M.S.)

Cell No. : 9579260877, 9822620877, Ph.No. : (0240) 2400877

E-mail : ajanta1977@gmail.com, www.ajantapublishing.com

AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - Impact Factor - 5.5 (www.sjifactor.com)



४. समकालीन महिला कहानिकारों के कहानियों में नारी

डॉ. अश्विनीकुमार नामदेवराव चिंचोलीकर

सहयोगी प्राध्यापक, राजीव गांधी महाविद्यालय, करमाड, जि. औरंगाबाद.

समकालीन शब्द एक समय सापेक्ष शब्द है। समय की धारणा है के सम्बन्ध में एक विशेषण है ज सामान्यतः एक ही समय में रहनेवाले रचनाकारों का बोध कराता है। हिंदी साहित्य में समकालीन यह अवधारण लगभग सत्तर के दशक की देन है। आधुनिकता के आड में बढ़ रही व्यक्तिवादी एवं समाजविरोधी प्रवृत्तियों व बहिष्कृत करते हुए सामाजिक प्रगतिशील प्रवृत्तियों को बढ़ावा देना समकालीन साहित्य का उद्देश्य कहा जा सकता है। अपने समय के समस्याओं को चित्रित करना, साहित्य में वर्णित कथ्य की वर्तमान में प्रासंगिकता तथा इतिहास में लिखित सामग्री या साहित्य का तत्कालिन समय में समकालीन सिद्ध होना आदि बातें समकालीनता व समसामायिकता में अभिष्ट है। पहले सीमित अर्थ में समकालीन शब्द का प्रयोग सामायिक तुलना से होता है यानी जो एक ही समय में हुए है। बाद में इस शब्द का प्रयोग वर्तमान के लिए किये जाने लगा। जो वर्तमान संदर्भ में मौजूद और सार्थक होता है। वह समकालीन है। " समकालीन लेखिकाओं ने नारी की समस्याओं व यथार्थ के साथ चित्रित किया है, उसके साथ ही भारतीय नारी समाज में नारी मुक्ति का आंदोलन देखा गया। आ भारतीय नारी के जीवन में काफी परिवर्तन दिखाई देता है। भारतीय समाज में नारी अपने अधिकारों के प्रति पहले से अधिक सजग प्रतीत लगती है।" ¹ आज 21वीं सदी के युग में नारी अपनी पुरानी रुढ़ियों के दायरे से बाहर निकलकर हर क्षेत्र अपना सिक्का जमा रही है। उसके स्थिति पर प्रकाश डालते हुए रोहिणी अग्रवाल लिखती है— "नारी पुत्री है, भगिनी है, पत्नी है, बस नहीं है तो नारी।" ² समकालीन साहित्य को पुरुष लेखकों के साथ महिला लेखिकाओं ने अपनी कलम के द्वारा नया मोड़ दिया है। महिला लेखन ने गति प्राप्त की स्वानुभाव की प्रामाणिकता और अपनी जीवन का चित्र होने के कारण नारी लेखन यथार्थवादी हो गया। महिला लेखन को दृष्टिकेंद्र में रखते हुए सूर्यबालाने लिखा कि,— " अनुभव वही कहता है कि लेखिकाओं का क्षेत्र अधिकतर घर और नारीमन रहा। जबकि पुरुष लेखन का घरबार दोनों, लेकिन हम इस क्षति की पूर्ति भी कर लेती है नारी मन अथाह गहराई पैठकर इतना तो दावे के साथ कह सकती है नारी की नारी इतने गूढ़, तिलस्म गुफाएँ और प्राचीर है कि उन्हें भेज पाना आसान नहीं, जिनको जितना सत्यता और ईमानदारी से नारी लिख सकती है उतना पुरुष नहीं।" ³

आधुनिक हिंदी के साहित्यकारों में नासिरा शर्मा का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। उन्होंने अपनी कहानियों अपने अनुभव तथा आसपास के परिवेश को समाहित किया है। नासिरा शर्मा का साहित्य में आगमन कहानी माध्यम से हुआ। कहानी साहित्य में नासिरा जी सदा गतिशील रही है। उन्होंने इन कहानियों द्वारा अध्येत सुस्मदृष्टि तथा प्रतिभा का परिचय दिया है।

1) रुढ़ि परंपरा से ग्रस्त नारी : नासिरा शर्मा लिखित 'पत्थर गली' इस संग्रह की कहानी है। कहानी का मुख्य पात्र है 'फरिदा' जो अपने ही परिवारों से शोषित होती है। 'फरीदा' में सभी तरह की योग्यता होने के कारण

भी वह पढ़ाई से वंचित रहती है इसका कारण ही उसकी उसकी रुढ़िवादी माँ और सांस्कृतिक मान्यताओं से ग्रस्त उसका भाई । जिसके कारण उसका पूरा जीवन उजाड़ देते हैं । वह सोचती है " इस घर में लगता था कि जाने उसकी आत्मा कहीं किसी पथरीली गली में भटक रही है जहाँ केवल पत्थर की दिवारें, पत्थर की जमीन, पत्थर की छत है जहाँ कोई भी निकास द्वार नहीं है । बस सफेद चिकने बड़े-बड़े पत्थर है । पत्थर की गली और पत्थर के कूचे-दर-कूचे है ।" ⁴ फरीदा अपने लिए जीना चाहती है पर उसका नतीजा कुछ नहीं निकालता । बल्कि उसी पर सारा घर इज्जत का भार डालकर संतोष पाते हैं । उसके अंदर का कोमल नारी हृदय मर चुका है । अंत में उसका भाई ही उसे पागल ठहराकर पागलखाने में भर्ती करवा देता है । जहाँ वह घर से बेहतर अधिक खुला वातावरण महसूस करती है । इस कथा के माध्यम से शोषित की गयी 'फरीदा' को दिखाया गया है ।

प्रतिभा संपन्न बहुआयामी व्यक्तित्व की लेखिका कृष्णा सोबती है । अपनी कहानियों में वे सामाजिक रुढ़ि, अंधविश्वास, परम्परागत मान्यताएँ आदि का खंडन करती हैं । इतना ही नहीं वे नारी को पुरुषों के बराबर का हकदार मानती हैं । प्रखर मानवतावाद इनके साहित्य की विशेषता है ।

2) ममता का और वात्सल्य का हृदयस्पर्शी वर्णन : 'भोले बादशहा' कहानी में माँ की ममता और वात्सल्य का हृदयस्पर्शी वर्णन सोबती जी ने किया है । इसमें पागलों की विवशता के साथ नारी मन की पीड़ा को भी दर्शाया है । स कहानी की माँ अपने पागल बेटे की हरकतों को सहती हुई परेशान हो चुकी थी, फिर भी आहतक उसके मुँह से नहीं निकलती । सहनशीलता की परिसीमा को इस कहानी में व्यक्त किया है । पागलों की विवशता उस समय चरमोत्कर्ष पर पहुँचती है जब बेटा अपनी माँ को ही घरवाली समझ बैठता है । " तू ही मेरी कुछ लगती है, तू ही डोले से उतरी है ! तू ही... ।" ⁵ इस भयावह नारी मन की पीड़ा और वेदना क्या हो सकती है ।

मैत्रयी पुष्पा ने नारी के विविध भाव भंगिमाओं को व्यक्त किया है । राजनीति जैसा क्षेत्र नारी से अनभिज्ञ क्यों रखा जाता है, यह सवाल मैत्रयी को सदैव सताता था । इसलिए राजनीति की उन्नत स्त्री के रूप में लेखन करती है ।

3) नारी का चुनावी क्षेत्र में सहभाग : 'फैंसला' इस कहानी में नारी की चुनावी क्षेत्र में सहभाग का वर्णन है ।

" मेरी जिंदगी की बागडोर जो पहले मेरे पति के हाथ में थी, अब मेरे ससुर के हाथ में आ गई थी । जिस भौंति मेरा पति मुझे हाँका करता था । अब मेरा ससुर मुझे हाँकने लगा था । जिस भौंति उसके जीते-जी मैं उसका मुँह ताका करती थी । उसके चले जाने के बाद अपने ससुर का मुँह ताकने लगती थी ।" ⁶ चुनाव क्षेत्र में महिलाओं की संख्या शुरु से अल्प रही है । इस कहानी में मैत्रयी ने उनके सहभागपर प्रकाश डालने की कोशिश की है ।

उपसंहार

समकालीन महिला कहानिकारों ने नारी जीवन की समस्याओं का अपनी कहानियों में उभारा है । नासिरा शर्मा का कथा साहित्य नारी समस्याओं से ग्रस्त है । नारियों को दुय्यमस्थान देकर उन्हें नकारा गया है । परिवार से ही नारी शोषण की शुरुआत होती है । समाज में जब वह अपना स्थान बनाना चाहती है तब उसे समाज की ओर से विरोध सहना पड़ता है । सोबती जी ने नारी के मनोविश्लेषणात्मक वर्णन के साथ बदलते सामाजिक संदर्भों

को अभिव्यक्त किया है। नारी संवेदना की सूक्ष्म अभिव्यक्ति सराहणीय है। सोबती जी का कहानी साहित्य जीवन के प्रति आशावादी दृष्टिकोण रखता है। मैत्रयी की इन कहानियों में नारी के हकों के प्रति सजग होने का इशारा करती है। स्वयं निर्णय क्षमता आत्मसम्मान, स्वयं अस्तित्व की पहचान बनाने में नारी को प्रेरित किया है। जीवन में शिक्षा का महत्त्व प्रतिपादित करते हुए हर नारी को शिक्षा प्राप्त करनी होगी और आत्मनिर्भर होकर जमाने के सामने अपने कर्तृत्व दिखाने होंगे ऐसा करते हुए आगे अपने विचार रखती है।

सारांश

इस तरह हम कह सकते हैं कि, नारी जीवन के प्रत्येक पहलू को महिला कथाकारों ने अपनी कहानियों में व्यक्त किया है। नारी के प्रति समाज का दृष्टिकोण है। पुरुषों के भौति स्त्री भी समाज का महत्त्वपूर्ण हिस्सा बने, उसे अपनी अभिव्यक्ति की पूर्ण स्वतंत्रता हो यही इन महिला कथाकारों का मुख्य उद्देश्य है। जिस दिन सभी की यह मानसिकता बनेगी उस दिन स्त्री-विमर्श को स्त्री की अपेक्षा पुरुष ही अधिक सशक्यता से उभारेंगे।

संदर्भ

1. समकालीन महिला लेखन एवं नारी चेतना - डॉ. वसंत गणपत माळी पृ.45
2. 21 वीं सदी के हिंदी साहित्य में दलित विमर्श-रोहिणी अग्रवाल पृ.25
3. समकालीन महिला लेखन-डॉ.ओमप्रकाश शर्मा, पृ.29
4. नासिरा शर्मा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व - डॉ. विजय राउत पृ.59
5. भोले बादशाहा-कृष्णा सोबती पृ.54
6. ललमनियॉ - फ़ैसला - मैत्रयी पुष्पा, पृ.39


 PRINCIPAL
 RAJIV GANDHI ARTS, COMMERCE
 & SCIENCE C. COLLEGE, KARMAD
 TC. & DIST. NANGAVAL



ISSN 2277-5730

Volume-VI

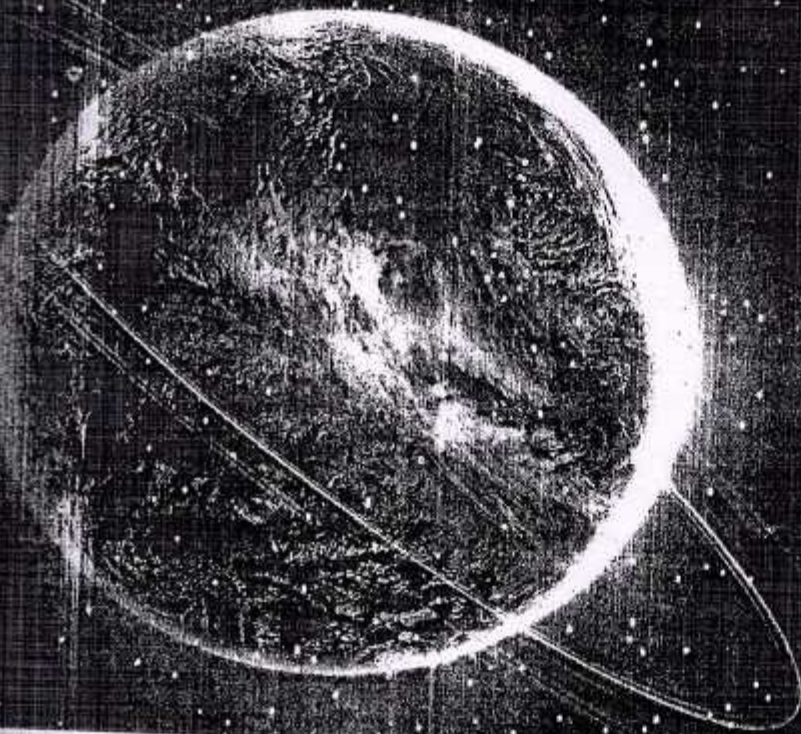
Issue-II

April-June-2017



AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA



Ajanta Prakashan

**Peer Reviewed Referred
and UGC Listed Journal**

AJANTA - VOL. - VI ISSUE - II ISSN 2277 - 5730 (I.F.-4.205)



AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY QUARTERLY
RESEARCH JOURNAL

AJANTA

VOLUME - VI ISSUE - II APRIL - JUNE - 2017 AURANGABAD

Peer Reviewed Referred and UGC Listed Journal



IMPACT FACTOR / INDEXING
2016 - 4.205
www.sjifactor.com

+ EDITOR +

Assit. Prof. Vinay Shankarrao Hatole

M.Sc (Math's), M.B.A. (Mkt), M.B.A (H.R),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod & Dirt), M.Ed.

+ PUBLISHED BY +

Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)



Sr. No.	Author Name	Title	Page No.
११	सारिका विष्णूदास मोहिते	रविंद्र शोभणे यांच्या पांढर कादंबरीतील दुष्काळ	५६-५९
१२	प्रा. डॉ. फड कालिदास दिनकर	महिला सबलीकरण	६०-६२
१३	डॉ. बाळासाहेब बाबुराव लिहिणार	दलित साहित्याचे प्रेरणास्थान: एक आढावा	६३-६६

'अजिंठा' या त्रैमासिकात प्रसिध्द झालेली मते मुख्य संपादक, संपादक मंडळ व सल्लागार मंडळास मान्य असतीलच असे नाही. या नियतकालिकात प्रसिध्द करण्यात आलेली लेखकाची मते ही त्याची वैयक्तिक मते आहेत.

तसेच शोधनिबंधाची जबाबदारी स्वतः लेखकावर राहिल. हे नियतकालिक मालक मुद्रक प्रकाशक विनय शंकरराव हातोले यांनी अजिंठा कॉम्प्युटर अँड प्रिंटर्स जयसिंगपूर विद्यापीठ गेट औरंगाबाद येथे मुद्रित व प्रकाशित केले.



उपाययोजना

महिलांना आपण अबला नसून सबला आहोत असे मानावे. समाजातील परंपरागत असलेल्या अत्याचारांचे उपाययोजना करावे. महिलांच्या साक्षरतेचे प्रमाण वाढवावे. विशेषतः ग्रामीण भाग. महिलांना आर्थिक, सामाजिकदृष्ट्या सर्व क्षेत्रांमध्ये महिला संरक्षणासाठी असलेल्या कायद्याची योग्य प्रकारे अंमलबजावणी करणे.

१. महिला अत्याचारासंबंधी जनजागृती करावी.
२. स्व- रोजगार निर्मितीवर भर द्यावा.
३. महिलांमध्ये आपल्या अधिकाराविषयी आत्मविश्वास निर्माण करावा.
४. महिला बचत गटांना प्रोत्साहन दिले जावे.
५. महिलांच्या व्यवसायिक शिक्षणावर भर दिला पाहिजे.
६. निर्णय घेण्याच्या क्षमतेचा विकास करावा.
७. विकास प्रक्रियेमध्ये समान भागीदारी निश्चित करावी.
८. सामाजिक आर्थिक जीवनाच्या सर्व क्षेत्रांमध्ये समान रूपाने त्यांची सहभागिता वाढावी यासाठी प्रयत्न करणे.

समारोप

आज जगाच्या लोकसंख्येत अर्ध्या स्त्रिया आहेत परंतु त्यांचे शिक्षणाचे प्रमाण कमी आहे. म्हणून आज आधुनिक काळात स्त्रियांची अवस्था फार वेगळी नाही. प्रत्येक क्षेत्रात स्त्रियांसोबत भेदभाव केला जातो. बालिका, भ्रूणहत्या केली जाते. तिच्यातून ती वाचली तर तीला जन्मापासून ते मृत्यूपर्यंत समान अधिकार मिळत नाहीत. मुलगा वंशाचा दिवा मानला जातो. परंतु मुलगी वंशाची व्योत आहे हे कोणीच मानत नाही. कुटुंबात व समाजात तीला अपमानास्पद वागणूक दिली जाते. हुंड्यामुळे तिच्यावर अन्याय, अत्याचार केला जातो. बलात्कार, छेडछाड, एकतर्फी प्रेमातून स्त्रियांवर, मुलींवर अत्याचार होताना आपण पाहतो. स्त्री हीच स्त्रीची मज्जु आहे असे मानले जाते. याची सुरुवात कुटुंबातून होते. आई स्वतः पुत्र व पुत्री यात भेद करते. तीच्या व्यवहारातून मुलीला अंतर्दुःखितेची भावना व मुलाला खोटास अहंकार निर्माण होतो. मुलगी परक्याचे धन मानले जाते. स्त्रियांना शारिरिक व मानसिक त्रास देणे ही एक सामान्य बाब बनली आहे. स्त्रियांच्या या स्थितीमागचे कारण स्त्रियांमध्ये असणारा शिक्षणाचा अभाव. स्त्री शिक्षण व स्वलीकरणाद्वारे त्यांना त्यांचे अधिकार मिळू शकतात. यासाठी समाजाची मानसिकता बदलणे गरजेचे आहे.

संदर्भग्रंथ

१. वर्मा ओ. पी. , भारतीय सामाजिक व्यवस्था, विकास प्रकाशन, कानपूर, २०११
२. लोहिया शैला, भूमि आणि स्त्री, गोदावरी प्रकाशन, औरंगाबाद, २००६
३. शर्मा प्रज्ञा, भारतीय समाज में नारी, प्रकाशक पोइटर, जयपूर, २००१
४. घटियाला रेहाना संपा., समकालीन भारतातल्या नागरी स्त्रियां, सेज, नवो दिल्ली, २००६
५. मिनाक्षी व्यास, नारी चेतना और सामाजिक विधान, राशनी कानपूर, २०००.

महिलांची वर्तमान स्थिती

बच्चे भारत की शक्ती नावाच्या पत्रिकेत महिलांची आजची स्थिती प्रकाशित केली आहे. यामध्ये असे सांगितले आहे की दरवर्षी १ लाख २५ हजार महिलांचा बाळंतपणाने मृत्यू होतो. प्रतिवर्षी १ कोटी २० लाख मुली जन्म घेतात परंतु फक्त ३०% मुलीच आपला १५ वा वाढदिवस पाहतात. ७०% ग्रामीण स्त्रियां या निरक्षर आहेत/ होत्या. पहिली वर्गात प्रवेश घेणाऱ्या प्रत्येक १० मुलीमागे ६ मुलीच ५ वी पर्यंत व दोनच मुली पदवीत्तर शिक्षण शिक्षण घेतात. प्रतिदर मिनिटाला हुंडाबळी तर प्रति २३ मिनिटाला एक अपहरण, प्रति २६ मिनिटाला एक उपेक्षितता तर ५४ मिनिटाला एक बलात्कार. महिला अत्याचारांच्या बाबतीत उत्तर प्रदेश क्रमांक १ वर आहे. अलिकडील काळातील सर्वेनुसार १००० पुरुषांमागे स्त्रियांचे प्रमाण ८००च्या आसपास कमी झाले आहे. यावरून महिलांची वर्तमान स्थिती लक्षात येते.

घटनात्मक कायदे स्त्री संरक्षणासाठी

भारतीय राज्यघटनेच्या कलम १५, १६, ३८ आणि ३९ मध्ये समानतेविषयी सांगितले आहे.

१. १८२९ ला सतीप्रतिबंधक कायदा केला.
२. हिंदू विवाह पद्धतीविषयी १९६५ मध्ये कायदा केला.
३. संपत्तीच्या समान अधिकाराविषयी १९५६ मध्ये
४. हुंडा प्रतिबंधक कायदा १९६१ मध्ये केला.
५. महिला व बालविकास मंत्रालयाची स्थापना १९८५ मध्ये केली.
६. राष्ट्रीय महिला आयोगाची स्थापना ३१ जानेवारी १९९२ ला केली.
७. २००१ महिला सबलीकरण वर्ष घोषित केले.
८. महिलांना राजकारणात ५०% आरक्षण देण्यात आले.

निष्कर्ष

वरील अभ्यासावरून असे निदर्शनास येते की,

१. भारतामध्ये महिलांच्या कल्याण आणि विकासासाठी ठोस पावले उचलली आहेत.
२. सरकारी कार्यक्रम आणि धोरण ठरवण्यात आले आहे.
३. महिलांच्या विकासासाठी आरक्षणाची ही व्यवस्था करण्यात आलेली आहे.
४. परंतु महिलांचा विकास जोपर्यंत शेवटच्या घटकापर्यंत पूर्ण इमानदारीने लारगु होऊ शकत नाही आणि यांना संरक्षण प्राप्त होत नाही तोपर्यंत महिला सबलीकरण होण अशक्य प्राय वाटते.



PRINCIPAL

RAJIV GANDHI COLLEGE, COMMERCE
& SCIENCE, AURANGABAD
TQ. & DIST. AURANGABAD.

२४	Study of Mental Health and Life Satisfaction of Ageing People	Dr. Ajit Chaudhari	
२५	A STUDY OF EFFECTS OF CIRCUIT TRAINING AND YOGA ON THE PSYCHOLOGICAL EFFICIENCY OF NATIONAL KARATE PLAYERS	Anil Prabhatrao Minkar Prof. Dr. P.R. Rokade	७९
२६	Women Police	Atul Ashok Chaudhari	८२
२७	Religious Pluralism and Identity problem in India	Mr. Shaikh Gafoor Ahmed	८४
२८	Indian Muslims: Political Ideology and interreligious harmony	Dr. Farooqui Quayyum M. Younus	८९
२९	21 st Century's Hindi Poetry and Woman Life (With Particular reference to Sunita Jain)	Vaishali S. Rokade, Kaminee A. Ballal	९४
३०	१८५७ च्या राष्ट्रीय उठावात मुस्लीम महिलांचा सहभाग एक - अभ्यास	भा. शेख हुसेन इमाम	९७
३१	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विद्यापीठातील ग्रंथालयाच्या स्विकृतीचा आढावा	संदीप गोरख साळवे	१०२
३२	प्रयोगवाद तथा नयी कविता में प्रगतशील चेतना	प्रा. डॉ. गिरी डी.व्ही.	१०५
३३	साहित्य, समाज और हिंदी सिनेमा	डॉ. प्रा. ए. जे. बोवले	१०९
३४	Childhood Is Another Name Of Learning Process Concept Formation And Development	Dr. Jyotsna S. Pusate	११२
३५	सूफी संप्रदाय तत्त्वविचार	टकले गणेश प्रल्हादराव	११५
३६	यशवंत मनोहर व ज.वि.पवार यांचा दलित काव्यत्मक दृष्टीकोण	डॉ. बाळासाहेब बाबुराव लिहिणार	११७
३७	ममता कालिया के दौड़ उपन्यास में भौतिकता की प्यास	डॉ. प्रा. शिवाजी सांगोळे	१२१
३८	दलित कविता: सामाजिकतेचे भान	प्रा. डॉ. वैशाली सू. रोकडे	१२५
३९	Existing Literature Review on Problem Faced by Women Entrepreneurs in India	Dr. Syed Tanvir Badruddin	१२९
४०	DEMAND: INTERPLAY OF ABILITY AND PREFERENCE	Gaurdas Sarkar	१३२
४१	Emerging Issues and Challenges before Women Entrepreneurs in India	Dr. Chandrakant W. Gajewad	१३८
४२	A Study of changes in Tax Rate for Assessment Year २०१७-१८	Dr. V. S. Kshirsagar	१४१
४३	फास्टफुडचा (असंतुलित) युवा वर्गाच्या आरोग्यावर होणारा प्रभाव : एक समाजशास्त्रीय अभ्यास	प्रा. भिमराव पुंडगे, प्रा. डॉ. यशवंत चव्हाण	१४४
४४	माहितीचा अधिकार अधिनियम २००५ : प्रचार व प्रसार होण्याची गरज	प्रा. दिलीप गोविंदा पाटील	१४८
४५	ग्रामीण साहित्याची चळवळ	प्रा. डॉ. उमेश चांगदेव मुढे	१५०

यशवंत मनोहर व ज.वि.पवार यांचा दलित काव्यत्मक दृष्टीकोण

डॉ. बाळासाहेब रामचंद्रराव लिहिणा,

मराठी विभाग प्रमुख,
राजीव गांधी प्रतिष्ठान, करम



प्रस्तावना :

आधुनिक मराठी साहित्याच्या प्रवाहाला बळ देण्याचं काम दलित साहित्यानं केलं आहे. दलित कविनी किंवा लेखकांनी वास्तव व ज्यलंत अनुभवांच नवं विश्वचं दलित साहित्यात उभं केलं आहे. त्यातील वास्तवता ही प्रभावी तर आहेचं त्या सोबतच आकृतीबंधही वेगवेगळ्या स्वरूपाचा आहे. त्यापैकी दलित कादंबरी, आत्मकथने दलित कविनी त्यांच्या काव्यांनी मराठी वाङ्मयामध्ये वेगळे, स्वतंत्र असं आस्तित्व निर्माण केलं आहे.

त्यापैकी दलित साहित्यातून उठून दिसणारा साहित्य प्रकार म्हणजे दलित काव्य होय. दलित साहित्यकांनी वहुतांश दलित काव्य हा प्रकार हाताळला आहे. त्या पैकीचं यशवंत मनोहर व ज.वि.पवार या दोन कविंचा प्रामुख्याने यात उल्लेख आहेत. त्यांनी आपल्या काव्यातून दलित व तळागाळातील शोषित व पिडीत समाजाचे वास्तव रूप समाजासमोर मांडून त्यांचे आत्मभान जागृत केले आहे.

दलित साहित्याचा अर्थ व व्याख्या :

दलित साहित्य ही संकल्पना समजून घेण्यासाठी अनेक दलित अभ्यासकांनी त्यांची व्याख्या वेगवेगळ्या अर्थाने केली आहे. म्हणून दलित साहित्याच्या काही निवडक व्याख्या पुढील प्रमाणे :

१. दलित जाणिवेतून निर्माण झालेले साहित्य, दलित म्हणजे मानवी स्वातंत्र्य ही या जाणिवे मागील प्रेरणा आहे. हेच त्यांचे मूल्य आहे. वर्णव्यवस्थेच्या चौकटीत दलित जिवणाची जी कोंडी होते, जी आवमाणकारक परिस्थिती प्रत्ययास येते. त्यांच्या विद्रोह म्हणजे हेच दलित साहित्य व त्याचे स्वरूप आहे. - शरचंद्र मुक्तिबोध.
२. हजारो वर्षं ज्यांच्यावर अन्याय झाला अशा अस्पृश्यांना दलित म्हटले पाहिजे व त्याच वर्गातील लेखकांनी निर्माण केलेल्या साहित्यास दलित साहित्य म्हणावे प्रा.केशव मेश्राम
३. अन्याय विरुद्ध आवाज उठविणाऱ्या संतापातून फुटणाऱ्या आश्रूचे मोल हे सर्वात मोठे असते. जो सामान्यांच्या भाषेत बोलतो. ह्या तळागाळाचे एक उदांत स्वरूप म्हणजे दलित साहित्य होय. पु.ल. देशपांडे
४. अत्यंत मानवाला स्वातंत्र्य, प्रतिष्ठा आणि भौतीशून्य सुरक्षितता मिळाली पाहिजे, अशा भूमिकेवरून निर्माण झालेली एक जेव्हाच्या न्याय वाङ्मयात अभिव्यक्त होते त्याला मी दलित साहित्य मानतो प्रा.नरहर कुरूंदकर :

अशा प्रकारे बऱ्याच निवडक अभ्यासकांनी आपापले मत या संदर्भात व्यक्त केले आहेत. म्हणून त्याच अनुशंगाने दलित कवितेची व्याख्या सुद्धा आपणाला संगता येते. ती पुढील प्रमाणे:

दलित कवितेची व्याख्या :

१. ज्या काव्यामध्ये दलित वर्गाची पिळवणूक त्यांचा विविध स्तरावर होणारा पाशवी छळ, अन्याय अत्याचार आणि प्रस्थापितांच्या सगळ्या शोषक मूल्यव्यवस्थेच्या दहनाचा ज्या काव्यातून वास्तव व भावनात्मक जाहिरनामा मांडला जातो त्याला दलित काव्य असे म्हणतात.

२. विद्रोह, वेदना आणि नकार यांनी मुक्त अशी दलित संवेदनाची अभिव्यक्ती ज्या काव्यातून मांडली जाते त्याला दलित काव्य असे म्हटल्या जाते.

दलित साहित्याचे प्रेरणा स्थान :

मराठी वाङ्मयामध्ये दलित साहित्याचा उदय १९६०-६२ च्या दरम्यान झाला आहे. दलित साहित्याच्या उदयासाठी अनेक असे लक्षात येते की, दलित साहित्याच्या अनेक प्रेरणा अनेक अभ्यासकांनी सांगितल्या आहेत. कुणी निग्रो साहित्य हा प्रेरणा मानता तर कुणी मार्क्सवादी प्रेरणा मानता तर कुणी गौतम बुद्धापर्वत प्रेरणास्थान शोधतात. पण दलित साहित्याचे एकमेव प्रेरणास्थान म्हणजे डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर हेच आहेत.

हजारो वर्षे अधरात खितपत पडलेल्या दलित समाजाला किंवा जिवणाला डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांनीच आत्मभान जागृत करून आत्मभानाचा प्रकाश दिला आहे. त्याच्या ठायी स्वाभिमानाची ज्योत प्रज्वलित करून अन्याया विरोधात निर्धाराने प्रतिकार करण्याचे सामर्थ्य निर्माण केले आहे. त्यामुळेच अनेक दलित कवींनी आपल्या लेखनिला सुरवात केली आहे. त्याच दलित कवी पैकी यशवंत मनोहर हे एक आहेत. म्हणून यशवंत मनोहर यांच्या दलित काव्यांच्या सर्वात पुढील प्रमाणे अभ्यास करता येतो.

यशवंत मनोहरांच्या काव्याचे स्वरूप व वैशिष्ट्ये :

यशवंत मनोहर यांची कविता विचार प्राधान असून विचार चिंतनपर आहे. त्याच बरोबर त्यांच्या कवितेत भावनात्मकता आणि आत्मनिष्ठा यांचा समन्वय साधला आहे. यशवंत मनोहरांची कविता चावांक-मार्क्सच्या विचारातून निर्माण झाली आहे. मनोहर हे आध्यत्मवादी तत्वाज्ञान नाकारतात. म्हणूनच त्यांच्या काव्यांचे संशोधन करतांना प्रा. कवठेकर म्हणतात की, विचारवंताचे विचार किंवा परंपरेचे तत्वज्ञान हे मनोहरांच्या कवितेचे विषय नसतात. विचारवंतांची वृत्ती आणि पारंपारिक तत्वानाचे दृश्य जीवन स्वरूप त्यांनी त्यांच्या काव्यलेखनरस प्रवृत्त केले आहे. असे वाटते म्हणून दुःख, दैन्य, व्यथा, वेदना, यांच्यामुळे उफाळून आलेल्या भावनांच्या कलोळाची विचार धारणा व केलेले शब्दरूप हे मनोहरांच्या काव्याचे स्वरूप व वैशिष्ट्ये सांगता येतात.

डॉ. यशवंत मनोहर यांची कविता ही आत्मनिष्ठ, भवनिष्ठ आहे. विद्रोहाची, बंडाची कविता आहे. त्यांची कविता ही रंजनवादी नाही कलेसाठी कला मानणारी नाही त्यांची कविता कलात्मक आणि काव्यात्मक आहे. खरीखूरी कविता जो अंगभूत समर्थ गुणवैशिष्ट्यांनी नटलेली असते ती सारी वैशिष्ट्ये वगळून मनोहरांच्या कवितेत प्रभावीपणे प्रकट झालेली आहेत. हेच त्यांच्या काव्याचे वैशिष्ट्ये आहेत.

मनोहरांच्या कवितेतील सामाजिकता व जाणिव :

मनोहरांच्या काव्यातील सामाजिक जाणिव म्हणजे विचारवंताचे विचार नसून ती मनोहरांची प्रतिक्रियात्मक जाणिव आहे. हे लक्षात घ्यावे लागते. म्हणून परंपरा व वर्तमान यांच्याबद्दलचा उग्र प्रलोभ हा मनोहरांच्या सामाजिक जाणिवेचा गाभा आहे. मनोहरांनी देव, दैव, अध्यात्म, वर्णव्यवस्था यावर तीव्र टिका केली आहे. प्रस्थापितांना जाळीत सुटण्याची, आक्रमक भाषा मनोहरांनी वापरली आहे.

सामाजिक जाणिवेच्या माध्यमातून दलित शोषितांच्या दुःखाला मनोहरांची कविता शब्दबद्ध होते. आणि प्रकाश देते आणि दलितांच्या सामाजिक क्रांतिचे ती शब्द बनते. मनोहरांच्या कवितेतील सामाजिकता ही सामूहिक जाणिवेचा अविष्कार नसून आत्मनिष्ठ भावनेचा अविष्कार करणारी आहे. मनोहर यांच्या दलित कवितेतील विचारा प्रमाणे ज.वि.पवार





यांच्याही दलित काव्यांच्या आढावा आपणाला पुढील प्रमाणे घेता येतो.

ज.वि.पवारांच्या कवितेचे स्वरूप व वैशिष्ट्ये :

ज. वि. पवार यांच्या नाकेबंदी या काव्यसंग्रहातून आपल्या जीवनातील अनुभव दलित जिवणाच्या हजारो वर्षांपासून झालेल्या नाकेबंदीची जाणीव कवितेतून होतांना दिसते.

डॉ. वि. पवारांच्या कवितेचे स्वरूप :

दलित समाजाची हजारो वर्षांपासून झालेली कुचंबणा ही नाकेबंदीच होती. ती नाकेबंदी ज.वि. पवार यांनी नाकेबंदी या काव्यसंग्रहातून उठून दिसणारे आहे. दलितांच्या शोषितांच्या दुःखाबद्दल पवार अतिशय सजग आहेत. त्यांचे दुःख मांडतांना पवारांची भाषा अक्रमक होते.

आपल्या जीवपणातील अनुभवाने अवती भोवतीच्या समाजातील अस्पृश्यांचा क्रूरपणे छळ करणाऱ्या निघुण कत्यांच्या बातम्या यांच्यामुळे पवारांचे मन अस्थस्थ होते. अन्याय दुर करण्यासाठी कवी संघर्षासाठी आवाहन करतो बऱ्याच वेळा कवी मनाला शोपवून धरण्याच्या प्रयत्न करतो, कोणत्याही क्षणी आगडोंब उसळेल असा खणखणीत इशाराही पवार देतात. म्हणून पवार तुरंगातील पाखरे या कवितेत म्हणतात.

किती जल्स किती बरूक्स याचा एकदा हिशेव करा, उधाणलेल्या समुद्राला बांधणार कसे, याच असं एकदा गणित मांडा समतेच वारं व्ययलमली पाखर त्यांना असं डावू नका. तुरंगासह ती उडून जाणार नाहीतच अशा भम्रात राहू नका

या कवितेत मन कसे धुसणारे आहे. याचा प्रत्यय सुज्ञ वाचकाला येतो. त्याच प्रमाणे तांबड फुटल या कवितेतील संदर्भ पहा

शस्त्र हातात हो सांगणाऱ्या रक्ताशी बेईमान होऊन जमणार नाही.

अशा स्तब्ध मनाचा अविष्कार घेऊन त्यांची कविता जन्माला येते. म्हणून पवारांची कविता वाचतांना नारायण सुर्वेची आठवण करून देते. पण त्यांचे अणुकरण करत नाही. तर संघर्षासाठी आवाहन करते.

ज. वि. पवारांच्या कवितेची वैशिष्ट्ये :

कवीच्या मनातील अभिव्यक्तिसाठी काव्याचे माध्यम दलित साहित्यिकांना जवळचे वाटते. म्हणून बहुतांश कविनी व लेखकानी दलित हा काव्य प्रवाह हताळला आहे. संख्यात्मक दृष्ट्या दलित कवितेला दलित साहित्यात महत्वाचे स्थान आहे. म्हणून दलित कवितेतील नकार, वेदना, विद्रोह दुःख देना या जाणिवेसह त्याची काही वैशिष्ट्ये आपणास जाणून घेता येतात ती वैशिष्ट्ये पुढील प्रमाणे

कवितेशी वैशिष्ट्ये :

1. नाकेबंदी या काव्यसंग्रहातून दलित समाजाची हजारो वर्षांपासूनची कुचंबणा व्यक्त केली आहे.
2. दलितांचे दुःख, व्यथा, वेदना, विद्रोह, जीवनानुभवातून मांडले आहे.
3. मानवतेला काळीमा फासणाऱ्या कत्यांच्या व आचार विचाराचा जाहिरपणे निच्छितपणे निषेध केला.
4. अस्वस्थ व संतागाने पेटलेल्या मनातून कवितेने जन्म घेतला आहे म्हणून त्यांची कविता वास्तवाचे भान ठेवते.
5. पवारांची कविता ही अनुकरणाची नसून वृत्तिसाम्यातून निर्माण झाली आहे.
6. काव्यातील प्रसंग चित्रणातील प्रत्येकरी चित्रमय वर्णनात्मकता आणि प्रतिक्रियांच्या प्रकटी करणातील सापेक्ष

PRINCIPAL
RAJIV GANDHI ARTS, COMMERCE
& SCIENCE COLLEGE, KARMAD
TO. & DIST. AURANGABAD.

७. नाट्यमयता ही पवारांच्या कवितेची वैशिष्ट्ये आहे.
८. ज.वि. पवारांची कविता उठाऊ बाण्याची असून तिची वाटचाल यशस्वी आहे.
९. ज.वी पवारांची कविता नारायण सुर्वेच्या धाटनिवर धावणारी व ध्येयासाठी निगडित आहे.
१०. ज.वि. पवारांच्या काव्यामधून स्तब्ध व घुसमटाणारे युद्धसज्ज मन व्यक्त होते.
११. कवितेतील प्रसंग चित्रणातील प्रत्ययकारी, चित्रमय वर्णनात्मक आणि प्रतिक्रियांच्य प्रकटीकरणातील नापेक्ष नाट्यमयता कसोटीने निर्माण केली.

उदा. नाकेबंदी, पाणी प्यायची सुट्टी, दुष्कालाशी झुंज वरळी, जानेवारी १९७४ इ.

सारांश :

थोडक्यात ज.वि.पवारांच्या दलित कवितांकडे दलित साहित्यातील दलित अनुभवाची कविता म्हणून तीचा विचार करावा लागतो. पण त्यातिल गहनता आणि वास्तव अनुभवची समिक्षकांनी पाहिजे त्या पद्धतीने देखिल घेतली नाही. किंवा त्यांचे सखोल चिंतन केले नाही. यशवंत मनोहर व पवार यांनी भावणिक अनुभव कथन केले नाही तर, अस्सल जळजळीत अनुभवाचा जगलेला, भोगलेला अंगार जणू काही त्यांनी दलित कवितेतून मांडला आहे. म्हणून त्यांची कविता केवळ एका दलित समाजाची मर्यादित न राहतात ती तमाम शोषितांचे जगणे, भोगणे ह्याचं भान ठेवणारी आहे.

मनोहरांची प्रतिमासुष्टी ही अत्यंत अर्थ -सभन प्रयत्नशील, अनेक संदर्भसुचक आणि कवितेला काव्यत्मक बहू आयाम व परिणामात्का प्राप्त करून देणारी आहे. ज.वि.पवार यांच्या नाकेबंदी ह्या काव्यसंग्रहाचे शिर्षक ही अतिशय अर्थपूर्ण आहे. त्यात त्यांनी भारतीय दलित जाणिवांच्या हजारो वर्षांपासून झालेल्या नाकीबंदीची जाणिव पवारांच्या या काव्यात ठायी ठायी जाणवते.

त्याचप्रमाणे भारतीय इतिहासातील सांस्कृतिक अन्यायाच्या संदर्भाचे जागरण करते. व प्रेरणा प्रवृत्ती निर्माण करते.

दलित कविंनी दलित कवितेला आपल्या यशाचे साधन मानले आहे. त्यांच्या कवितेतून आत्मनिष्ठा समुह हिननिष्ठा या दोन्ही संघर्ष या निष्कर्षांचे चित्र कवितेत उमटतांना दिसते. दलित कवितेमधून व्यक्त झालेली जाणिव ही वैयक्तिक स्वरूपाची जाणवत जरी असली तरी ती संपूर्ण समाजाची जाणिव असते ही वास्तवता दलित काव्यातून प्रकटपणे जाणवते म्हणून त्याची देखिल अभ्यासकांनी घ्यावी ही अपेक्षा आहे.

संदर्भ :

१. भालचंद्र फडके दलित साहित्य वेदना आणि विद्रोह.
२. बाळकृष्ण कवठेकर दलित साहित्य: क आकलन.
३. डॉ वासुदेव मुलाटे-दलितांची आत्मकथने संकल्पना व स्वरूप.
४. प्रा दत्ता भगत - दलित साहित्य
५. शंकरराव खरात - दलित साहित्य प्रेरणा व प्रवृत्ती
६. यशवंत मनोहर - साहित्या बाधिलकी आणि विद्रोह.
७. सदा कऱ्हाडे - दलित साहित्याच्या निमित्ताने.
८. यशवंत मनोहर - दलित साहित्य सिद्धांत आणि स्वरूप


PRINCIPAL
RAJIV GANDHI ARTS, COMMERCE
& SCIENCE COLLEGE, KARMAD
TQ. & DIST. AURANGABAD.

के
गव
उद
वैश्व
बडे
का
जि
पर
रुप
नहीं
निम
से र
मुवि
सच
चाह
हमे
साम
सम
एवं
वे र
कर
कार्
रुप
पृष्ठ
संक
उदा



An International Multidisciplinary
Quarterly Research Journal



ISO 9001:2008 QMS
ISBN / ISSN

Volume - VI, Issue - IV, October - December - 2017
ISSN 2277 - 5730

AJANTA

Impact Factor - 4.205 (www.sjifactor.com)
Is Hereby Awarding This Certificate To

डॉ. बाळासाहेब बाबुराव लिहिणार

An Recognition of the Publication of the Paper Entitled

आरपीए कादंबरीमधील स्त्री चित्रणाच्या शैलीचे गुण विश्लेष

Editor : Vinay S. Hatole

PRINCIPAL
RAJIV GANDHI ARTS, COMMERCE
& SCIENCE COLLEGE, KARMA
TQ. & DIST. AURANGABAD.

Ajanta Prakashan

Jaisingpura, Near University Gate,
Aurangabad, (M.S.) 431 004
Mob. No. 9579260877, 9822620877
Tel. No.: (0240) 2400877,
ajanta1977@gmail.com, www.ajantaprakashan.com



ISSN 2277 - 5730

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

*Peer-Reviewed Referred
and UGC Listed Journal*

AJANTA

VOLUME - VI, ISSUE - IV
OCTOBER - DECEMBER - 2017

Ajanta Prakashan

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY QUARTERLY
RESEARCH JOURNAL

AJANTA



VOLUME - VI ISSUE - IV OCTOBER - DECEMBER - 2017

AURANGABAD

IMPACT FACTOR / INDEXING

2016 - 4.205

www.sjifactor.com

✦ EDITOR ✦

Assit. Prof. Vinay Shankarrao Hatole

M.Sc (Math's), M.B.A. (Mkt), M.B.A (H.R),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod & Dirt), M.Ed.

✦ PUBLISHED BY ✦



Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)

16-17



CONTENTS

Sr. No.	Name & Author	Pages
१८	महात्मा फुले यांच्या साहित्यातील बुद्ध दर्शन प्रा. दुनघव ए. डी.	६३-६८
१९	राष्ट्रीय गोकुळ मिशन: एक अभ्यास पद्मश्री बाबासाहेब गायकवाड	६९-७३
२०	मराठी नियतकालिकांचे योगदान अविनाश सुदाम भालेराव	७४-७५
२१	यशवंतराव चव्हाण यांचे राजकीय कार्य : विकसनशील देशांचे राजकारण डॉ. नितीन नामदेव आहरे	७६-८१
२२	ग्रामीण कादंबरीमधील स्त्री चित्रणाच्या शैलीचे गुण विशेष डॉ. बाळासाहेब बाबुराव लिहिणार	८२-८४

'अजिंठा' या त्रैमासिकात प्रसिध्द झालेली मते मुख्य संपादक, संपादक मंडळ व सल्लागार मंडळास मान्य असतीलच असे नाही. या नियतकालिकात प्रसिध्द करण्यात आलेली लेखकांची मते ही त्यांची वैयक्तिक मते आहेत. तसेच शोधनिबंधांची जबाबदारी स्वतः लेखकावर राहिल. हे नियतकालिक मालक, मुद्रक, प्रकाशक विनय शंकरराव हातोले यांना अजिंठा कॉम्प्युटर अँड प्रिंटरर्स, जयसिंगपूर, विद्यापौड, गेट, औरंगाबाद येथे मुद्रित व प्रकाशित केले.



उल्लेखलेल्या स्त्री-चित्रण शैली गुण विशेष फारच वेगवेगळ्या शैली ढगाने नावीन्यपूर्णतेने प्रकट झाल्याचे साहित्यविशेषज्ञांकडून दिसून येते.

समारोप

उपरोक्त उल्लेखलेल्या ग्रामीण कादंबरीमधील स्त्री-चित्रणाच्या शैलीचे गुण-विशेष ग्रामीण कादंबरीकारांनी अतिशय सैल्युक्त आशय आणि अधिव्यक्ती व्यक्त करण्यासाठी शैलीचे निरनिराळे शैली नमुने ग्रामीण कादंबरीत मांडले आहेत. ग्रामीण कादंबरीने मराठी वाङ्मयामध्ये मानाचा तुरा स्विकारण्यासाठी खरोखर ग्रामीण शैली व त्यांच्या गुण विशेषांचा वापर व स्विकार ग्रामीण कादंबरीकार मोठ्या प्रमाणात करत आहेत.

संदर्भग्रंथ

- 1) 'भालचंद्र नेमाडे', 'साप्ताहिक मनोहर', जुलै-1978, पृ.क्र. 27.
- 2) गुस्ताव प्लोबे-(मुळविधान)-साहित्यविचार-अरविंद कुलकर्णी पृ.क्र. 97.
- 3) 'मिडलटन मरे' (मुळ विधान), उद्धृत- भारतीय साहित्य विचार, पृ.क्र. 128 (संपा) प्रा. भुजंग वाडीकर, प्रा. जीवन पिंपळगावकर.
- 4) 'ना.सी. फडके', महाराष्ट्र साहित्य पत्रिका, पुणे, जून 1991 पृ.क्र. 47
- 5) 'गो.नी. दांडेकर' 'शितू' मीज प्रकाशन गृह मुंबई-4. आवृत्ती तिररी-1967, पृ.क्र. 24.
- 6) 'व्यंकटेश माडगुळकर', 'कोवळे दिवस', उत्कर्ष प्रकाशन पुणे-4 पुनर्मुद्रण- 1995, पृ.क्र.166.
- 7) 'शंकर पाटील', 'टारफुला, उत्कर्ष प्रकाशन पुणे, पृ.क्र. 148.
- 8) 'शंकर खंडू पाटील', 'धुंगरू', चंद्रकांत भोटये प्रकाशन कोल्हापूर, पृ.क्र. 26, 27.
- 9) 'महादेव मोरे' 'रैत', विश्वकर्मा साहित्यालय पुणे-30, आवृत्ती 1971, पृ.क्र. 54.

PRINCIPAL
RAJIV GANDHI ARTS, COMMERCE
& SCIENCE COLLEGE, KARMA
TQ. & DIST. AURANGABAD.



ISSN 2277 - 5730

**AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL**

AJANTA

Peer Reviewed Referred and
UGC Listed Journal
(Journal No. 40776)

Volume-VII, Issue-I
January - March - 2018

IMPACT FACTOR/ INDEXING
2017 - 5.2
www.sjifactor.com

Ajanta Prakashan

AJANTA - VOL. - VII ISSUE - I ISSN 2277 - 5730 (I.F.-5.2)

JANUARY - MARCH 2018

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY QUARTERLY
RESEARCH JOURNAL



AJANTA

VOLUME - VII ISSUE - I JANUARY - MARCH - 2018 AURANGABAD

Peer Reviewed Referred and UGC Listed Journal



IMPACT FACTOR / INDEXING
2017 - 5.2
www.sjifactor.com

+ EDITOR +

Assit. Prof. Vinay Shankarrao Hatole

M.Sc (Math's), M.B.A. (Mkt), M.B.A (H.R),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod & Dir), M.Ed.

+ PUBLISHED BY +



Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)



२३	डॉ. बाळासाहेब बाबुराव लिहिणार	व्यंकटेश मांडगूळकर यांच्या कथेची वैशिष्ट्ये	
HINDI			
१	डॉ. आर. जी. बम्बोले	विनोबाजी का ब्रम्हचर्य एक अध्ययन	१-४
२	दुर्गा प्रसाद सिंह	मार्कडेय की कहानियों में भूमि-समस्या	५-८
३	डॉ. विजयप्रसाद के. अवस्थी	भारतीय शिक्षा प्रणाली: कल आज और कल	९-१४
४	इंदिरा रंजेशिंग गिरासे डॉ. कुमार भुजंगराव कदम	वीर शिरोमणी, अगम्य साहस और शौर्य का प्रतिक, स्थापत्यकला का जनक - महाराणा कुंभा	१५-१६
५	डॉ. वन्दना चौबे अमित गंगानी	गंगानी परिवार के आधार स्तंभ - पं. कुन्दनलाल गंगानी	१७-१९
६	प्रा. अरूण वामन आहरे	विष्णु प्रभाकर (अर्द्धनारीश्वर के विशेष संदर्भ में)	२०-२२
७	वैजनाथ मेघराज राठोड	बंजारन वेशभूषा	२३-२५
८	डॉ. लक्ष्मी गुप्ता	समकालीन महिला साहित्यकार निर्मला चौहान (इक्कीसवीं सदी की महिला साहित्यकार)	२६-२८

'अजिंठा' या त्रैमासिकात प्रसिध्द झालेली मते मुख्य संपादक, संपादक मंडळ व सल्लागार मंडळास मान्य असतीलच असे नाही. या नियतकालिकात प्रसिध्द करण्यात आलेली लेखकाची मते ही त्याची वैयक्तिक मते आहेत. तसेच शोधनिबंधाची जबाबदारी स्वतः लेखकावर राहिल. हे नियतकालिक मालक मुद्रक प्रकाशक विनय शंकरराव हातोले यांनी अजिंठा कॉम्प्युटर अँड प्रिंटर्स जयसिंगपूर विद्यापीठ गेट औरंगाबाद येथे मुद्रित व प्रकाशित केले.



डॉ. बाळासाहेब बाबुराव लिहिणार

मराठी विभाग प्रमुख, राजीव गांधी महाविद्यालय, करमाड, जि. औरंगाबाद.

प्रस्तावना

15 ऑगस्ट 1947 च्या स्वातंत्र्य प्राप्तीनंतरच विशेषतः 1960 च्या प्रवाहानंतर जे ठळक वाङ्मय प्रवाह उदयाला आहे. त्या साहित्यापैकी मराठी वाङ्मयात ग्रामीण साहित्याचा प्रवाह अधिक लक्षणीय ठरला आहे. देशातील शुद्रातिशुद्र तळागाळातील सामान्य समाजाच्या क्रांतीची आणि उन्नतीची जी विचार सरणी मांडली ती महात्मा जोतीराव फुलेनी मांडली आहे. ही समाज उन्नतीची महात्मा फुलेनी दिलेली देणगी म्हणजे ग्रामीण साहित्याचे प्रेरणा स्थानच आहे. म्हणून ग्रामीण साहित्याचे महात्मा जोतीबा फुलेच प्रेरणास्थान आहेत. फुलेनी ग्रामीण साहित्याची वैचारीक व तात्विक भूमिका मांडली आणि त्या भूमिकेतूनच ग्रामीण कादंबरी, कथा, नाटक इत्यादी वाङ्मय प्रकार उदयास आले आहेत. त्या उदयास आलेल्या वाङ्मय प्रकारापैकी "ग्रामीण कथा" या घटकांचे आणि व्यंकटेश मांडगुळकर यांच्या कथेच्या वैशिष्ट्याविषयी या संशोधनामध्ये सविस्तर चर्चा केली आहे.

व्यंकटेश मांडगुळकरांनी माणसाचे प्रादेशिक प्रतिनिधीत्व घेवून ते मराठी वाङ्मयातील कथा हया वाङ्मय प्रकाराचे माणकरी उतात. माणदेशातील दुःखी, कष्टी, सुष्ट, दृष्ट, शोळी-धुर्त ईमानी-बदमाश, लोभी-उन्नत अशा प्रकारची माणसं त्यांनी कथेत वैशिष्ट्यपूर्ण रेखाटली आहे. हयामुळे त्यांनी मराठी कथा वाङ्मयाच्या इतिहासात महत्वाचे स्थान प्राप्त झाले आहे.

व्यंकटेश मांडगुळकर यांचे कथासंग्रह :-

'माणदेशी माणसाचे' दर्शन घडविणारे व्यंकटेश मांडगुळकर यांनी आपल्या कथामधून एक आगळी-वेगळी सृष्टी उभी केली आहे. कथेत आपापल्या परिने अनेकांची वर्णन असतात. पण व्यंकटेश मांडगुळकरांनी कथेत एक अनन्यसाधारण महत्वाची भूमिका बजावली आहे.

कथासंग्रह :-

माणदेशी माणसं 1949, गावाकडच्या गोष्टी-1951, हस्ताचा पाऊस-1953,

काली कसई-1953, जांभळाचे दिवस-1956, सीताराम एकनाथ-1960,

वारी-1956, गोष्टी घराकडील इत्यादी कथासंग्रह प्रकाशित झालेले आहेत.

वरील कथा संग्रहामध्ये व्यंकटेश मांडगुळकरांनी कथेच्या इतिहासात महत्वाची भूमिका घेतली आहेत.

त्यामुळेच मांडगुळकरांच्या कथामधील अनुभव जिवंत व तटस्थ तरल होऊन जातात.

मांडगुळकरांनी कथा लेखन अतिशय ताकदीने शब्दबद्ध केले आहेत. म्हणून त्यांनी माणसाचे प्रदेवातील ग्रामीण भागाची अचुक नेस पकडलेली आहे. हया विषयी अंबादास मांडगुळकर म्हणतात की, "मांडगुळकरांची कथा ही अधिक जीवनस्पर्शी व अधिक वास्तव अशी झाली आहे. मांडगुळकरांच्या लेखनामुळे ग्रामीण कथेला गोष्टी किंवा इकिकत असे स्वरूप न राहता तिला एक कलात्मक उंची प्राप्त झाली आहे.",

वरीलप्रमाणे ते वास्तव हकीगत लेखनातून व्यक्त करतात. कारण की, ग्रामीण मणुस गुराडून घराही माणसारारखे प्रेम करतात. "त्यांची गाय व्याली" ही कथा पाहता या कथेत घरच्यातला खास होईल आणि आपले दारिद्र्य संपेल पण गाईला कालवड झाल्याने आई व मुलांचे स्वप्न चकनाचुर होईल. अतिशय मार्मिकपणे त्यांनी केले आहे. "पिकलेले कलिंगड हातातून सुटून फरशीवर पडावे तसे त्यांच्या कळजाचे झाले. गपकन तो माधारी वळला आणि पळतच दार उघडून आला. हातातला दिवा हिंदोकळल्याने मालवून गेला. तो खाली टाकून, बाळतेस घुसमटून रडत बुदके देऊ लागला. त्याला भरभडून आले" 2

अशाप्रकारे ग्रामीण भागात किती श्रद्धाळूपणा व अंधश्रद्धा आहे. हे वरील वैशिष्ट्यावरून दिसून येते. कारण ग्रामीण माणसाचा अंधश्रद्धेवर फार विश्वास असतो. ईश्वर, भूतप्रेत, करणी, कवटाळकी, मांत्रिक यावर त्यांचा अधिक विश्वास असतो. म्हणून वरीलप्रमाणे "मारुतराया" या कथेतून ते अशा आषयाचे चित्र कथेत लिहतात. म्हणून प्रा. चंद्रकुमार नलगे असे लिहतात की, "आशय आणि अभिव्यक्ती आणि कलात्मकता यांचा सुंदर मेळ मराठी ग्रामीण साहित्यात पहिल्यांदाच अनुभवायला मिळाला. ग्रामीण कथा वाङ्मयाला केलेले परिणाम लाभले आणि कथा विकसित झाली" 3

वरील प्रमाणे व्यंकटपे मांडगुळकर विविध प्रकारचे वेगवेगळे वैशिष्ट्य आपल्या कथांमधून रंगवितात. म्हणून वरील विवेचनाला अनुसरून खालील प्रमाणे कथेची वैशिष्ट्ये सांगता येतात. ती पुढील प्रमाणे—
कथेची वैशिष्ट्ये

- ❖ मांडगुळकर पात्राचे सुक्ष्म निरीक्षण करतात म्हणून त्यांची पात्रे व कथानक जिवंत वाटते.
- ❖ मराठी वाङ्मयात ग्रामीण कथेला मानाचे व महत्त्वाचे स्थान प्राप्त करून दिले.
- ❖ भाषा व शैली मांडगुळकर आषय जिवंत करणारी वापरतात.
- ❖ कथेमध्ये मांडगुळकर शब्दांच्या माध्यमातून वास्तव चित्र साकार करतात.
- ❖ मांडगुळकर कथानकाला महत्त्व न देता साचेबंद अभिव्यक्तीला ते छेद देतात.
- ❖ कथेत साधी-भोळी, सुष्ट-दृष्ट, धूर्त, बेमान-हमान, लोभी प्रवृत्तीची भाणसे रेखाटतात.
- ❖ कथेमध्ये लांबलाचक व तोचतोपणा येत नाही.
- ❖ कथा साकारण्यात उपमा, दृष्टांत, अस्सल माणदेषी भाषा-चैली आणि माणदेषी ढंग व ढंगदार संवाद विशेष कौशल्य कारुण्य कथेत ठासून-ठासून भरलेले आहे.

उपरोक्त संदर्भात विषय व संवादानुसार कथेतील वास्तव वैशिष्ट्ये संभाषणाला धरून सांगितलेली आहेत. म्हणून मांडगुळकर वैशिष्ट्य व पात्रांचे मनोगत व्यक्त करतांना त्यांच्या खास तोंडी माणदेषी बोलीतील व्यक्तित्वे स्वभाव रंगवितांना ते स्वाभाविकच दैन्य व दुःख कणखरपणा, उत्साहीपणा निराशा, लोभीपणा ते फार कौशल्याने साहित्यात रेखाटतात.

माणदेषातील वरील गुणांचा उल्लेख ते कथा वाङ्मयात विशेष करून वर्णन करतात. त्याच बरोबर रंजक कथाही ते आवर्जून लिहतात. विशेष म्हणजे व्यंकटपे मांडगुळकरांनी विवेक पणाला लावून जरी रंजक कथा लिहली तरी ते वास्तवाची नाळ किंवा माणदेषी स्वभाव गुण वैशिष्ट्ये ते कधीच निवेदनात तोडत नाहीत. विनोदी कथा ते कधी लिहतांना आढळत नाही. ही उणिव-जाणिव पकडून प्रा. द. ता. भोसलेंनी पुढील प्रमाणे चिंतन

व्यक्त केले आहे ते असे की, "मुळ अनुभूतील अधिक रंजकता आणून देणारी ढंगदास कथन-वैली मांडगुळकरांजवळ कमी स्वरूपात असल्याने त्यांच्या विनोदी कथा संस्मरणीय ठरलेल्या नाहीत."

अशा प्रकारे व्यंकटेश मांडगुळकर कथेला माणदेपातील माणसाचे वास्तव अनुभव जोडीला असल्यामुळे ती विनोदी अंगाने रंगविता येत नाही. कारण की, विनोद करण्यासाठी बहुतांशी काल्पनिक किंवा सामान्य दर्जाचे अनुभव किंवा माणसं असणे गरजेचे आहे. पण व्यंकटेश मांडगुळकरांची माणसे जिवंत अनुभवातुन जगताना दिग्भूत येतात. म्हणून त्यांना विनोदाची झामर लावणे अतिशय कठीण झाले आहे.

भारत देशाला ज्या वेळी स्वातंत्र्याची प्रेरणा लाभली होती. त्या काळात नव तरुणांच्या मनात देवभक्ती, सुधारणाकांना क्रांतीची ओढ लागली होती. म्हणून व्यंकटेश मांडगुळकरांना सामाजिकतेची जाणिव होती. ती जाणिव वास्तव पातळीवरची होती. ते मुळातच रंजनवादी किंवा विनोदी कथाकार नव्हते तर, वास्तव भरपूर अनुभव, प्रेरणा, ग्रामीण जीवनाची नाळ इत्यादी सामर्थ्यांमळे ते रंजनवादी किंवा विनोद लेखन करू शकले नाहीत. म्हणून हया संदर्भात आनंद यादव म्हणतात "मांडगुळकरांची प्रेरणा शुध्द कलेची हांती. आणि तिच्या जोडीला ग्रामीण जीवनाचा अनुभव भरपूर आणि प्रत्यक्ष होता. त्यामुळे त्यांची ग्रामीण कथा अल्पातकाषात मराठी वाचकांचे लक्ष वेधून घेणारी ठरली. नव्या उन्मेषाने पुढे जाऊ लागली. तिला वेगळीच लोकप्रियता लाभली".

व्यंकटेश मांडगुळकरांच्या कथेची वैशिष्ट्ये विषद करतांना खरोखर त्यांचा वैचारिक पिंड लक्षात घेणे अधिक महत्वाचे वाटते. स्वातंत्र्याच्या विचाराने ते भारावून निघाले होते आणि हयाच वातावरणात व्यंकटेश मांडगुळकरांच्या कथेची जडण-घडण झालेली दिसून येते. विशेष म्हणजे त्यांच्या कथेचे 'जीव' घर म्हणजे... माणदेपी माणसाचे मराठी वाङ्मयाला दिलेले अनोखे दर्शन म्हणजे त्यांचे विशेष वैशिष्ट्ये आहे. म्हणून इतर ग्रामीण कथाकारांपेक्षा त्यांच्या कथानकात कल्पनेला, विनोदाला मुळीच वाव नाही. ग्रामीण कथाकारांनी अनेक कथा लिहल्या आहेत. पण माणदेषाचा अस्सलपणा मराठी वाङ्मयात जाहीरपणे व प्रादेशिक भाषेमध्ये मांडण्याची हातोटी मांडगुळकर सोडून कोणालाही सापडणार नाही. हिच त्यांच्या कथेची खास वैचारिक व सनिकात्मक वैशिष्ट्ये आहेत.

अशा प्रकारे व्यंकटेश मांडगुळकर हे स्वातंत्र्याच्या विचाराने भारावलेल्या तैव्हाच्या कातिकारी वातावरणाचा माणदेपी खास मळवट असल्यामुळे त्यांची कथा रंजक किंवा काल्पनिक कधीच वाटत नाही. हिच त्यांच्या कथेची अनन्यसाधारण वैशिष्ट्ये आहेत.

संदर्भ ग्रंथसूची

1. अंबादास मांडगुळकर, सुर्यकांत खांडेकर, "मराठी ग्रामीण कथा", मेहता हाऊस प्रकाशन, पुणे, प्रस्तावना, पृ.क. 22
2. व्यंकटेश मांडगुळकर, "हस्ताचा पाऊस" "त्याची गाय व्याली", पृ.क.119
3. प्रा. चंद्रकुमार नलगे, "ग्रामीण वाङ्मयाचा इतिहास", पृ.क. 93
4. प्रा. डॉ. द. ता. भोसले, "ग्रामीण साहित्य: एक चिंतन", पृ.क. 30
5. आनंद यादव, "ग्रामीण साहित्य स्वरूप आणि समस्या", मेहता पब्लिशिंग हाऊस प्रकाशन, पुणे-जुलै 1993, पृ.क. 19

International Multilingual Research Journal



PrintingTM Area



Special Issue, March-2018



**Greatest Philosopher :
Dr. Babasaheb Ambedkar**

Prof. Dinesh Jaronde

ISSN: 2394 5303

Impact
Factor
5.011 (IJJIF)

Printing Area™
International Research Journal

March 2018
Special Issue

01



आंतरराष्ट्रीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

प्रिंटिंग एरिया

Printing Area International Interdisciplinary Research
Journal in Marathi, Hindi & English Languages

Special Issue, March 2018

Greatest Philosopher :
Dr. Babasaheb Ambedkar

Editor
Prof. Dinesh Jaronde



Reg. No. U74120 MH2013 PTC 251205
Harshwardhan Publication Pvt. Ltd.

At. Post. Limbaganesh, Tq. Dist. Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell: 07588057695, 09850203295
harshwardhanpubl@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

Printing Area : Interdisciplinary Multilingual Refereed Journal

UGC Approved
Sr.No.43053



- 29) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर व अर्थनीती
प्रा. कल्पना के. पटेल, जि. नागपूर
- 30) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे शिक्षणविषयक विचार व कार्य
प्रा. डॉ. कैलास जे. गायकवाड, जि. वाशिम
- 31) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे 'स्त्री शिक्षणविषयक' विचार
ज्योती विह. कवठे (रणदिवे), रामटेक || 104
- 32) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर आणितदलित चळवळीत महिलांच्या सहभाग
प्रा. नितु जिवनराव शेंडे, यवतमाळ || 109
- 33) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे स्त्रिमुक्तीविषयक विचार
सौ. सिधू परसराम चंदारे, जि. परभणी || 112
- 34) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे आर्थिक विचार: एक अध्ययन
प्रा. दिनेश भास्करराव खेरडे, जि. अमरावती || 114
- 35) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर व शेती
किशोर बी. मेंडे, लोहारा || 116
- 36) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे उच्चशिक्षणा विषयी विचार
डॉ. किशोर बी. वासनिक, गोंदिया || 120
- 37) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे शिक्षणविषयक विचार
डॉ. किशोर एस. ठाकरे, चंद्रपूर || 124
- 38) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांची पत्रकारीता : स्वरूप व दिशा
डॉ. बाळासाहेब बाबुराव लिहणार, जि. औरंगाबाद || 127
- 39) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचा कृषीविषयक दृष्टीकोन
प्रा. डॉ. ए. के. महातळे, चंद्रपूर || 129
- 40) अस्पृश्योन्नतीचा आर्थिक पथ...
प्रा. डॉ. महेंद्र वि. गायकवाड, नागपूर || 133
- 41) सविधानिक तरतूदी आणि महिला सक्षमिकरण
प्रा. मंगला दुर्गादास बनसोड, जि. गडचिरोली || 139
- 42) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे आर्थिक विचार
मनोज एम. मेश्राम, आमगांव || 142
- 43) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांची पत्रकारिता
प्रा. डॉ. मेघमाला अं. मेश्राम, चंद्रपूर || 144

बाबासाहेब आंबेडकर अनुभव आणि आठवणी साकेत
प्रकाशन, औरंगाबाद.

३. जनता, २२ सप्टेंबर, १९५१ (औरंगाबाद
येथील पीपल्स कॉलेजच्या शिलान्यास प्रसंगी डॉ.
बाबासाहेबांनी केलेले भाषण)

४. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर गौरव ग्रंथ, प्रकाशक
- सौ. न. तु. गवळी १९९१

५. दिवस असे होते, - वि. द. घाटे

६. सामाजिक लोकशाहीचे प्रणेते डॉ. बाबासाहेब
आंबेडकर, म. भि. चिटणीस, - प्रबोधन प्रकाशन, नागपुर

७. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर विचारधारा, संपा.
कमन निवाळकर, प्रबोधन प्रकाशन, नागपुर

८. डॉ. भिमराव आंबेडकर, जनता साप्ताहिक,
दि. १७ सप्टेंबर, १९३२.

९. दलितांचे शिक्षण, डॉ. भि. रा. आंबेडकर, अनुवाद
- देवीदास घोडेस्वार, संपा. प्रदिप गायकवाड, क्षितिज
प्रकाशन, नागपुर

१०. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर लेखन आणि
चिंतने, खंड - १८, भाग - १

□□□

38

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांची पत्रकारीता : स्वरूप व दिशा

डॉ. बाबासाहेब बाबुराव लिहणार
मराठी विभाग प्रमुख,
राजीव गांधी महाविद्यालय, करमाड जि. औरंगाबाद

प्रस्तावना -

"कोणतीही चळवळ यशस्वी होण्यासाठी तिला
वर्तमानपत्राची आवश्यकता असते.
ज्या चळवळीचे वर्तमानपत्र नसते
तिची अवस्था पंख तुटलेल्या पक्षप्रमाणे होते".

- डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर.

अशी वर्तमानपत्राची महती सांगणारे भारताच्या संविधानाचे
शिल्पकार, थोर समाजसुधारक, झुजार पत्रकार, संपादक व लेखक
तथा भारतरत्न बोधिसत्व डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर, यांचे वडिल
सुभेदार रामजी व आई भिमाई यांच्या पोटी १४ एप्रिल १८९१ रोजी
यांचा जन्म झाला. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांनी देशामध्ये व
समाजामध्ये समता, मानवी हक्क, सामाजिक न्याय, बंधुता, एकात्मता,
स्वातंत्र्य, वैज्ञानिक जाणीव, जागृती व क्रांती शिक्षणाच्या माध्यमातून
केली. त्याचप्रमाणे वरील जीवनमुल्य रुजवण्यासाठी त्यांनी पत्रकारीता
हे प्रभावी माध्यम निवडले होते. वर्तमानपत्राशिवाय समाजात जाणीव,
जागृती होणार नाही ही जाणीव डॉ. बाबासाहेबांना झाली होती. म्हणून
त्यांनी समाजात ह्या परिवर्तनवादी विचारांचा प्रचार व प्रसार
करण्यासाठी ह्या माध्यमाची निवड केली.

संशोधन पध्दती :-

निवडक प्रस्तुत संशोधनात डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांच्या
पत्रकारीता या घटकांचा विश्लेषणात्मक संशोधन पध्दतीचा वापर
करण्यत आला आहे. याविषयी त्यांची भूमिका, कार्य व पध्दत
कशी होती. त्यासाठी आवश्यक अशा माहितीद्वारे द्वितीय स्त्रोतांचा
आधार घेऊन संशोधन केले आहे.

संशोधनाचा उद्देश :-

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांची पत्रकारीता, त्यांचे स्वरूप,
दिशा, ध्येय आणि उद्दिष्ट त्यांचे विचार सर्वसामान्य जनतेपर्यंत



पोहचविण्यासाठी हा लेख लिहीला आहे. पत्रकारीतेच्या जनजागृतीमुळेच देशातील दलित समाजात परिवर्तन घडून आले. कारण कौ. पत्रकारीता हे देशाच्या, समाजाच्या विकासाचे व जाणीव जागृतीचे आणि ज्ञानाचे प्रभावी माध्यम व साधन आहे. लोकशाहीच्या स्वरूप व भूमिकेतील पत्रकारीता यांचे योगदान व महत्त्व किती आहे हा या शोधनिबंधामागचा मुळ उद्देश आहे.

शोधनिबंधाचा विषय :-

डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर यांची पत्रकारीता, स्वरूप व दिशा :-

डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर यांनी आपल्या वृत्तपत्रीय लेखातून घडवून आणलेली विचारक्रांती आणि समाजक्रांती सर्वंकष स्वरूपाची होती. "डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांचे वृत्तपत्रीय लेखन सामाजिक परीवर्तनाच्या ध्येयातून आकारास आले आहे. 'संघर्ष' हा त्यांच्या पत्रकारीतेचा गाभा आहे व निर्भयता हा त्यांच्या लेखणीचा स्वभाव आहे". डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांनी आपल्या पत्रकारीतेतून सोंशित, वंचित समूजाची शोकडो वर्षांपारून होत असलेली अमानुषता व कुचंबना त्यांनी व्यक्त केली. समाजावरील अन्याय, अत्याचार दूर करून न्याय आणि हक्काच्या मागणीसाठी त्यांनी वृत्तपत्रे चालवली होती. "त्यांनी इ.स.१९२० मध्ये 'मुक्तायक' हे पाक्षिक सुरु केले. ३ एप्रिल १९२७ रोजी 'बहिष्कृत भारत' हे वृत्तपत्र सुरु केले. इ.स.१९३१ मध्ये 'जनता' हे पाक्षिक आणि इ.स.१९५६ मध्ये 'पबुध्द भारत' अशा चार वृत्तपत्रांची निर्मिती केली. डॉ.आंबेडकर हे निभिड व ध्येयनिष्ठ पत्रकार होते. त्यांनी जातीव्यवस्था व वर्णव्यवस्था, ब्राह्मणशाही, हिंदू धर्म आणि ग्रंथावर टिका केली. त्यांच्या या वृत्तपत्रीय कार्यामुळेच अस्पृश्य जागृत होऊन संघटित झाले." वृत्तपत्र हे समाजप्रबोधन आणि जागृती विचार प्रसार व प्रचाराचे माध्यम आहे. म्हणून डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांनी तळागाळातील अस्पृश्यांच्या उध्वारासाठी, न्यायासाठी, हक्कासाठी आयुष्यभर लढा दिला आणि आपली पत्रकारीता निष्ठेने पणाला लावली. सर्वसामान्यांचे किंवा बहुजनांचे प्रबोधन व प्रभावी संघटन करण्यासाठी वरील वृत्तपत्रे डॉ.आंबेडकरांनी चालविली होती.

वंचित समाजामध्ये स्वावलंबनासाठी वर्तमानपत्राची अत्यंत गरज आहे. ही जाणीव त्यांना होती. म्हणून बहुजन, पददलित आणि मागासलेल्या समाजाच्या समानतेच्या हक्कासाठी त्यांनी वरील वृत्तपत्रांची निर्मिती केली आहे. म्हणून समाजात स्वावलंबनासाठी वर्तमानपत्राची आवश्यकता व्यक्त करताना डॉ.बाबासाहेब म्हणाले ... "अखिल बहिष्कृत समाजाच्या सर्वांगीण उन्नतीसाठी बहिष्कृत समाज संवासांचे एखादे मध्यवर्ती मंडळ निर्माण केले पाहिजे. शिवाय आपल्या स्वावलंबनाच्या चळवळीचा विस्तृत व सर्व ठिकाणी प्रसार होण्याकरीता निदान प्रत्येक प्रांतात आपले एक तरी वर्तमानपत्र पाहिजे.

(जनता १३ फेब्रुवारी १९३२)"

समाजाच्या उन्नतीसाठी एखादे मध्यवर्ती मंडळ व प्रभावी वर्तमानपत्राची किती गरज आहे हे वरील चर्चेवरून स्पष्ट वत. डॉ.बाबासाहेबांनी केवळ अस्पृश्यता किंवा बहुजन समाजासाठी आपली पत्रकारीता लेखणी डिजवली नाही तर हिंदू पुढान्यांना किंवा समाजाला ते जागृत करत होते. अस्पृश्यांचा विश्वास संपादन करा असा हिंदूना संदेश देताना बाबासाहेब म्हणतात. "हिंदू पुढान्यांनी अस्पृश्य समाजाला स्वतःच्या स्वार्थाशिवाय आपल्या विश्वासात कधी घेतले नाही. मुसलमानांच्या राजकीय हक्कांचा प्रश्न उपस्थित होताच स्पृश्य हिंदूचे धाबे दणाणले व त्यांना अस्पृश्याविषयी वरपांगी पाहू फुटला इतकेच. तेव्हा माझी माझ्या हिंदू पुढान्यांना इतकीच विनंती आहे की, हिंदू समाजाने कृतीने अस्पृश्य समाजाचा विश्वास संपादन करावा व मुसलमानाबरोबर चर्चे भांडण्यात आपल्या वेळेचा व शक्तीचा व्यय करू नये. ही सारी शक्ती आपल्या समाजाच्या सामाजिक सुधारणेकडे प्रामाणिकपणे खर्च करावी. जनता जुलै १९३३"

अशाप्रकारे डॉ.आंबेडकरांनी हिंदू समाजाला सुध्दा मौलिक असं जागृती विचार व मत देश व समाजहितासाठी सांगितले होते. यावरून त्यांच्या पत्रकारीतेच्या उच्च मौलिक विचाराचे स्वरूप लक्षात येते. हिंदूना देव, धर्म आणि अस्पृश्यता पाळणे याविषयी संबोधित करतांना डॉ.बाबासाहेब म्हणतात... "खरे पाहिले असता देवाला कोणाच्याच व कसल्याच विटाळाची भिती नाही. देव जसा ब्राह्मणादि हिंदूचा आहे तसाच तो बहिष्कृतांचाही आहे बहिष्कृतांच्या स्पर्शाने जर देवळात जाणाऱ्या इतर हिंदूना विटाळ होत नाही तर देवामुतीला विटाळ का बांधावा ? स्वतःच्या घरात अस्पृश्यता पाळायची नाही. देवळात मात्र पाळायची. हा खरोखर उलटा न्याय समजला पाहिजे. 'बहिष्कृत भारत' ता.२१ जून १९२९" वरीलप्रमाणे हिंदू समाजाच्या अनिष्ट मानसिकतेवर अतिशय सम्पंक दृष्टांत देऊन अस्पृश्यांच्या विकासाच्या आड देव येत नाही, तर ब्राह्मणांची मानसिकता येते. हे बाबासाहेबांनी सांगितले होते.

अशाप्रकारे डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांनी धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, भावनिक, शैक्षणिक विषयावर आपल्या पत्रकारीतेची लेखणी संघर्षशील मार्गातून झिजवली आहे आणि या जाणीव,जागृतीच्या बहरातूनच आंबेडकरी चळवळीने गरुडरुपी झेप अतिशय वेगाने घेतली आहे. पण बाबासाहेबांच्या लेखणीची शिक्षण आणि कार्याची प्रेरणा घेतलेल्या चळवळी आजरोजी स्वार्थाच्या व स्वअस्तित्वाच्या श्रेयासाठी गटागटात विभागल्या गेल्या आहेत. बाबासाहेबांच्या मताला अनुसरून कोणतीही पार्टी, नेता किंवा चळवळ कार्य करीत नाही. याची मनोमन खंत आहे. ही समाजातील पत्रकारीतेची प्रेरणा व आदर्श घेऊन निर्माण झालेल्या आंबेडकरी चळवळीच्या व्यथा व

वेदना पाहून वामनदादा कडक म्हणतात ...

"भीमा जर तुझ्या मताचे जर पाच लोक असते
तलवारीचे तयाच्या न्यारेच टोक असते
वाणीत भीम आहे, करणीत भीम असता
वर्तून तुझ्या पिलांचे सारेच चोख असते
भीमा जर तुझ्या मताचे जर पाच लोक असते"

- वामन कडक

डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांचे विचार आणि पत्रकारीतेला
अभिप्रेत असलेल्या चळवळीची ध्यया व वेदना वामनदादा कडकांनी
बरोल काव्यातून व्यक्त केली आहे. या कार्याची जाणीव पावी
नेत्यांनी व समाजाने ठेवावी व डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांना अभिप्रेत
असलेला परिवर्तन करणारा समाज निर्माण करावा ही या शोधनिबंधाची
भूमिका आहे.

समारोप :-

अशा प्रकारे बरोल संशोधनपर लेखामध्ये डॉ.बाबासाहेब
आंबेडकर यांची पत्रकारीता, यांचे ध्येय व उद्दिष्टेयावर चर्चा केली
आहे. पत्रकारीतेतून अभिप्रेत असलेली सामाजिक क्रांती, आधुनिक
राजकीय स्थिती व गती आणि चळवळीची दिशा कशी आहे ? आणि
डॉ.आंबेडकरांना कशी अपेक्षित होती यांची साधक-बाधक चर्चा
करण्यात आली आहे.

संदर्भ ग्रंथ :-

१. 'हरी नरके, म.ल.कासारे, एन.जी.कांबळे, अशोक
गोडघटे (संपादक) 'डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर लेखन व भाषणे खंड
- २०'. डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर चरित्र व साधने प्रकाशन समिती
महाराष्ट्र शासन, मुंबई २००५' पृ.क्र.२९
२. 'डॉ.अनिल कठारे' 'आधुनिक महाराष्ट्राचा इतिहास'
विद्युत् पब्लिशर्स - औरंगाबाद २०१३ पृ.क्र.४८८
३. 'वसंत मुन, हरी नरके' (संपादक) 'डॉ.बाबासाहेब
आंबेडकर लेखन व भाषणे खंड - १८ भाग - १'. 'डॉ.बाबासाहेब
आंबेडकर चरित्र व साधने प्रकाशन समिती, महाराष्ट्र शासन, मुंबई
२००२' पृ.क्र.२८५
४. उपरोक्त पृ.क्र.४१६
५. 'हरी नरके, म.ल.कासारे, एन.जी.कांबळे, अशोक
गोडघटे (संपादक) 'डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर लेखन व भाषणे खंड
- २०'. डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर चरित्र व साधने प्रकाशन समिती
महाराष्ट्र शासन, मुंबई २००५' पृ.क्र.१०६
६. 'वामनदादा कडक - मोहळ' 'आनंद प्रकाशन, औरंगाबाद
२००३ पृ.क्र.६६.

□□□

Printing Area : Interdisciplinary Multilingual Refereed Journal

UGC Approved
Sr.No.43053

39

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचा
कृषीविषयक दृष्टीकोन

प्रा. डॉ. ए. के. महातळे
जनता महाविद्यालय, चंद्रपूर

प्रस्तावना :

भारत हा कृषीप्रधान देश आहे. भारतीय
अर्थव्यवस्थेचा कणा शेती हा आहे. शेतीच्या संदर्भात
अनेक विचारवंतांनी आपले विचार मांडले आहेत.
त्यात डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर हे एक महत्वाचे
विचारवंत आहेत. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांनी अनेक
विषयांच्या संबंधात लिखान केले आहे व विचार मांडले
आहेत. आंतरराष्ट्रीय स्तरापासून ते शेवटच्या घटकांपर्यंत
विचार केला आहे. त्यामध्ये त्यांनी भारतीय शेतकरी,
शेती व शेतमजूर यांचे प्रश्न, त्यावेळची परिस्थिती
याचेही विवेचन त्यांनी केले आहे. भारतातील शेती
ही भारतीय अर्थव्यवस्थेचा कणा आहे. त्यामुळे त्यांनी
देशाचा विकास, शेतीचा व शेतकऱ्यांचा विकास आणि
मजुरांचा विकास यासाठी उपाय केले पाहिजे याचा
विचार आंबेडकरांनी मांडला आहे. केवळ विचार मांडूनच
थांबले नाहीत तर शेतकऱ्यांच्या व शेतीचे प्रश्न
सोडविण्यासाठी सभा, बैठका, मोर्चे, आंदोलन
विधिमंडळात आवाज उठविला व अनेक वाईट, रूढी,
प्रथा, परंपरा, चालीरीती, खूळचट कल्पना बंद करून
शेतकऱ्यांना सावकारी, खेत पध्दती, शेतीचे विघटन
यातून बाहेर काढून आधुनिक पध्दतीने कशी शेती
केली पाहिजे त्यासाठी शेतीचे महत्व, जमिनीचे
एकीकरण, जमिनीचे विस्तारीकरण, उपाययोजना, सरकार
शेतीला पुरस्कार, महार वतन, खेत पध्दती अस्मृश्य
शेतकऱ्यांचा प्रश्न, सामुदायिक शेती, शेतीला
औद्योगीकरणाची जोड, वीज निर्मिती, धरणे, सिंचन
अशा अनेक उपाययोजना बाबासाहेबांनी शेतकरी
यांच्यासाठी केल्या आहेत. हे सर्व विचार डॉ. बाबासाहेब

PRINCIPAL

RAJIV GANDHI ARTS, COMMERCE
& SCIENCE COLLEGE, KARMAD
TQ. & DIST. AURANGABAD

MAH MUL/03051/2012
ISSN: 2319 9318

UGC Approved
Sr.No.62759

Vidyawarta®

March 2018
Special Issue



MAH/MUL/ 03051/2012

ISSN :2319 9318



Special Issue
March 2018

Editor

Dr. Ganpat Gatti

Dr. Nirmala S. Padmavat

Dr. Nandkumar Kumbharikar

❖ विद्यावार्ता या आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. न्यायक्षेत्र:बीड



"Printed by: Harshwardhan Publication Pvt.Ltd. Published by Ghodke Archana Rajendra & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor Dr. Gholap Babu Ganpat.



Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.

At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed

Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295

harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com



14) प्राचीन, मध्ययुगीन आणि आधुनिक भारतातील कला आणि डॉ. प्रशांत साबळे, डॉ. संजय गायकवाड	63
15) ब्रिटिशकालीन १९३५ च्या कायद्याचा ऐतिहासिक अभ्यास प्रा.चाटे राजकुमार ज्ञानोबा	65
16) ब्रिटीशकालीन सामाजिक सुधारणांचे अध्ययन प्रा. देवकर मनोज बबनराव	67
17) शिवाजी महाराजांचे धार्मिक धोरण प्रा. महादेव गणपत देशमुख	69
18) भारतीय संविधान : अपेक्षित लोकशाही आणि प्रा. डॉ. गोंदकर तुकाराम दत्तात्रय,	72
19) बौध्दकालीन उच्च शिक्षणाच्या सुविधांचा अभ्यास प्रा. डॉ. जगतकर विनोद गणतपराव	75
20) मराठवाड्यातील ग्रामीण कविता – एक अभ्यास प्रा.मायकर रामहरी बन्सी	77
21) सिंधु संस्कृतीतील आर्थिक जिजनाचा ऐतिहासिक अभ्यास डेंगळे सचिन गुंडिराम	79
22) मध्ययुगीन भक्तिसाहित्यातील विद्रोहाचे स्वरूप प्रा. अनंत मरकाळे	81
23) निवडक संस्कृत नाटकामधील स्त्री रूप : एक अभ्यास प्रा.डॉ. चंद्रशेखर बापूराव कणसे	86
24) वैदिक काळातील शिक्षणाच्या वैशिष्ट्यांचा अभ्यास प्रा. काशीद रामभाऊ देवराव	88
25) पेशवेकालीन मराठा प्रशासनाचा अभ्यास प्रा. डॉ. कुंभारीकर एन.एन.	90
26) "संत रैदास के काव्य की प्रासंगिकता" डॉ. बेवले ए.जे.	92

http://www.vidyawarta.blogspot.com
http://www.vidyawarta.com/site/vidyawartajournal
https://sites.google.com/site/vidyawarta

4



ब्रिटीशकालीन सामाजिक सुधारणांचे अध्ययन

प्रा. देवकर मनोज बबनराव
राजीव गांधी माहाविद्यालय
करमाड जि.औरंगाबाद

ब्रिटीश लोक भारतात आले. त्यांच्या भारतात येण्याने एका नवीन सुधारणा पर्वास सुरूवात झाली. त्यांच्या सोबत अनेक पाश्चिमात्य भारतात आले. त्यांच्या सोबत येताना ते पाश्चात्य तत्वज्ञानही सोबत घेऊन आले. या पाश्चिमात्य तत्वज्ञानाचा भारतीयोंवर प्रभाव पडणे सहाजिकच होते. पाश्चात्यांचे शैक्षणिक तत्वज्ञान जिवनावदलचा तर्काधिष्ठीत दृष्टीकोन, मानवतावादी व वैज्ञानिक दृष्टीकोन याचा प्रभाव भारतीयानवर पडला. यातूनच सामाजिक सुधारणांचे एक नवीन पर्व सुरू झाले. तात्कालीन परिस्थितीत भारतात अर्थिक सुबत्ता होती. परंतु सामाजिक क्षेत्रात भारतीय लोक आनेक समस्यांनी ग्रासलेले होते. पाश्चिमात्यांच्या विशेषतः ब्रिटीशांच्या प्रभावातून सामाजिक क्षेत्रात सुधारणास सुरूवात झाली. भारतीय समाजात असणारी उच्च-निच जातीभेद, धर्मभेद, स्पर्श-अस्पर्शता या व अशा अनेक समस्यांनी ठाण मांडले होत. या बरोबरच सतीप्रथा, बालहत्या या सारख्या अनेक समस्याही समाजात होत्या या सारख्या समस्यातून भारतीय समाजास मुक्त करण्यासाठी ज्या सामाजिक सुधारणा झाल्या त्या ब्रिटीशांच्या प्रभावातूनच झाल्या असल्याचे दिसून येते. या सामाजिक सुधारणांचा प्रस्तुत शोध निबंधात परामर्श घेण्यात आलेला आहे. शोध निबंधाचे उद्देश :

१) ब्रिटीशकालीन भारतातील सामाजिक परिस्थितीचे अध्ययन करणे.

२) तात्कालीन परिस्थितीत सामाजिक सुधारणांचा उहापोह करणे.

३) सामाजिक सुधारणांमधील ब्रिटीशांच्या प्रभावाचा अभ्यास करणे.

ब्रिटीशांच्या अगमनाच्या वेळी भारतीय समाज अनेक समस्यांनी ग्रस्त होता. समाजात प्रामुख्याने कुप्रथा परंपरा, तसेच स्त्रीयांसंबंधीचे प्रश्न मोठ्या प्रमाणात होते. अशा परिस्थितीत सुधारणा करण्याच्या दृष्टीने ज्या सामाजिक सुधारणा घडून आल्या त्याचा उल्लेख पुढील प्रमाणे करण्यात आला आहे.

१) सतीप्रथा बंदी :

सतीप्रथा भारतात प्राचीन काळापासून अस्तित्वात आहे. सतिप्रथे प्रमाणे स्त्री आपल्या पतीला जन्म जन्मांतरचा पती मानीत असे. त्यामुळे पतीच्या मृत्यूनंतर त्याच्या सोबत चितेवर ती स्वतःला जिवंत जाळून घेत असे. आशा स्त्रीला सति म्हटले जाई. प्रथेला विरोध होणे वैचारिकतेच्या दृष्टीकोनातून सहाजिक होते. भारतीय धार्मिक प्रथामध्ये हस्तक्षेप न करण्याचे ब्रिटीशांचे धोरण होते. परंतु कॉर्नवालिस, मिंटो, लॉर्ड हेस्टिंग्ज सारख्या गव्हर्नर नी या प्रथेवर बंदी आणण्यासाठी प्रयत्न केला. या बरोबरच तात्कालीन भारतीय विचारवंत राजाराम मोहनराययांनी या क्रूर प्रथेवर कठोर प्रहार केला १८३० मध्ये 'चार्टर कायद्याच्या' नवीनीकरणामध्ये ब्रिटीश संसदेकडून गव्हर्नर जर्नल विल्सम बेनटिकला ही प्रथा बंद करण्याची सुचना करण्यात आली. त्याप्रमाणे नियम १७ अनुसार विश्वांना जिवंत जाळण्याच्या प्रथेवर बंधन घालण्यात आले. आशा प्रकारच्या गुन्हात दंड करण्यात येऊन त्यांच्यावर सदेश मनुष्यवधाचा गुन्हा दाखल करावा असे आदेश न्यायालयांना देण्यात आले.

२) बालहत्या बंदी :

भारतात बाल-हत्येची क्रूर प्रथा राजपुत व बंगाल मध्ये प्रचलीत होती. मुलीचा जन्म आर्थिक दृष्टीकोनातून त्याज्य मानला जात असे. त्यामुळे त्यांना बाल्य अवस्थेतच ठार मारले जात असत. हुंड्यामुळे व अन्य कारणामुळे आपल्या कन्येचा विवाह न करू शकलेले कुटुंबीय समाजाकडून हिनतेच्या नजरेतून पाहीले जात असत. ब्रिटीशांनी या क्रूरप्रथेवर प्रहार



केले. आखेर ब्रिटीशांनी बंगाल कायदा १७९५ नियम २१ आणि १८०४ चा नियम ३ या द्वारे बालहत्या वेकायदेशीर घोषित करण्याचा निर्णय घेतला. बालहत्या म्हणजे सदोश मानवहत्या समजून त्यावर गुन्हा दाखल करण्याचे जाहीर करण्यात आले. त्यानंतर १८७० साली आणखी एक नवीन कायदा संमत करून जन्म झालेल्या बालकाची नोंद करणे अनिवार्य करण्यात आले. विशेषतः मुलींना काही वर्षांनंतर पुन्हा उपस्थित करण्याचे बंधन घालण्यात आले. अशा प्रकारे ब्रिटीशांकडून बाल-हत्येविरुद्ध कडक धोरण अवलंबण्यात आले.

३) विधवा विवाहास मान्यता :

भारतात तत्कालीन परिस्थितीत विधवांना एकातर सती जाणे किंवा सामाजिक दृष्टीने एकान्तवासात राहावे लागत असे. यावर उपाय योजना करण्याच्या दृष्टीने ब्रिटीशांनी विधवा विवाहास अनुमती आणि विवाहाचे वय वाढवण्यासंबंधी धोरण ठरवले. विधवा विवाहाच्या प्रश्नावर ब्रम्हो समाजिनी बरिचशी चर्चा केली. कलकत्याचे संस्कृत महाविद्यालयाचे प्राचार्य पंडित इश्वरचंद्र विद्यासागर यांनी विधवा विवाहास लोकमान्यता मिळावी या दृष्टीकोनातून कार्य केले. या बरोबरच पुण्याचे महर्षी धोंडो केशव कर्वे यांनी १८९३ मध्ये एका विधवेशी विवाह केला. या सर्व बाबींचा विचार करून शेवटी ब्रिटीश कायदयानुसार विधवा विवाहास संमती प्रदान करण्यात आली. आशा विवाहातून उत्पन्न होणारी संतती ही कायदेशीर ठरवण्यात आली.

४) स्त्री-शिक्षण विषयक सुधारणा :

भारतीय सामाजिक परिस्थितीतील एक सर्वाधिक मोठी समस्या म्हणजे स्त्री शिक्षणाची समस्या होय. भारतीय समाजात स्त्रीयांना शिक्षणाचा अधिकार नाकारण्यात आला होता. या प्रथेला ब्रिटीशांनी छेद देण्याचे धोरण अवलंबिले. ख्रिचन धर्मप्रचारकांनी स्त्री शिक्षणाच्या उद्देशाने सर्व प्रथम १८१९ मध्ये 'कलकत्ता युवा स्त्री संस्था' स्थापन केली. संस्थेच्या कार्याचा भार जे इ.डी. बेशून यांनी उचलला १८४९ मध्ये त्यांनी कलकत्ता येथे मुलींची शाळा सुरू केली. पं.इश्वरचंद्र विद्यासागर बंगालमधील किमान ३५ मुलींच्या शाळांशी संबंधित होते. मुंबईच्या एल्फिन्स्टन संस्थेच्या विद्यार्थ्यांनी

ह्या क्षेत्रात भरिव कार्य केले. कायदेशीर प्रथा व विज्ञान संस्थेची स्थापना केली. १८५४ च्या वृद्ध अहवालात स्त्री-शिक्षणाची शिफारस केली. कालांतराने स्त्री शिक्षण स्त्रीयांच्या स्थितीत सुध घडवून आणण्याच्या कार्यातील मुख्य अंग बनले. आशा प्रकारे ब्रिटीश काळात स्त्री शिक्षण मुहूर्त मेढ रोवण्यात आली.

५) गुलामगिरी प्रथेवर बंदी :

भारतात पूर्णतः गुलामगिरी कधीच नव्हती परंतु वेठबिगारी मजुर किंवा बंधक मजुर अशा स्वरूप प्रथा अस्तित्वात होती. अशा वेठबिगारांकडून मोबदल्यात अधिक कार्य करवून घेतले जात. विशेषतः उत्तर भारतात गुलामांकडून घेतले जात असे, तर दक्षिण भारतात शेतीची करून घेतली जात असत. १८३३ मध्ये डि. साम्राज्यात गुलामगिरीची प्रथा समाप्त करण्यात आली आणि भारतातही ती समाप्त व्हावी. ह्याकरिता १८४३ च्या चार्टर कायद्यात एक कलम जोडण्यात आले जेणे करून कौन्सिलस्थित गव्हर्नर जनरलला ही लवकरात लवकर समाप्त करता यावी १८४३ संपूर्ण भारतात गुलामगिरी प्रथा वेकायदेशीर करण्यात आली. आणि मालकांना कोण नुकसानभरपाई न देता गुलामांना स्वतंत्र करण्यात १८६० च्या दंड संहितेनुसार गुलामांचा व्यापार घोषित करण्यात आला.

निष्कर्ष :

ब्रिटीश काळात खऱ्याअर्थाने भारतात सामाजिक सुधारणांना सुरुवात झाली. तत्पूर्वी भारतीय समाजात अनेक कुप्रथा, परंपरांचे, अस्तित्त्व होते. यात प्रामुख्याने बालहत्या, सतीप्रथा, स्त्रीशिक्षणास बंदी, विधवा विवाह बंदी, वेठबिगारी प्रथा यांचा समावेश होता. त्याबरोबर भारतीय समाजात स्पृश्य-अस्पृश्यते सारख्या रूढी देखिल होत्या. आशा प्रकारच्या समस्यांवर ब्रिटीश वैज्ञानिक दृष्टीकोनाच्या प्रभावातून उपाययोजना सुरू झाली. ब्रिटीशांनी कायदे निर्माण करून त्या कायद्याची कडक अमलबजावणी करून सर्व कुप्रथा परंपरावर बंदी घातली पाश्चिमात्य तत्वज्ञानातून या सामाजिक कुप्रथा परंपरावर बंदी

शक्य ठरले. खऱ्या अर्थाने भारतात सामाजिक सुधारणांचा श्रीगणेशा त्रिटीश काळातच झाला. कारण याने काळावधीत भारतीय समाजात राजकीय, सामाजिक जागृतीची भावना निर्माण झाली. त्यातूनच भारतात समाज सुधारकांची एक फळी निर्माण झाली. आशा प्रकारच्या प्रयत्नातून सामाजिक सुधारणा घडून आल्या.

17

शिवाजी महाराजांचे धार्मिक धोरण

प्रा. महादेव गणपत देशमुख
यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय,
तुळजापूर, जि. उस्मानाबाद.

संदर्भ ग्रंथ सूची :

- १) डॉ.बी.एल.गोवर, डॉ.एन.के. बेल्लेकर —
आधुनिक भारताचा इतिहास
- २) डॉ.जयसिंगराव पवार, वसुधा पवार —
आधुनिक हिंदुस्थानचा इतिहास
- ३) प्र.न.देशपांडे — आधुनिक भारताचा इतिहास
- ४) श.द. जावडेकर — आधुनिक भारत
- ५) गं.बा.सरदार — महात्मा फुले : व्यक्तीत्व व विचार

□□□

राजकीय, सामाजिक, व धार्मिक क्षेत्रात महाराष्ट्रामध्ये फारच मोठी क्रांती करून आपले हिरावलेले वैयक्तिक व सांघिक स्वातंत्र्य मिळवण्याची उच्च दर्जाची राष्ट्र सेवा छत्रपती शिवाजी महाराजांच्या मार्गदर्शनाखाली सतराव्या शतकात केली तशी त्यापुर्वी व नंतर कोठेही झालेली नाही.

भारतात मुख्यतः इस्लामी धर्माचा जाच स्थानिकांना सोसावा लागला. मुसलमान राजांनी आपल्या आक्रमणात हिंदू भारतीय लोकांना जबरदस्तीने ताब्यात घेवून त्यास अधिकाराची किंवा पैशाची अमिषे दाखवून वाटविले. परधर्मीय देवस्थाने उध्वस्त केली. आदिलशाहाने इतर धर्मियांच्या विरोधात जो ९६ कलमी फतवा काढला होता त्यांची कांही कलमे अशी.

१) आपल्या सर्व मुलखातील एकंदर कारखान्यात मुसलमान जातीचे मामलेदार व हिंदू जातीचे कारकून ठेवावे. ब्राम्हण लोकास हुकमी काम देवू नये कारण की, पृथ्वीची व धर्मचाराची खराबी यामध्ये आहे.

२) मुसलमान व मुसलमानाचे कायद्यास अशाप्रकारे मजबूत ठेवावे कि, कोणतेही आदर्श पुरूषास म्हणजे कोणताही हिंदू प्रबळ असला तथापी त्या हिंदूस एखादा गरीब मुसलमान असल्यास तथापी त्या मुसलमानाशी बराबरी करण्याची सामर्थ्य नसावे. असा मुसलमानी धर्म प्रबळ ठेवावा.

३) जो हिंदू खंडाचा ऐवज देण्यापूर्वी मुसलमानी जातीत शिरून मुसलमान झाला व ज्या मुसलमानाने कुराण शरीफाचे वाक्यास बाद ठेवून चुकून कांही बोलणी बोलला असेलतर त्या थोडेसे अपराधास्तव

PRINCIPAL
RAJIV GANBHI ARTS, COMMERCE
& SCIENCE COLLEGE, KARJAD
TD. & DIST. AURANGABAD.

PRINCIPAL
RAJIV GANBHI ARTS, COMMERCE
& SCIENCE COLLEGE, KARJAD
TD. & DIST. AURANGABAD.



An International Multidisciplinary Quarterly Research Journal

Peer Reviewed Referred
and UGC Listed Journal

AJANTA

ISSN - 2277 - 5730 Volume-VI, Issue-II April-June 2017

Impact Factor - 4.205

Is Hereby Awarding This Certificate To

श्री. डॉ. पद्म कान्हादाजी दिगंबर

An Recognition of the Publication of the Paper Entitled

शुद्धता काव्यविचार

Editor : Assit. Prof. Vinay S. Hatole



AJANTA PRAKASHAN

ISO 9001 : 2008 QMS / ISBN / ISSN

Jaisingpura, Near University Gate, Aurangabad. (M.S.) - 431 004 Ph.No. (0240) 6969427, 2400877
Mob. No. 9579260877, 9822620877, E-mail:ajanta1977@gmail.com, website : www.ajantapublishing.com



AJANTA - VOL. - VI ISSUE - II ISSN 2277 - 5730 (I.F.-4.205).



AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY QUARTERLY
RESEARCH JOURNAL

AJANTA

VOLUME - VI ISSUE - II APRIL - JUNE - 2017 AURANGABAD

Peer Reviewed Referred and UGC Listed Journal



सर्वज्ञानं विद्यते

IMPACT FACTOR / INDEXING
2016 - 4.205
www.sjifactor.com

April 2017
५३ कॉलेज/०१२१

✦ EDITOR ✦

Assit. Prof. Vinay Shankarrao Hatole

M.Sc (Math's), M.B.A. (Mkt), M.B.A (H.R),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod & Dirt), M.Ed.

✦ PUBLISHED BY ✦



Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)



MARATHI

१	डॉ. शुभांगी डी. राठी डॉ. राजेंद्र एस. नाडेकर	जळगाव जिल्हा पंचायतसेजेडिअल अनुसूचित जाती-जमातीच्या राजकीय नेतृत्वाच्या शैक्षणिक स्थितीचे अध्ययन	१-७
२	प्रा. डॉ. संजय शिंदे	महात्मा ज्योतीराव फुले यांचे मराठी साहित्याला योगदान	८-१५
३	प्रा. डॉ. सजेराव गंगाधर गोल्डे	भारतातील नवीन कर रचना - वस्तु व सेवा कर	१६-२९
४	डॉ. स्मिता शिंदे	वसाहतवादी इतिहास लेखनाचे मूल्यमापन	२०-२४
५	श्री. वाय. एम. कुलकर्णी डॉ. मंजूषा कुलकर्णी	श्रीमद्भगवद्गीतेचे तात्पर्य	२५-२८
६	पठाण मगबूलखान इस्माईलखान	ग्रामीण विकासात ग्रामपंचायतीची भूमिका	२९-३३
७	विलास धोंडीराम सिनगारे	मराठी माध्यमिक शाळांतील शिक्षकांच्या समस्या व उपाययोजना	३३-४०
८	शिवप्रसाद मीननाथ घोडके	वारकरी संप्रदायाविषयी	४१-४४
९	डॉ. राजू भागाजी वनारसे डॉ. सत्यपाल हरिभाऊ कांबळे	भारतीय राजकीय संस्कृतितील विविधता आणि बदलते संदर्भ	४५-५०
१०	प्रा.डॉ. गोवर्धन वजरंग लांब	अनुसूचित जमातीच्या समस्या	५३-५५
११	सारिका विष्णूदास मोहिते	रविंद्र शोभणे यांच्या पांढर कादंबरीतील दुष्काळ	५६-५९
१२	प्रा. डॉ. फड कालिदास दिनकर	महिला सबलीकरण	६०-६३

'अजिंठा' या त्रैमासिकात प्रसिध्द झालेली मते मुख्य संपादक, संपादक मंडळ व सल्लागार मंडळास मान्य असतीलच असे नाही. नियतकालिकात प्रसिध्द करण्यात आलेली लेखकाची मते ही त्याची वैयक्तिक मते आहेत. तसेच शोधनिबंधाची जबाबदारी स्वतः लेखकावर राहिल. हे नियतकालिक मालक मुद्रक प्रकाशक विनय शंकरराव हातोले यांनी ऑफिस कॉम्प्युटर अँड प्रिंटर्स जयसिंगपूर विद्यापीठ गेट औरंगाबाद येथे मुद्रित व प्रकाशित केले.

१२

महिला सबलीकरण

प्रा. डॉ. फड कालिदास दिनकर

लोकप्रशासन विभागप्रमुख, राजीव गांधी कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, करमाड, ता. जि. औरंगाबाद.

प्रस्तावना

नेपोलीयन बोनापार्टे असे म्हणतात, "मला एक योग्य माता द्या मी तुम्हाला एक योग्य राष्ट्र देईल. देशाची ५०% जनता (महिला) ह उपेक्षित ठेवून कोणतेच राष्ट्र विकसित होऊ शकत नाही. म्हणून महिला या पुरुषांच्या खांद्याला खांदा देवून कामाला लागल्या पाहिजेत. स्त्रीचे समाजातील स्थान सुदृढ व आदरपूर्वक असेल तर तेथील समाज ही सुदृढ व बलशाली असेल. भारतात जागतिक महासत्ता बनण्याचे स्वप्न साकार करण्यासाठी महिला सबलीकरण आवश्यक आहे.

भारतीय समाजासंदर्भात स्त्रीचा विचार करता असे लक्षात येते की, धर्म, रुढी, प्रथा, परंपरा इत्यादीच्या माध्यमातून स्त्रीला एका चौकटीमध्ये बंद करण्यात आले होते. याचा परिणाम मुलभूत हक्कापासून वंचित झालेली स्त्री समाजाच्या शोषणाची उदरती. अंधश्रद्धा, हिंसा, जुलुम, शोषण यामुळे स्त्रीचा समावेश समाजाच्या दुर्बल घटकामध्ये केला जाऊ लागला. मात्र दुर्बल असणारा समाज सबल असणार नाही ही जाणीव एकूणच समाजामध्ये येऊ लागली आणि स्त्री सबलीकरणाचा विचार समाजामध्ये मांडला जावू लागला. स्त्रियांना त्यांच्या निर्णयाबद्दल, व्यवहाराबद्दल व एकूणच त्यांना सशक्त करण्यासाठी शिक्षण महत्त्व असल्यामुळे स्त्री शिक्षणासाठी प्रयत्न केले जाऊ लागले. मात्र आजही स्त्री सशक्तीकरण किंवा सबलीकरण ही संकल्पना स्त्रियांपुरती मर्यादीत अशी सार्थ ठरते. कारण प्रचलित शिक्षण घेवूनही आजही स्त्री ही स्वतःच्या हक्काविषयी जागरूक नाही व हक्कासाठी आवश्यक कौशल्य व दृष्टीकोन तिच्यामध्ये विकसित झालेला नाही. स्त्रीला सक्षम बनायचे असेल तर तिला तिच्या हक्काची जाणीव होणे आवश्यक आहे.

संशोधनाचा उद्देश

१. महिला सबलीकरणाच्या अर्थाचा अभ्यास करणे.
२. महिलांसाठी निर्माण केलेल्या कायद्याचा शोध घेणे.
३. महिलांच्या वर्तमान स्थितीचा आढावा घेणे.

महिला सबलीकरण म्हणजे काय ?

महिला सबलीकरण म्हणजे पुरुषप्रधान संस्कृतीच्या ठिकाणी महिला प्रधान संस्कृती स्थापन करण्याचा प्रयत्न नाही तर समानतेच्या आधारावर स्त्रियांना पुरुषा समान अधिकार व जबाबदारीचा व स्वातंत्र्याचा उपभोग घेता यावा व सामंजस्यपूर्ण भागीदारीचा महत्त्वपूर्ण प्रयत्न आहे. (कलम १५) 'सबलता एवं सुयोग्यता महिला सबलीकरण की पहचान है।

महिलांची वर्तमान स्थिती

बच्चें भारत की शक्ती नावाच्या पत्रिकेत महिलांची आजची स्थिती प्रकाशित केली आहे. यामध्ये असे सांगितले आहे की १ लाख २५ हजार महिलांचा बाळंतपणाने मृत्यू होतो. प्रतिवर्षी १ कोटी २० लाख मुली जन्म घेतात परंतु फक्त ३०% व आपला १५ वा वाढदिवस पाहतात. ७०% ग्रामीण स्त्रियां या निरक्षर आहेत/ होत्या. पहिली वर्गात प्रवेश घेणाऱ्या प्रत्येक १० मुलीत ६ मुलीच ५ वी पर्यंत व दोनच मुली पदवीत्तर शिक्षण शिक्षण घेतात. प्रतिदर मिनिटाला हुंडाबळी तर प्रति २३ मिनिटाला सपहरण, प्रति २६ मिनिटाला एक उपेक्षितता तर ५४ मिनिटाला एक बलात्कार. महिला अत्याचाराच्या बाबतीत उत्तर प्रदेश १ वर आहे. अलिकडील काळातील सर्वेनुसार १००० पुरुषांमागे स्त्रियांचे प्रमाण ८००च्या आसपास कमी झाले आहे. महिलांच्या वर्तमान स्थिती लक्षात येते.

संरक्षक कायदे स्त्री संरक्षणासाठी

भारतीय राज्यघटनेच्या कलम १५, १६, ३८ आणि ३९ मध्ये समानतेविषयी सांगितले आहे.

१८२९ ला सतीप्रतिबंधक कायदा केला.

हिंदू विवाह पद्धतीविषयी १९६५ मध्ये कायदा केला.

संपत्तीच्या समान अधिकाराविषयी १९५६ मध्ये

हुंडा प्रतिबंधक कायदा १९६१ मध्ये केला.

महिला व बालविकास मंत्रालयाची स्थापना १९८५ मध्ये केली.

राष्ट्रीय महिला आयोगाची स्थापना ३१ जानेवारी १९९२ ला केली.

२००१ महिला सबलीकरण वर्ष घोषित केले.

महिलांना राजकारणात ५०% आरक्षण देण्यात आले.

वरील अभ्यासावरून असे निदर्शनास येते की,

भारतामध्ये महिलांच्या कल्याण आणि विकासासाठी ठोस पावले उचलली आहेत.

सरकारी कार्यक्रम आणि धोरण ठरवण्यात आले आहे.

महिलांच्या विकासासाठी आरक्षणाची ही व्यवस्था करण्यात आलेली आहे.

परंतु महिलांचा विकास जोपर्यंत शेवटच्या घटकापर्यंत पूर्ण इमानदारीने लारगु होऊ शकत नाही आणि यांना संरक्षण प्राप्त होत नाही तोपर्यंत महिला सबलीकरण होण अशक्य प्राय वाटते.

उपाययोजना

महिलांना आपण अबला नसून सबला आहोत असे मानावे. समाजातील परंपरागत असलेल्या रुढी, परंपरेचे उच्चार करावे. महिलांच्या साक्षरतेचे प्रमाण वाढवावे. विशेषतः ग्रामीण भाग. महिलांना आर्थिक, सामाजिकदृष्ट्या सबल बनविणे. महिला संरक्षणासाठी असलेल्या कायद्याची योग्य प्रकारे अंमलबजावणी करणे.

१. महिला अत्याचारासंबंधी जनजागृती करावी.
२. स्व- रोजगार निर्मितीवर भर द्यावा.
३. महिलांमध्ये आपल्या अधिकाराविषयी आत्मविश्वास निर्माण करावा.
४. महिला बचत गटांना प्रोत्साहन दिले जावे.
५. महिलांच्या व्यवसायिक शिक्षणावर भर दिला पाहिजे.
६. निर्णय घेण्याच्या क्षमतेचा विकास करावा.
७. विकास प्रक्रियेमध्ये समान भागीदारी निश्चित करावी.
८. सामाजिक आर्थिक जीवनाच्या सर्व क्षेत्रांमध्ये समान रूपाने त्यांची सहभागिता वाढावी यासाठी प्रयत्न करणे.

समारोप

आज जगाच्या लोकसंख्येत अर्ध्या स्त्रिया आहेत परंतु त्यांचे शिक्षणाचे प्रमाण कमी आहे. म्हणून आज आधुनिक काळातील अडथळे फार वेगळी नाही. प्रत्येक क्षेत्रात स्त्रियांसोबत भेदभाव केला जातो. बालिका, भ्रूणहत्या केली जाते. तिच्यातून वाचली तर तीला जन्मापासून ते मृत्यूपर्यंत समान अधिकार मिळत नाहीत. मुलगा वंशाचा दिवा मानला जातो. परंतु मुलगी वंशाची ज्योत आहे हे कोणीच मानत नाही. कुटुंबात व समाजात तीला अपमानास्पद वागणूक दिली जाते. हुंड्यामुळे तिच्यावर अन्याय अत्याचार केला जातो. बलात्कार, छेडछाड, एकतर्फी प्रेमातून स्त्रियांवर, मुर्लीवर अत्याचार होताना आपण पाहतो. स्त्री हीच स्त्री शत्रु आहे असे मानले जाते. याची सुरुवात कुटुंबातून होते. आई स्वतः पुत्र व पुत्री यात भेद करते. तीच्या व्यवहारातून मुलीत आत्ममहिनेची भावना व मुलाला खोटास अहंकार निर्माण होतो. मुलगी परक्याचे धन मानले जाते. स्त्रियांना शारिरिक व मानसिक त्रास देणे ही एक सामान्य बाब बनली आहे. स्त्रियांच्या या स्थितीमागचे कारण स्त्रियांमध्ये असणारा शिक्षणाचा अभाव. स्त्री शिक्षण व सबलीकरणद्वारे त्यांना त्यांचे अधिकार मिळू शकतात. यासाठी समाजाची मानसिकता बदलणे गरजेचे आहे.

संदर्भग्रंथ

१. वर्मा ओ. पी. , भारतीय सामाजिक व्यवस्था, विकास प्रकाशन, कानपूर, २०११
२. लोहिया शैला, भूमि आणि स्त्री, गोदावरी प्रकाशन, औरंगाबाद, २००६
३. शर्मा प्रजा, भारतीय समाज में नारी, प्रकाशक पोइटर, जयपूर, २००१
४. घटियाला रेहाना संपा., समकालीन भारतातल्या नागरी स्त्रियां, सेज, नवी दिल्ली, २००६
५. मिनाक्षी व्यास, नारी चेतना और सामाजिक विधान, रोशनी कानपूर, २०००.



Peer Reviewed Referred
and UGC Listed Journal

ISO 9001:2008 QMS
ISBN / ISSN



An International Multidisciplinary Quarterly Research Journal

Volume - VI, Issue - III, July - September - 2017

ISSN 2277 - 5730

Impact Factor - 4.205
(www.sjifactor.com)

AJANTA

Is Hereby Awarding This Certificate To

प्रा. डॉ. फड कालिदास दिनकर

An Recognition of the Publication of the Paper Entitled

प्रशासनात जनसहभागाची गरज

Editor : Vinay S. Hatole

Ajanta Prakashan, Jaisingpura, Near University Gate,
Aurangabad. (M.S.) 431 004 Mob. No. 9579260877, 9822620877
Tel No.: (0240) 2400877, ajanta1977@gmail.com, www.ajantaprakashan.com



AJANTA - VOL. - VI ISSUE - III-ISSN 2277 - 5730 (I.F.-4.205)

JULY-SEPTEMBER - 2017

ISSN 2277 - 5730

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY QUARTERLY
RESEARCH JOURNAL

AJANTA

VOLUME - VI ISSUE - III JULY-SEPTEMBER- 2017 AURANGABAD

Peer Reviewed Referred and UGC Listed Journal



IMPACT FACTOR / INDEXING
2016 - 4.205
www.sjifactor.com

July-2017

कड कॉलेज 12

✦ EDITOR ✦

Assit. Prof. Vinay Shankarrao Hatole

M.Sc (Math's), M.B.A. (Mkt), M.B.A (H.R),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod & Dir), M.Ed.

✦ PUBLISHED BY ✦



Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)

22



१७	नागनाथ शशिकांत कबाडे डॉ. संजय गव्हाणे	भारतीय राजकारणाची बदलती समीकरणे	७२-७७
१८	डॉ. दिपक आनंदराव चौरपगार	महिला सक्षमीकरण काळाची गरज एक समाजशास्त्रीय अध्ययन	७८-७९
१९	डॉ. ललित अघाने	मुकुंदराज ते आज	८०-८३
२०	अविनाश सुदाम भालेराव	दलित साहित्य: एक वेध	८४-८७
२१	प्रा. डॉ. फड कालिदास दिनकर	प्रशासनात जनसहभागाची गरज	८८-९१

'अजिंठा' या त्रैमासिकात प्रसिध्द झालेली मते मुख्य संपादक, संपादक मंडळ व सल्लागार मंडळास मान्य असतीलच असे नाही. या

नियतकालिकात प्रसिध्द करण्यात आलेली लेखकाची मते ही त्याची वैयक्तिक मते आहेत.

तसेच शोधनिबंधाची जबाबदारी स्वतः लेखकावर राहिल. हे नियतकालिक मालक मुद्रक प्रकाशक विनय शंकरराव हातोले यांनी अजिंठा कॉम्प्युटर अँड प्रिंटर्स जयसिंगपूर विद्यापीठ गेट औरंगाबाद येथे मुद्रित व प्रकाशित केले.



प्रशासनात जनसहभागाची गरज

प्रा. डॉ. फड कालिदास दिनकर

लोकप्रशासन विभागप्रमुख, राजीव गांधी कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, करमाड, ता. जि. औरंगाबाद.

प्रस्तावना

भारताने लोककल्याणकारी राज्याची संकल्पना स्विकारली आहे. प्रशासन हे नागरिकांच्या आशा- आकांक्षा पूर्ण करण्याचे एक साधन आहे. लोकशाही मध्ये विकास कामांची सफलता, यशस्वीता ही तेथील जनसहभागावर अवलंबून असते. लोकशाही व्यवस्थेत लोकांनी निवडलेले प्रतिनीधी प्रशासन चालवतात. लोकसहभागाद्वारेच जनतेस शासनाच्या कार्याची माहिती मिळते. तसेच लोक आपली मते, प्रतिक्रिया ही नोंदवतात. यामुळे विकसनशील देशातील प्रशासनात जनतेचा सहभाग महत्त्वपूर्ण आहे. हा लोकसहभाग म्हणजे जनतेने सार्वजनिक कार्यात रस, आवड घेणे, लोकसहभागाचा मुख्य उद्देश स्थानिक स्तरापासून ते राष्ट्रीय स्तरापर्यंत आखण्यात येणाऱ्या योजना, कार्यक्रम कार्यांमध्ये सकारात्मक सहभाग निश्चित करणे होय. जनसहभागासंदर्भात पाचव्या पंचवर्षिक योजनेमध्ये प्रभावी नियोजनासाठी सामान्य जनता व त्यांच्या निर्वाचित प्रतिनिधींचा सहभाग ही प्राथमिक गरज आहे. असे म्हणतात की, सुशासन पारदर्शक होण्यासाठी लोकसहभाग अत्यंत महत्त्वपूर्ण असतो.

संशोधनाचा उद्देश

१. प्रशासनात जनसहभागाच्या आवश्यकतेचा अभ्यास करणे.
२. जनसहभागाच्या स्वरूपाचा शोध घेणे.
३. जनसहभाग वाढवण्याच्या उपायाचा आढावा घेणे.

जनसहभागाचा अर्थ

आज आधुनिक काळामध्ये शासनाच्या प्रत्येक कार्यामध्ये या ना त्या कारणाने जनतेच्या सहभागाला महत्त्व प्राप्त झाले आहे. कारण त्यावरच शासनाचे धोरण, कार्यक्रम, योजनांची फलनिष्पत्ती अवलंबून असते. "लोकसहभाग म्हणजे नागरिकांना निर्णय घेण्याच्या प्रक्रियेत, धोरण ठरवणे, त्या धोरणाची अंमलबजावणी या सर्व प्रक्रियेत प्रत्यक्ष सहभागी करून घेणे होय."

"प्रशासकीय कार्यात सर्वसामान्य जनतेचा सक्रिय हस्तक्षेप म्हणजेच जनसहभाग होय."

'सामान्य हिताच्या समस्या व विविध मुद्द्यांवर नागरिकांना प्रवृत्त करण्याचा जाणून बुजून व व्यवस्थित केलेला प्रयत्न म्हणजे जनसहभाग होय.'

"शासनाचे असे कल्याणकारी कार्यक्रम, उपक्रम त्यांच्या मार्फत नागरिक प्रशासकीय कार्यसंचलनात सहभागी होतात त्यास जनसहभाग असे म्हणतात.



लोकशाही यशस्वी करायची असेल तर प्रशासनात जनतेचा सहभाग असणे आवश्यक असते. लोकांच्या पाठिंब्यानेच लोकशाही शासन अस्तित्वात येत असते. लोकांच्या सहकार्याशिवाय ते स्थिर राहू शकत नाही. लोकशाही एक शासन व्यवस्था नसून ती एक जीवनपद्धती आहे. लोकशाहीची जीवनमुल्य प्रस्थापीत करण्यासाठी सर्व जनतेचा सहभाग असणे आवश्यक असते. म्हणूनच लोकशाहीला सहभागी संस्कृती असे म्हटले जाते. शासनाची कोणतीही योजना यशस्वी होण्यासाठी प्रशासन लोकाभिमुख व पारदर्शक, गतिशील व्हावे यासाठी जनतेचा सहभाग महत्वपूर्ण असून माजी राष्ट्रपती के. आर. नारायणन अहमदाबाद येथे महिला बँकेच्या दहाव्या बैठकीत उदघाटन प्रसंगी असे म्हणतात की, "मागील ५० वर्षांच्या इतिहासात महिला व दारिद्रय निर्मुलनाच्या कार्यक्रमात नोकरशाहीच्या अडथळ्यामुळे योग्य परिणाम मिळाले नाहीत. त्यांच्या यशस्वीतेसाठी उद्दिष्टे साध्य करण्यासाठी सामान्य जनतेचा आणि स्वयंसेवी संस्थांचा विकास कार्यात सहभाग वाढला पाहिजे.

१. जनसहभागामुळे स्थानिक नेतृत्व विकसीत होते.
२. विकास कार्यक्रम राबविण्यास प्रेरणा मिळते.
३. स्थानिक जनतेचे प्रश्न, समस्या सोडविण्यास प्राधान्य.
४. जनसहभागामुळे कार्य वेळेत पूर्ण होतात किंवा करता येतात.
५. प्रशासन व्यवस्था पारदर्शक व जनताभिमुख बनते.
६. जनसहभागामुळे प्रशासन व शासनासंबंधी जनतेत आपलेपणाची भावना निर्माण होते.
७. जनसहभागामुळे शासनाकडून विकास कार्यावर होणाऱ्या खर्चावर व अंमलबजावणीवर नियंत्रण ठेवता येते.
८. लोकसहभागामुळे नागरिकांना देशाच्या विकास कार्यक्रमांमध्ये सहभागी होण्याची सुसंधी प्राप्त होते. त्यातून नागरिकांना आपले कर्तव्य पूर्तीचे समाधान मिळते.

जनसहभागाचे स्वरूप

सर्वसाधारण नागरिकांमधील निरक्षरता, अज्ञान, गरिबी, बेकारी, उदासिनता या कारणांमुळे जनतेच्या प्रशासनातील सहभागावर मर्यादा पडतात. परंतु असे असले तरी साधारण नागरिक, शासनात आणि प्रशासनात सहभाग घेतच असतो. उदा. नागरिक अप्रत्यक्षपणे जेव्हा सहभागी होतो ते पुढीलप्रमाणे :

१. ग्रामपंचायत, नगरपालिका, जिल्हापरिषद, राज्य विधानसभा किंवा लोकसभा यासाठी आपले प्रतिनीधी निवडण्यासाठी मतदान करतो.
२. प्रबळ नागरिक विविध चर्चासत्र किंवा सभा सम्मेलनात भाग घेतात आणि आपले विचार मांडतात.
३. विविध राजकीय पक्ष, दबावगट, युवक संघटना, स्वयंसेवी संस्था इत्यादींच्या कार्यात नागरिक सहभागी होतात.
४. नागरिक आपल्या तक्रारी, गान्हाणी आणि मागण्या शासनाच्या किंवा प्रशासनाच्या विविध स्तरावर मांडतात.
५. वृत्तपत्रातून किंवा इतर माध्यमाद्वारे नागरिक आपले विचार आणि मते मांडतात.



६. शासनाच्या विविध समित्या, उपसमित्या अभ्यासगट किंवा सल्लागार मंडळांमध्ये सदस्य म्हणून सहभागी होण्याची, आपले विचार मांडण्याची संधी मिळते.

करणाची सहभागी होण्याची, आपले विचार मांडण्याची संधी मिळते. प्रशासनात किंवा शासनात निर्णय प्रक्रियेत किंवा निर्णय अंमलबजावणीत प्रत्यक्ष किंवा परोक्ष औपचारिक किंवा अनौपचारिक कोणत्याही प्रकारे नागरिकांचा प्रशासनात सहभाग असणे लोकशाहीच्या यशस्वीतेसाठी आवश्यक असते. नागरिकांचा सहभाग जेवढा प्रभावी असेल, तेवढेच प्रशासन कार्यक्षम आणि प्रभावी होईल.

निष्कर्ष

१. नागरिकांना सर्व प्रशासकीय कार्यात सहभागी होण्याची आणि शक्यतो सहकार्य करण्याची जिद्द असावी.
२. शासन आणि प्रशासन जनतेच्या इच्छा आकांक्षा जाणून काम करणारे असावे.
३. जनतेला प्रशासकाच्या कामाचे योग्य मुल्यमापन करता आले पाहिजे.
४. शासनाच्या धोरणांना आणि कार्यक्रमांना जनतेचा भक्कम पाठिंबा असावा.
५. राजकीय नेतृत्व, प्रशासकीय कर्मचारी आणि सामान्य जनता यांच्यात सामंजस्य आणि सलोख्याचे संबंध असावे. नसता कोणत्याही प्रकारची सहभागाची योजना यशस्वी होऊ शकणार नाही.

उपाययोजना

विकास कार्यक्रम आपल्यासाठीच आहेत ही भावना नागरिकांत निर्माण झाली पाहिजे. तसेच नागरिकांनी आपले कर्तव्य, उत्तरदायित्व व जबाबदाऱ्या प्रति जागरूक झाले पाहिजेत.

१. जनसहभाग वाढविण्याच्या दृष्टिने स्थानिक स्तरावर सामुदायिक सभांची स्थापना करावी.
२. स्थानिक नेतृत्व विकासाभिमुख व संवेदनशील असावे.
३. नागरिकांना सुशिक्षित व जागरूक बनविणे.
४. जनतेस प्रशासकीय क्रियामध्ये सहभागी होण्यास प्रोत्साहित करणे.
५. जनतेच्या इच्छा आकांक्षाची प्रभावीपणे पूर्तता करावी.
६. सूचना व माहिती प्रसारणासाठी योग्य, प्रभावी व विश्वसनीय संदेश वहन व्यवस्था निर्माण करावी. त्या माध्यमातून जनसहभागाचे महत्व जनतेच्या मनात बिंबवता येते.

समारोप

नागरिकांना जनसहभागाचे महत्व समजावून सांगितले की त्यांच्या विचारात सकारात्मक परिवर्तन घडेल व आपोआपच जनतेमध्ये सहभागाची वृत्ती वाढेल आणि विकासाचे लक्ष्य साध्य होण्यास मदत होईल. शासनाच्या कोणत्याही कार्यामध्ये, योजनांमध्ये नागरिकांचा उत्सर्जित सहभाग असेल तर त्या कार्यक्रम, योजनांचे उद्दिष्ट ध्येय साध्य होऊन विकासाची प्रक्रिया चालू राहते. विकास विषयक योजनात जनतेचा सहभाग महत्वपूर्ण असून यावरच त्याची यशस्वीता अवलंबून आहे.



१. Noorjahan Bawa, People's participation in Development in India, Upphal, New Delhi, १९८४
२. Goel S.L., Advanced Public Administration, Deep and Deep Publication Pvt. New Delhi, २००३
३. The Indian Journal of Public Administration, Governance for Development Indian Institute of Public Admin. Jan-March २००६
४. पारस बोरा/ शाम शिरसाठ, लोकप्रशासन शास्त्र, प्रकाशक मनमोहन बकिरिंग वर्डे, सावित्रीनगर, हिमायतबाग, औरंगाबाद.
५. हेळंबे एच.बी., लोकप्रशासन नविन विचार प्रवाह, प्रकाशक, चिन्मय प्रकाशन, औरंगाबाद, २०११
६. फाडिया बी.एल., लोकप्रशासन, स हिन्तयभुवन प्रब्लिकेशन, आग्रा, २००६

PRINCIPAL
RAJIV GANDHI ARTS, COMMERCE
& SCIENCE COLLEGE, KARMAD
TQ. & DIST. AURANGABAD.

PRINCIPAL
RAJIV GANDHI ARTS, COMMERCE
& SCIENCE COLLEGE, KARMAD
TQ. & DIST. AURANGABAD.



लोकशाही यशस्वी करायची असेल तर प्रशासनात जनतेचा सहभाग असणे आवश्यक असते. लोकांच्या पाठिंब्यानेच लोकशाही शासन अस्तित्वात येत असते. लोकांच्या सहकार्याशिवाय ते स्थिर राहू शकत नाही. लोकशाही एक शासन व्यवस्था नसून ती एक जीवनपद्धती आहे. लोकशाहीची जीवनमुल्य प्रस्थापीत करण्यासाठी सर्व जनतेचा सहभाग असणे आवश्यक असते. म्हणूनच लोकशाहीला सहभागी संस्कृती असे म्हटले जाते. शासनाची कोणतीही योजना यशस्वी होण्यासाठी प्रशासन लोकाभिमुख व पारदर्शक, गतिशील व्हावे यासाठी जनतेचा सहभाग महत्वपूर्ण असून माजी राष्ट्रपती के. आर. नारायणन अहमदाबाद येथे महिला बँकेच्या दहाव्या बैठकीत उदघाटन प्रसंगी असे म्हणतात की, "मागील ५० वर्षांच्या इतिहासात महिला व दारिद्र्य निर्मुलनाच्या कार्यक्रमात नोकरशाहीच्या अडथळ्यामुळे योग्य परिणाम मिळाले नाहीत. त्यांच्या यशस्वीतेसाठी उद्दिष्टे साध्य करण्यासाठी सामान्य जनतेचा आणि स्वयंसेवी संस्थांचा विकास कार्यात सहभाग वाढला पाहिजे.

१. जनसहभागामुळे स्थानिक नेतृत्व विकसीत होते.
२. विकास कार्यक्रम राबविण्यास प्रेरणा मिळते.
३. स्थानिक जनतेचे प्रश्न, समस्या सोडविण्यास प्राधान्य.
४. जनसहभागामुळे कार्य वेळेत पूर्ण होतात किंवा करता येतात.
५. प्रशासन व्यवस्था पारदर्शक व जनताभिमुख बनते.
६. जनसहभागामुळे प्रशासन व शासनासंबंधी जनतेत आपलेपणाची भावना निर्माण होते.
७. जनसहभागामुळे शासनाकडून विकास कार्यावर होणाऱ्या खर्चावर व अंमलबजावणीवर नियंत्रण ठेवता येते.
८. लोकसहभागामुळे नागरिकांना देशाच्या विकास कार्यक्रमांमध्ये सहभागी होण्याची सुसंधी प्राप्त होते. त्यातून नागरिकांना आपले कर्तव्य पूर्तीचे समाधान मिळते.

जनसहभागाचे स्वरूप

सर्वसाधारण नागरिकांमधील निरक्षरता, अज्ञान, गरिबी, बेकारी, उदासिनता या कारणांमुळे जनतेच्या प्रशासनातील सहभागावर मर्यादा पडतात. परंतु असे असले तरी साधारण नागरिक, शासनात आणि प्रशासनात सहभाग घेतच असतो. उदा. नागरिक अप्रत्यक्षपणे जेव्हा सहभागी होतो ते पुढीलप्रमाणे :

१. ग्रामपंचायत, नगरपालिका, जिल्हापरिषद, राज्य विधानसभा किंवा लोकसभा यासाठी आपले प्रतिनिधी निवडण्यासाठी मतदान करतो.
२. प्रबळ नागरिक विविध चर्चासत्र किंवा सभा, सम्मेलनात भाग घेतात आणि आपले विचार मांडतात.
३. विविध राजकीय पक्ष, दबावगट, युवक संघटना, स्वयंसेवी संस्था इत्यादींच्या कार्यात नागरिक सहभागी होतात.
४. नागरिक आपल्या तक्रारी, गान्हाणी आणि मागण्या शासनाच्या किंवा प्रशासनाच्या विविध स्तरावर मांडतात.
५. वृत्तपत्रातून किंवा इतर माध्यमाद्वारे नागरिक आपले विचार आणि मते मांडतात.

प्रशासनात जनसहभागाची गरज

प्रा. डॉ. फड कालिदास दिनकर

लोकप्रशासन विभागप्रमुख, राजीव गांधी कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, करमाड, ता. जि. औरंगाबाद.

प्रस्तावना

भारताने लोककल्याणकारी राज्याची संकल्पना स्विकारली आहे. प्रशासन हे नागरिकांच्या आशा- आकांक्षा पूर्ण करण्याचे एक साधन आहे. लोकशाही मध्ये विकास कामांची सफलता, यशस्वीता ही तेथील जनसहभागावर अवलंबून असते. लोकशाही व्यवस्थेत लोकांनी निवडलेले प्रतिनिधी प्रशासन चालवतात. लोकसहभागाद्वारेच जनतेस शासनाच्या कार्याची माहिती मिळते. तसेच लोक आपली मते, प्रतिक्रिया ही नोंदवतात. यामुळे विकसनशील देशातील प्रशासनात जनतेचा सहभाग महत्त्वपूर्ण आहे. हा लोकसहभाग म्हणजे जनतेने सार्वजनिक कार्यात रस, आवड घेणे, लोकसहभागाचा मुख्य उद्देश स्थानिक स्तरापासून ते राष्ट्रीय स्तरापर्यंत आखण्यात येणाऱ्या योजना, कार्यक्रमां कार्यामध्ये सकारात्मक सहभाग निश्चित करणे होय. जनसहभागासंदर्भात पाचव्या पंचवार्षिक योजनेमध्ये प्रभावी नियोजनासाठी सामान्य जनता व त्यांच्या निर्वाचित प्रतिनिधींचा सहभाग ही प्राथमिक गरज आहे. असे म्हणतात की, सुशासन पारदर्शक होण्यासाठी लोकसहभाग अत्यंत महत्त्वपूर्ण असतो.

संशोधनाचा उद्देश

१. प्रशासनात जनसहभागाच्या आवश्यकतेचा अभ्यास करणे.
२. जनसहभागाच्या स्वरूपाचा शोध घेणे.
३. जनसहभाग वाढवण्याच्या उपायाचा आढावा घेणे.

जनसहभागाचा अर्थ

आज आधुनिक काळामध्ये शासनाच्या प्रत्येक कार्यामध्ये या ना त्या कारणाने जनतेच्या सहभागाला महत्त्व प्राप्त झाले आहे. कारण त्यावरच शासनाचे धोरण, कार्यक्रम, योजनांची फलनिष्पत्ती अवलंबून असते. "लोकसहभाग म्हणजे नागरिकांना निर्णय घेण्याच्या प्रक्रियेत, धोरण ठरवणे, त्या धोरणाची अंमलबजावणी या सर्व प्रक्रियेत प्रत्यक्ष सहभागी करून घेणे होय."

"प्रशासकीय कार्यात सर्वसामान्य जनतेचा सक्रिय हस्तक्षेप म्हणजेच जनसहभाग होय."

'सामान्य हिताच्या समस्या व विविध मुद्द्यांवर नागरिकांना प्रवृत्त करण्याचा जाणून बुजून व व्यवस्थित केलेला प्रयत्न म्हणजे जनसहभाग होय.'

"शासनाचे असे कल्याणकारी कार्यक्रम, उपक्रम त्यांच्या मार्फत नागरिक प्रशासकीय कार्यसंचलनात सहभागी होतात त्यास जनसहभाग असे म्हणतात.

22
22



१७	नागनाथ शशिकांत कबाडे डॉ. संजय गव्हाणे	भारतीय राजकारणाची बदलती समीकरणे	७२-७७
१८	डॉ. दिपक आनंदराव चौरपगार	महीला सक्षमीकरण काळाची गरज एक समाजशास्त्रीय अध्ययन	७८-७९
१९	डॉ. ललित अध्याने	मुकुंदराज ते आज	८०-८३
२०	अविनाश सुदाम भालेराव	दलित साहित्य: एक वेध	८४-८७
२१	प्रा. डॉ. फड कालिदास दिनकर	प्रशासनात जनसहभागाची गरज	८८-९१

'अजिंठा' या त्रैमासिकात प्रसिध्द झालेली मते मुख्य संपादक, संपादक मंडळ व सल्लागार मंडळास मान्य असतीलच असे नाही. या नियतकालिकात प्रसिध्द करण्यात आलेली लेखकाची मते ही त्याची वैयक्तिक मते आहेत.

तसेच शोधनिबंधाची जबाबदारी स्वतः लेखकावर राहिल. हे नियतकालिक मालक मुद्रक प्रकाशक विनय शंकरराव हातोले यांनी अजिंठा कॉम्प्युटर अँड प्रिंटर्स जयसिंगपूरा विद्यापीठ गेट औरंगाबाद येथे मुद्रित व प्रकाशित केले.

22



AJANTA - VOL. - VI ISSUE - III-ISSN 2277 - 5730 (I.F.-4.205)

JULY-SEPTEMBER 2017

ISSN 2277-5730

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY QUARTERLY
RESEARCH JOURNAL

AJANTA

VOLUME - VI ISSUE - III JULY-SEPTEMBER- 2017 AURANGABAD

Peer Reviewed Referred and UGC Listed Journal



July-2017

फड कॉलेज २

IMPACT FACTOR / INDEXING
2016 - 4.205
www.sjifactor.com

✦ EDITOR ✦

Assit. Prof. Vinay Shankarrao Hatole

M.Sc (Math's), M.B.A. (Mkt), M.B.A (H.R),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod & Dirt), M.Ed.

✦ PUBLISHED BY ✦



Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)

६. शासनाच्या विविध समित्या, उपसमित्या अभ्यासगट किंवा सल्लागार मंडळांमध्ये सदस्य म्हणून नागरिकांना काम

करणची सहभागी होण्याची, आपले विचार मांडण्याची संधी मिळते.

प्रशासनात किंवा शासनात निर्णय प्रक्रियेत किंवा निर्णय अंमलबजावणीत प्रत्यक्ष किंवा परोक्ष औपचारिक किंवा अनौपचारिक कोणत्याही प्रकारे नागरिकांचा प्रशासनात सहभाग असणे लोकशाहीच्या यशस्वीतेसाठी आवश्यक असते. नागरिकांचा सहभाग जेवढा प्रभावी असेल, तेवढेच प्रशासन कार्यक्षम आणि प्रभावी होईल.

निष्कर्ष

१. नागरिकांना सर्व प्रशासकीय कार्यात सहभागी होण्याची आणि शक्यतो सहकार्य करण्याची जिद्द असावी.
२. शासन आणि प्रशासन जनतेच्या इच्छा आकांक्षा जाणून काम करणारे असावे.
३. जनतेला प्रशासकाच्या कामाचे योग्य मुल्यमापन करता आले पाहिजे.
४. शासनाच्या धोरणांना आणि कार्यक्रमांना जनतेचा भक्कम पाठिंबा असावा.
५. राजकीय नेतृत्व, प्रशासकीय कर्मचारी आणि सामान्य जनता यांच्यात सामंजस्य आणि सलोख्याचे संबंध असावे. नसता कोणत्याही प्रकारची सहभागाची योजना यशस्वी होऊ शकणार नाही.

उपाययोजना

विकास कार्यक्रम आपल्यासाठीच आहेत ही भावना नागरिकांत निर्माण झाली पाहिजे. तसेच नागरिकांनी आपले कर्तव्य, उत्तरदायित्व व जबाबदाऱ्या प्रति जागरूक झाले पाहिजेत.

१. जनसहभाग वाढविण्याच्या दृष्टिने स्थानिक स्तरावर सामुदायिक सभांची स्थापना करावी.
२. स्थानिक नेतृत्व विकासाभिमुख व संवेदनशील असावे.
३. नागरिकांना सुशिक्षित व जागरूक बनविणे.
४. जनतेस प्रशासकीय क्रियामध्ये सहभागी होण्यास प्रोत्साहित करणे.
५. जनतेच्या इच्छा आकांक्षाची प्रभावीपणे पुर्तता करावी.
६. सूचना व माहिती प्रसारणासाठी योग्य, प्रभावी व विश्वसनीय संदेश वहन व्यवस्था निर्माण करावी. त्या माध्यमातून जनसहभागाचे महत्व जनतेच्या मनात बिंबवता येते.

समारोप

नागरिकांना जनसहभागाचे महत्व समजावून सांगितले की त्यांच्या विचारात सकारात्मक परिवर्तन घडेल व आपोआपच जनतेमध्ये सहभागाची वृत्ती वाढेल आणि विकासाचे लक्ष्य साध्य होण्यास मदत होईल. शासनाच्या कोणत्याही कार्यामध्ये, योजनांमध्ये नागरिकांचा उत्सफुर्त सहभाग असेल तर त्या कार्यक्रम, योजनांचे उद्दिष्ट ध्येय साध्य होऊन विकासाची प्रक्रिया चालू राहते. विकास विषयक योजनात जनतेचा सहभाग महत्वपूर्ण असून यावरच त्याची यशस्वीता अवलंबून आहे.



संदर्भग्रंथ

१. Noorjahan Bawa, People's participation in Development in India, Upphal, New Delhi, १९८४
२. Goel S.L., Advanced Public Administration, Deep and Deep Publication Pvt. New Delhi, २००३
३. The Indian Journal of Public Administration, Governance for Development Indian Institute of Public Admin. Jan-March २००४
४. पारस बोरा/ शाम शिरसाठ, लोकप्रशासन शास्त्र, प्रकाशक ज्ञानसमिधा पब्लिशिंग वर्ल्ड, सावित्रीनगर, हिमायतबाग, औरंगाबाद.
५. हेळंबे एच.बी., लोकप्रशासन नविन विचार प्रवाह, प्रकाशक, चिन्मय प्रकाशन, औरंगाबाद, २०११
६. फाडिया बी.एल., लोकप्रशासन, साहित्यभुवन पब्लिकेशन, आग्रा, २००६



PRINCIPAL
RAJIV GANDHI ARTS, COMMERCE
& SCIENCE COLLEGE, KARMAD
TQ. & DIST. AURANGABAD.



ISSN 2277 - 5730
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

Volume - VII

Issue - I

January - March - 2018

**Peer Reviewed Referred
and UGC Listed Journal**

Journal No. 40776



Jun 2018
कड कारिकास

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

**IMPACT FACTOR / INDEXING
2017 - 5.2
www.sjifactor.com**

❖ EDITOR ❖

Assit. Prof. Vinay Shankarrao Hatole
M.Sc (Math's), M.B.A. (Mkt), M.B.A (H.R),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod & Dirt), M.Ed.

❖ PUBLISHED BY ❖



Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)



२२	प्रा. डॉ. फड कालिदास दिनकर	आपत्ती व्यवस्थापन काळाची गरज	८९-९२
HINDI			
१	डॉ. आर. जी. बम्बोले	विनोबाजी का ब्रम्हचर्य एक अध्ययन	१-४
२	दुर्गा प्रसाद सिंह	मार्कडेय की कहानियों में भूमि-समस्या	५-८
३	डॉ. विजयप्रसाद के. अवस्थी	भारतीय शिक्षा प्रणाली: कल आज और कल	९-१४
४	इंदिरा रजेसिंग गिरासे डॉ. कुमार भुजंगराव कदम	वीर शिरोमणी, अगम्य साहस और शौर्य का प्रतिक, स्थापत्यकला का जनक - महाराणा कुंभा	१५-१६
५	डॉ. वन्दना चौबे अमित गंगानी	गंगानी परिवार के आधार स्तंभ - पं. कुन्दनलाल गंगानी	१७-१९
६	प्रा. अरूण वामन आहरे	विष्णु प्रभाकर (अर्द्धनारीश्वर के विशेष संदर्भ में)	२०-२२
७	वैजनाथ मेघराज राठोड	बंजारन वेशभूषा	२३-२५

'अजिंठा' या त्रैमासिकात प्रसिध्द झालेली मते मुख्य संपादक, संपादक मंडळ व सल्लागार मंडळास मान्य असतीलच असे नाही. या नियतकालिकात प्रसिध्द करण्यात आलेली लेखकाची मते ही त्याची वैयक्तिक मते आहेत. तसेच शोधनिबंधाची जबाबदारी स्वतः लेखकावर राहिल. हे नियतकालिक मालक मुद्रक प्रकाशक विनय शंकरराव हातोले यांनी अजिंठा कॉम्प्युटर अँड प्रिंटर्स जयसिंगपूर विद्यापीठ गेट औरंगाबाद येथे मुद्रित व प्रकाशित केले.

आपत्ती व्यवस्थापन काळाची गरज

प्रा. डॉ. फड कालिदास दिनकर

लोकप्रशासन विभागप्रमुख, राजीव गांधी कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, करमाड, ता. जि. औरंगाबाद.

प्रस्तावना

आज २१ व्या शतकात मानव निसर्गावर मात करण्याच्या उन्मादात भस्मासूरच्या पंक्तीत जाऊन पोहोचला आहे. येथे पॉल हेनरी थिओरी यांचे कथन लागू पडते. ते म्हणतात, " निसर्गाकडे दुर्लक्ष हेच मानवाच्या दुःखाचे उगमस्थान आहे." पुर, अतिवृष्टी, भुस्खलन, दुष्काळ व गारपीट अशा नैसर्गिक आपत्ती दिवसेंदिवस वाढत चालल्या आहेत. याची पाळेमुळे मानवाच्या हव्यासात दडलेली आहे. मानवाच्या हव्यासागुळे केवळ नैसर्गिकच नाही तर मानव निर्मित आपत्तीत सुद्धा मोठ्या प्रमाणात वाढ झालेली दिसून येईल. प्रदुषण, घनकचरा, दंगली, युद्धे, दहशतवाद आणि विविध अपघात ई.

भारताच्या दृष्टीने विचार केला तर येथील भौगोलिक परिस्थिती, सामाजिक परिस्थिती आणि लोकसंख्येमुळे आपत्तीच्या वारंवारित वाढ झालेली दिसून येते. भारतात २००५ साली आपत्ती व्यवस्थापन कायदा संमत झाला. ज्यानुसार केंद्रीय पातळीवर राष्ट्रीय आपत्ती व्यवस्थापन प्राधिकरण, राज्य पातळीवर राज्य आपत्ती व्यवस्थापन प्राधिकरण व जिल्हा पातळीवर जिल्हा आपत्ती व्यवस्थापन प्राधिकरण स्थापन करण्यात आले. आपत्ती व्यवस्थापन प्राधिकरण NDRF च्या मदतीने आपत्कालीन परिस्थितीमध्ये मदत व बचावाचे कार्य करते. या NDRF ने आजपर्यंत जवळपास ५५२०१८ लोकांचे प्राण वाचवले तर ५५ लाख लोकांना आपत्ती व्यवस्थापनासाठी प्रशिक्षण दिले.

आपत्ती व्यवस्थापन म्हणजे काय ? ते पाहण्यापूर्वी आपत्ती म्हणजे काय पाहणे संयुक्तिक ठरेल. आपत्तीस इंग्रजीमध्ये Disaster असे म्हणतात. हा शब्द फ्रेंच भाषेतून आला आहे. जो Des व Aster या दोन शब्दांपासून बनला आहे. Des म्हणजे Evil/ Bad व Aster म्हणजे तारे अर्थात वाईट. तारे तसे पाहिले तर ज्योतिष व तान्यावर विश्वास ठेवणारे आपण भारतीय आपणास याचा अर्थ लगेच कळेल.

आकस्मिक किंवा अचानक येणारे संकट ज्यापासून मोठी आर्थिक व जैविक हानी पोहचू शकते त्यास आपत्ती असे म्हणता येईल. मग ते संकट मानवनिर्मित असो किंवा नैसर्गिक. आपत्ती म्हणजे ज्या संकटामुळे राष्ट्राची किंवा समाजाची मोठ्या प्रमाणात जिवित, आर्थिक आणि सामाजिक हानी होते. तसेच त्या राष्ट्रावर किंवा समाजावर तिचे दुरगामी परिणाम होतात. अशा संकटाला आपत्ती म्हणतात.

आपत्ती व्यवस्थापनाचे हेतू किंवा उद्दिष्टे

१. आपत्तीचे स्वरूप व परिणाम समजून घेणे.

२. आपत्ती विषयी ज्ञान व माहिती मिळविणे.
३. आपत्तीची कारणे व प्रक्रिया शोधणे.
४. आपत्तीग्रस्त प्रदेशातील वास्तव्य आकलन करणे.
५. नागरिकांचा सक्रिय सहभाग नोंदविणे.
६. सुयोग्य उपाययोजनांची अंमलबजावणी करणे.
७. आपत्ती निवारण्याचे उपाय शोधणे.
८. नागरिकांचा सक्रिय सहभाग नोंदविणे.

आपत्तीचे वर्गीकरण

नैसर्गिक आपत्ती	मानव निर्मित आपत्ती	मानव जबाबदार आपत्ती
पुर दुष्काळ, भूकंप, सुनामी, उष्ण लहर, थंड लहर, भुस्खलन, वादळ, ज्वालामुखी स्फोट	जात, वंश, धर्म, प्रांत, दंगल, आश्रितांचे लोंढे, युद्ध, आक्रमण, दहशतवाद, नक्षलवाद, क्राईम	साथीचे रोग, औद्योगिक आपत्ती, आग, दळणवळण संबंधीत अपघात, सण-उत्सव काळातील अपघात, विषबाधा

आपत्ती व्यवस्थापनाची आवश्यकता

१. आपत्तीची तीव्रता कमी करण्यासाठी.
२. आपत्ती येण्यापासून प्रतिबंध करण्यासाठी
३. जैविक व वित्तीय हानी कमी करण्यासाठी.
४. लोकांचे जीवन सुकर करण्यासाठी.
५. आपत्तीची वैज्ञानिक पद्धतीने हाताळणी करण्यासाठी.
६. लोकांना आपत्तीसंबंधी आवश्यक प्रशिक्षण देण्यासाठी.
७. जनसहभागीता वाढविण्यासाठी.
८. आपत्तीमुळे विस्कळीत झालेले जनजीवन जलदगतीने पुर्वपदावर आणण्यासाठी.

आपत्ती व्यवस्थापनाचे महत्व किंवा गरज

आधुनिक काळामध्ये नैसर्गिक साधनसंपत्तीचा गैरवापर, पर्यावरणाचा न्हास, तापमान वृद्धी, लहरी हवामान याबरोबरच आपणास मानवनिर्मित आपत्ती किंवा संकटांना सामोरे जावे लागते. उदा. मुंबई मिठी नदीचा पूर, दहशतवादी हल्ला, छत्तीसगढ मधील दगफुटी, इत्यादी. जरी आपण या आपत्तींना रोकु शकत नसलो तरी आपण जर सांघिकपणे अधिक निश्चितपणे व सक्षमपुर्वक आपत्ती व्यवस्थापनाचा प्रयत्न केला तर त्यापासून होणारे नुकसान टाळता किंवा कमी करता येते.

१. भविष्यातील आपत्ती कमी करण्यासाठी : आपत्तीमुळे मोठ्या प्रमाणात जिवित आणि वित्तहानी होते. जर आपण भविष्यात उद्भवणाऱ्या संभाव्य आपत्तीचा अंदाज घेऊन पुर्वतयारी व नियोजन केले तर होणारे नुकसान टाळता येते.



६. आपत्तीत सापडलेल्या लोकांचा बचाव करणे.
७. त्सुनामीची पुर्व सूचना देणारी यंत्रणा बसविणे.
८. आपत्ती व्यवस्थापन शोधून त्याचे नकाशे तयार करणे.
९. भुशास्त्र, भुस्वरूप, जलशास्त्र, जमीन वापर व अहवाल , भुस्खलनाची माहिती एकत्र करून आपत्तीपूर्व सूचना देणारी यंत्रणा विकसीत करणे.

समारोप

मानवाचे जीवन हे विविध आपत्तीने वेढलेले आहे. आपत्तीमुळे देशाची लोकसंख्या व अर्थव्यवस्था प्रभावित होते. प्राचीन काळापासून मानव हा विविध संकटांच्या व आपत्तीचा सामना करित आलेला आहे. मागील काही वर्षांचा विचार केल्यास मानवी व नैसर्गीक आपत्तीचे प्रमाण वाढल्याचे दिसून येत आहे. आपत्ती ही सर्वनाश करणारी घटना आहे. आजच्या आधुनिक काळात मानवाने वैज्ञानिक दृष्ट्या कितीही प्रगती केलेली असली तरी त्याला त्या आपत्तीचा अचुक अंदाज किंवा पुर्वकल्पना येत नाही. आपत्तीमुळे देशाच्या आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक, भौगोलिक व पर्यावरणावर परिणाम होत असतो. यामधून बचावणाऱ्या लोकांना आपले आयुष्य पुन्हा नव्याने सुरु करावे लागते. आपत्कालीन व्यवस्थापनाला अधिकाधिक यशस्वी करण्याकरिता काळानुरूप त्यामध्ये बदल करणे गरजेचे असते.

संदर्भग्रंथ

1. Sharma Vinod K., Disaster Management, National Centre for Disaster Management IIPA, New Delhi, 1995
2. Murthy K. Ramand, Disaster Management Dominant Publishers and Distributors pvt. Ltd. New Delhi, 2004
3. वराटे तुकाराम/ गवळी नारायण, पर्यावरण शिक्षण आणि आपत्ती व्यवस्थापन, अथर्व प्रकाशन, पुणे, जुलै २००७
4. पाटील आर. जी., नैसर्गीक आपत्ती व्यवस्थापन, ओम साई इंटरप्रायजेस, पुणे, २००१
5. हेळंबे एच.बी. लोकप्रशासन नवीन विचार प्रवाह, चिन्मय प्रकाशन, औरंगाबाद, जुलै -२०११

PRINCIPAL
RAJIV GANDHI ARTS, COM
& SCIENCE COLLEGE, KARWAD
TQ. & DIST. AURANGABAD.

23



MAH MUL/03051/2012
ISSN: 2319 9318

UGC Approved
Jr.No.62759

Vidyawarta®

Special Issue
February 2018

01

MAH/MUL/03051/2012

ISSN :2319 9318



Special Issue
February 2018

Jawahar Education Society's
Vaidyanath Collage Parli-vajnath, Dist.Beed (Maharashtra)
Reaccredited by NAAC with 'B' Grade (CGPA2.53)
Affiliated to Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University, Aurangabad
National Seminar on
Disaster Management

3rd Feb. 2018

Organized By
Department of Public Administration & Geography

Chief Editor
Dr. Ippar R.K.
Principal & Senate Member, Dr. BAMU, Aurangabad

Editor
Dr. J.B. Kāngane
Head, Department of Public Administration
Dr. V.L. Phad
Head, Dept. Of Geography



Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At Post Limbaganesh, Tq. Dist. Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com; vidyawarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

- 66) आपत्ती व्यवस्थापन : काळाची गरज " || 197
 प्रा. डॉ. कालिदास दिनकर फड, ता.जि. औरंगाबाद
-
- 67) मानव निर्मित आपत्तीचे कारणे, परिणाम आणि उपाय || 199
 प्रा. डॉ. काशीद एस.व्ही , कन्नड
-
- 68) भारतीय जंगलातील वणव्यांचे व्यवस्थापन (Management of Forest Fire in India) || 201
 प्रा.डॉ. वाषमारे हरी साधू , ता.जि. लातूर
-
- 69) मानवनिर्मित हरितगृह वायू आणि जागतिक तापमानवाढ व परिणाम || 205
 श्री. आदिनाथ मुकूंदराव नागरगोजे & श्री. संतोष सिताराम सोंडगे, नांदेड
-
- 70) "नैसर्गिक आपत्तीचे व्यवस्थापन एक भौगोलिक अभ्यास" || 209
 प्रा.डॉ.घुगे एस.पी. & प्रा.पठाण के.एम., जि.बीड
-
- 71) आपत्ती व्यवस्थापनात प्रशासनाची भूमिका || 212
 प्रा. पेरके वैशाली शेषराव, जि. औरंगाबाद
-
- 72) आपत्ती व्यवस्थापन || 213
 प्रा. अर्चना भगवानराव काळे , औरंगाबाद
-
- 73) निसर्गनिर्मित व मानवनिर्मित आपत्तीचा अभ्यास || 217
 प्रा. डॉ. मुळे अंबादास मारोतीराव & प्रा. डॉ. राठोड सुनिल धोंडिराम , अहमदपूर
-
- 74) महाराष्ट्रातील आवर्षण : कारणे व उपाययोजना || 219
 डॉ.जे.आर. सोळुंके & प्रा.एन.एम. राठोड , जि.बीड
-
- 75) नैसर्गिक आपत्ती नियोजन आणि अंमलबजावणी || 223
 प्रा. डॉ. एम. एफ. राऊतराहे, परभणी
-
- 76) आपत्ती व्यवस्थापन आणि प्रशासन || 225
 कांबळे प्रशांत संपत्ती & स.प्रा. मुसळे नवनाथ पंढरीनाथ, जळकोट
-
- 77) आपत्ती व्यवस्थापन : एक चिकित्सक अभ्यास || 227
 डॉ.संजीव कोळपे, गंगाखेड
-
- 78) आपत्ती व्यवस्थापनात प्रशासनाची भूमिका व आव्हाने || 232
 श्रीमती गांगर्डे प्रतिभा रामचंद्र, जि. उस्मानाबाद



66

" आपत्ती व्यवस्थापन : काळाची गरज "

प्रा. डॉ. कालिदास दिनकर फड
लोकप्रशासन विभाग,

राजीव गांधी महाविद्यालय, करमाड.ता.जि. औरंगाबाद

आपत्तीचा इतिहास हा जीवसृष्टीच्या उदयाइतकाच प्राचीन आहे. मनुष्य जसजसा सुसंस्कृत होत राहिला त्याप्रमाणे आपत्तीचा सामना करणाऱ्या नवनवीन यंत्रणा उभारू लागला परंतु आपत्ती कमी होण्याऐवजी दिवसेंदिवस आपत्तीची संख्या वाढतच आहे. मानवनिर्मित आपत्ती दिवसेंदिवस वाढतच आहेत. या सर्व बाबीला मानवच व मानवाचा हावरटपणा कारणीभूत आहे परंतु त्या सर्व आपत्तींची तीव्रता कमी करणाऱ्या यंत्रणा देखील मानवालाच तयार कराव्या लागणार आहेत व तसा काही अंशी प्रयत्न देखील होत आहे.

आपत्ती या शब्दातच तीचा अर्थ दिसून येतो. आ म्हणजे अचानक आ वासून उभा राहणारे संकट किंवा आपत्ती. जिची आपल्याला कोणतीही पूर्वकल्पना वा सूचना नसते त्यामुळे आपले प्रचंड प्रमाणात नुकसान होते. आपण पूर्वतयारीनीशी नसल्यामुळे तिचा आपल्यावर प्रचंड आघात होतो. अचानक आलेल्या संकटामुळे मानव सृष्टीला, जीवसृष्टीला जबरदस्त धक्का पोहोचतो. मानवाने आपल्या प्रगतीच्या वा विकासाच्या सर्व अवस्थेत प्रचंड संकटे सहन केलेली आहेत व त्या संकटावर मात करूनच तो आपला व समाजाचा विकास करत आल्याचा इतिहास आहे. त्यामुळे संकटे किंवा आपत्ती नवीन नाहीत त्यावर मातच करावी लागणार आहे. आपत्तीचा प्रभाव कमी अधिक प्रमाणात विकसीत व विकसनशील राष्ट्रांवर होतो. परंतु अग्रगत वा मागास राष्ट्रात आपत्तीचा प्रभाव तुलनेने अधिक असतो. त्यामुळे जगातील सर्वच राष्ट्रांना आपत्तीचे व्यवस्थापन करावे लागणार आहे.

आपत्ती म्हणजे अचानकपणे ओढावलेले. मोठे दुर्दैवी संकट अशी ऑक्सफोर्ड शब्दकोशात आपत्तीची संकल्पना स्पष्ट केलेली आहे. या संकल्पनेनुसार आपत्ती अचानकपणे नैसर्गिक असो वा मानवनिर्मित त्या आलेल्या असतात. त्यामुळे मोठे संकट उभे राहते त्यात आपत्तग्रस्थांची नैसर्गिक, भौतिक, शारीरिक, मानसिक व आर्थिक

अतिशय दुर्दैवी अवस्था बनते. राष्ट्रीय आपत्ती व्यवस्थापन कायदा - २००५ नुसार आपत्ती म्हणजे अचानकपणे उद्भवणारे मोठे संकट, दुर्घटना असून ते वातावरणातील बदल, तापमानवृद्धि तसेच नैसर्गिक व वाढत्या मानवनिर्मित घटना व त्यांच्या परिणामामुळे सातत्यशिल विकास प्रक्रियेत अडथळे, मानवी जीवत पुर्ण उध्वस्त होणे, साधनसंपत्तीचा नाश, पर्यावरणीय न्हास, यामुळे सामुदायिक तसेच वैयक्तिक क्षेत्र प्रभावित होते. आपत्ती व्यवस्थापन कायदानुसार आपत्ती ह्या नैसर्गिक व मानवनिर्मित कारणामुळे येतात त्यामुळे वैयक्तिक व सार्वजनिक मालमत्तेचे प्रचंड नुकसान होते त्यामुळे शाश्वत विकासाच्या प्रक्रियेत अडथळे निर्माण होतात. आपत्तीमुळे जीवित व वित्तहानी मोठ्या प्रमाणात होते. जनजीवन विस्कळीत होते. लोकांचे मानसिक खच्चीकरण होते त्यांना आपले आयुष्य नवीनपणे सुरू करावे लागते. आपत्ती ह्या येतच राहणार त्यामुळे होणारे नुकसान टाळण्यासाठी, आपत्तीची तीव्रता कमी करण्यासाठी आपत्तीचे व्यवस्थापन करणे आवश्यक आहे.

आपत्ती व व्यवस्थापन या दोन शब्दापासून आपत्ती व्यवस्थापन ही संकल्पना तयार झालेली आहे. व्यवस्थापन म्हणजे कोणते कार्य करायचे आहे हे अचूकपणे ओळखून कमीत कमी वेळेत, कमीत कमी खर्चात ते कार्य करून घेण्याची ती एक कला आहे. तसेच उपलब्ध संसाधनांचा पर्याय, प्रभावी उपयोग म्हणजे व्यवस्थापन. त्यासाठी नैसर्गिक व मानवनिर्मित आपत्तीचे व्यवस्थापन योग्य प्रकारे करणे गरजेचे आहे. आपत्तीपूर्व, आपत्तीच्या काळात व आपत्तीनंतर आपत्ती निवारणाचे व्यवस्थापन योग्य प्रकारे राबवले तर आपत्तीची तीव्रता निश्चितच कमी होईल. त्यासाठी आपत्तीचे व्यवस्थापन सतत चालू ठेवावे लागणार आहे. आपत्ती व्यवस्थापन ही सतत चालणारी परंतु अतिशय महत्त्वाची क्रिया आहे.

आपत्ती व्यवस्थापनाची गरज

आजच्या आधुनिक युगात देशाला प्रगतीचा वेग प्रचंड ठेवावयाचा असेल तर त्यासाठी आपणास देशाचे नैसर्गिक व भौतिक व मनुष्यबळाविषयक नुकसान टाळण्यासाठी आपत्तीमुळे देशाच्या विकासाच्या गतीला अडथळा निर्माण होतो. त्यासाठी आपत्ती व्यवस्थापन ही आजच्या काळाची गरज आहे.

आपत्ती व्यवस्थापनाच्या माध्यमातून आपत्तीची जोखीम, तीव्रता कमी करता येते तसेच आपत्कालीन परिस्थितीला सामोरे जाण्याची पूर्वतयारी करता येते. आपत्ती आपण टाळू शकत नाही परंतु आपत्ती व्यवस्थापनामुळे आपत्तीतुन होणारे नुकसान कमी करता येते. व्यवस्थापनातून आपत्तीला व आपत्तीमुळे निर्माण झालेल्या परिस्थितीला तात्काळ सामोरे जाता येते, व्यवस्थापनामुळे आपत्तीशी

सामना करण्यासाठी सज्ज राहता येते त्या सज्जतेमुळे आपत्तीतून होणारी हानी टाळता येते. तसेच आपत्कालीन परिस्थितीत जीवित व वित्तहानी कमी करण्यासाठी व आपत्ती व्यवस्थापनामुळे आपत्ती उद्भवल्यास त्याचे परिणाम कमी कसे करता येतील यावर भर देण्यात येतो त्यामुळे होणारे संभाव्य नुकसान टाळता येते.

आपत्तीमुळे आपतग्रस्त लोकांचे व त्यांच्याशी संबंधित इतरांचे मानसिक खच्चीकरण झालेले असते. त्यांचे मानसिक खच्चीकरण झालेले असते. होत्याचे नव्हते झालेले असते वैफल्यग्रस्त मनाची इ तीज भरून काढणे अवघड असते परंतु आपत्ती व्यवस्थापनाच्या माध्यमातून स्वयंसेवी संस्था त्यांचे नातेवाईक, मित्र, तज्ञ डॉक्टर व समुपदेशकाद्वारे, त्यांचे नीतिधैर्य, मनोधैर्य उंचावून जगण्याचे वळ दिले जाते. त्याचबरोबर आपतग्रस्तांना भविष्यातील आपत्तीसाठी सक्षम केले जाते. भविष्यात होणाऱ्या आपत्तीच्या पूर्वतयारीसाठी आपत्तीव्यवस्थापन महत्त्वाचे ठरते. आपतकालीन स्थितीत सर्वत्र अंदाधुंद असते. कोणत्याच घटकात समन्वय नसतो. मदतीच्या कार्यात पुनरावृत्ती निर्माण होते त्यामुळे आपत्ती व्यवस्थापनातून कार्यातील पुनरावृत्ती टाळून मदत सर्व घटकांना पोहोचेल व मदतीने योग्य वितरण केले जाते त्यासाठी आपतग्रस्त भागात सूचनांसाठी प्रभावी संदेशवहन यंत्रणा, समन्वय साधणाऱ्या यंत्रणा निर्माण केल्या जातात.

आपत्ती व्यवस्थापनामुळे आपतकालीन मदतीच्या कार्यातील व्यवहार पारदर्शिकपणे होतात. व्यवस्थापनामुळे तेथे भ्रष्टाचाराला आव नसतो. आपत्ती व्यवस्थापनाद्वारे लोकांत समाजातील विविध घटकांच्या द्वारे स्वयंसेवी संस्था, एन.एस.एस, एन.सी.सी, शासकीय यंत्रणाद्वारे आपत्कालीन स्थितीत बचाव कसा करायचा, इतरांना मदत कशी करायची, आपत्तीचे परिणाम व आपत्तीला न घाबरता गंभीरपणे, धैर्याने समर्थपणे कसे तोंड द्यायचे यासाठी जाणीव जागृती व लोकशिक्षणाद्वारे लोकांचे प्रबोधन केले जाते. त्यामुळे लोक धैर्याने आपत्तीला तोंड देतात. आपत्ती व्यवस्थापनामुळे आपतग्रस्त लोकांचे पुनर्वसन चांगल्या प्रकारे होते तसेच आपतग्रस्त भागात रस्ते, घरे इ. पुनर्बांधणी प्रभावीपणे करण्यासाठी आपत्ती व्यवस्थापन आवश्यक आहे.

सारांश :-

आपण आपत्ती टाळू शकणार नाही आपत्ती येतच राहणार परंतु आपत्ती व्यवस्थापनाच्याद्वारे आपत्ती पूर्व आपतकालीन व आपत्तीनंतर या तिन्ही प्रकारच्या दरम्यान तीव्रता कमी करता येते. आपत्ती व्यवस्थापनाच्या या कार्यात सर्वांचाच शौसन, जनता, युवक, स्वयंसेवी संस्थांचा सहभाग आवश्यक आहे. या सर्वांच्या सहकार्यातून आपण कोणत्याही आपत्तीचा खंबीरपणे सामना करू शकतो. आपत्ती व्यवस्थापनाद्वारे आपतग्रस्तांचे मदत व पुनर्वसनाद्वारे त्यांच्यात नीतिधैर्य,

मनोबल निर्माण करून जगण्याची उर्मी तयार केली जाते व आपत्तीद्वारे होणारे नुकसान कमी करता येते. देशाच्या सततच्या विकास प्रक्रियेला गती देण्यासाठी आपत्ती व्यवस्थापन सध्याच्या काळाची गरज आहे.

संदर्भ :-

- १) shina p.c - Disaster vulnetrabilities and Risks, Trends, Concepts & Approach S.B.S. Pub-lisher New Delhi, २००६.
- २) singh k.k - Disaster Management manmade Disaster
- ३) Goel S.L. - Management of manmade Disaster
- ४) Manik k - Earthquake & Natural Di-saster
- ५) हेहंबे एच. वी. - लोकप्रशासन नवीन विचार प्रवाह, चिन्मय प्रकाशन, औरंगाबाद, २०११
- ६) "योजना" विशेषांक - जानेवारी, २०१७

□□□


PRINCIPAL
RAJIV GANDHI ARTS, COMMERCE
& SCIENCE COLLEGE, KARMAD
TQ. & DIST. AURANGABAD.

24



MAH MUL/03051/2012
ISSN: 2319 9318

UGC Approved
Sr.No.62759

Vidyawarta®

Jan. To March 2018
Issue-22, Vol-15

01

MAH/MUL/ 03051/2012

ISSN :2319 9318



Jan. To March 2018
Issue-22, Vol-15

Date of Publication
15 March 2018

Editor

Dr. Babu g. Gholap

(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

विद्येविना मति गेली, मतीविना नीति गेली
नीतिविना गति गेली, गतिविना वित्त गेले
वित्तविना शूद्र खचले, इतके अनर्थ एका अविद्येने केले

-महात्मा ज्योतीराव फुले

❖ विद्यावार्ता या आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. न्यायक्षेत्र:बीड



"Printed by: Harshwardhan Publication Pvt.Ltd. Published by Ghodke Archana Rajendra & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor Dr. Gholap Babu Ganpat.



Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.

At Post Limbaganesh, Tq. Dist. Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubl@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

14) Increasing use of e-learning among students in reference, Bhopal City (MP) Sammar Singh Kushwaha—Dr. Anil Shivani	63
15) ROLE OF ACADEMIC LIBRARIES IN HIGHER EDUCATION Dr. Mrs Meenakshi Jayant Thombrey, Chandrapur	66
16) Criticism of life in the poems of John Donne Dr. Shyamli Sona, Bhoor, Bareilly	68
17) Co relational Study between Scientific Values & Educational Achievement of the... Dr. Gunjan S.Vashi, Vapi	73
18) लोकमातेच्या लौकिकाची लोकगाथा : 'रमाई' डॉ. संजय बालाघाटे, लोहा	76
19) गुणवत्ता पूर्वक शिक्षण डॉ. बलीद उज्वला शिमोन, औसा	79
20) सातपुडा परिसरात संस्थानिकांच्या काळात असलेली दळणवळणाची साधने प्रा. डॉ. भामरे नानाजी दगा, जि. नंदुरबार (महाराष्ट्र)	81
21) मा. कांशीराम आणि बहुजन समाज प्रा. किशोर शेषराव चौरे, बल्लारपूर, जि. चंद्रपूर	86
22) आनंदतनय व खुनाथपंडित आणि अभिजात परंपरा डॉ. संजय रा. पाखमोडे, सडक—अर्जुनी, जि. गोंदिया.	88
23) म.गांधीजींचे प्रेरक विचार एक विश्लेषण प्रा.डॉ.कालिदास दिनकर फड, करमाड, ता.जि.औरंगाबाद	92
24) शाहू महाराजांच्या कामगार संघटनेच्या भुमिकेचे अध्ययन प्रा.डॉ. एन.बी. पोहकर, ता. औंढा नागनाथ, जि. हिंगोली	94
25) मध्ययुगीन तेलुगु—महाराष्ट्र सांस्कृतिक संबंध श्री. दत्ताराम उध्दव राठोड, मु.पाथर्डी जिल्हा अहमदनगर	97
26) 'आधुनिक महाराष्ट्राचे शिल्पकार' यशवंतराव चव्हाण डॉ. सौ. शुभांगी डी. राठी-प्रा. दिलीप हरसिंग राठोड	105

23

“म.गांधीजींचे प्रेरक विचार एक विश्लेषण”

प्रा.डॉ.कालिदास दिनकर फड
राजीव गांधी महाविद्यालय,
करमाड, ता.जि.औरंगाबाद.

महात्मा गांधीजींचे विचार हे विश्व प्रेरक व दुरदृष्टीचे आहेत. उद्याचे जग हे अहिंसेवर अधिष्ठीत असा समाज झाले पाहिजे ते अव्यवहारिक वाटण्या सारखे आहे परंतु ते प्रत्यक्षात येण्यासाठी मुळीच अशक्य नाही कारण ते एका व्यक्तीला शक्य आहे तर समग्र व्यक्ती समुहांना, राष्ट्रांना का? शक्य होणार नाही. प्रत्येक व्यक्तीने प्रामाणिक प्रयत्न केले तर संपूर्ण विश्व अहिंसामय होण्यास वेळ लागणार नाही.

म.गांधीजींची ईश्वरावर प्रचंड जीवंत श्रद्धा होती. जगातील सर्व अनर्थांचे मुळ जित्या जागत्या ईश्वरावर जिवंत श्रद्धा नसणे हेच असल्याचे त्यांनी सांगितलेले आहे. मनुष्याने ईश्वराच्या, परमेश्वराच्या ठिकाणी श्रद्धा ठेवली पाहिजे. मनुष्य जातीचे मुलभूत सदगुण निकृष्ट माणसाला देखील अंगी बाणवून घेणे शक्य असल्याचे शिकविण्यात आलेले आहे. त्याची सत्यता गांधीजींनी आपल्या स्वअनुभवातून दिसून आली आहे. ही निःसंदिग्ध सार्वत्रिक शक्यता तेच मानवाचे मानवेत्तर ईश्वरी सृष्टीहुन वैशिष्ट्ये आहे. अहिंसा धर्म हा केवळ ऋषिमुनींसाठी कल्पिलेला नाही तो सामान्य माणसासाठी आहे. हिंसा हा पशु जातीचा धर्म आहे तर अहिंसा हा मनुष्य जातीचा धर्म आहे. हिंदुस्तानने अहिंसा धर्माचा आचार करावयाचा गांधीजींचा आग्रह होता. हिंदुस्तान दुर्बल आहे म्हणुन अहिंसा धर्म आचारावा असे नसुन त्याने आपल्या शक्तीची व सामर्थ्याची जाणिव ठेवून अहिंसेचे

आचरण करावे. अहिंसा ही दुर्बलता नसून सामर्थ्य आहे या भुमिकेतून अहिंसेचे आचरण व्हावे.

गांधीजींच्या मते, 'धर्म हा इतर सर्व प्रवृत्तींना नैतिक अधिष्ठान देतो. मानवी प्रवृत्ती व्यतिरिक्त कुठलाही धर्म आपल्याला ठाऊक नसल्याचे गांधीजींनी प्रतिपादीले आहे. सत्य आणि अहिंसा केवळ वैयक्तिक आचरणाची बाब करता कामा नये तर ती समुह, समाज आणि राष्ट्रे यांच्या आचरणाची बाब करावयाची आहे. अहिंसा हा आत्म्याचा गुण आहे म्हणुन तो प्रत्येकाने आणि तो जीवनाच्या प्रत्येक गोष्टीत आचरावयाचा आहे तो जर सर्वच क्षेत्रात आचरता येत नसेल तर त्याची व्यावहारिक किंमत शून्य आहे. अहिंसा हा जीवन विचार असून तो जीवन जगताना प्रत्येक कृतीत अंमलात आणावयास पाहिजे.

गांधीजी प्रार्थनेला धर्माचा साक्षात प्राण, सारच मानायचे, प्रार्थना हे गांधीजींच्या जीवनाचे तारक तत्व होते. गांधीजी सार्वजनिक व खाजगी आयुष्यात जेव्हा कटू अनुभवाला सामोरे जायचे त्यातून ते कधी कधी निराश होत अशावेळी निराश प्रसंगातून प्रार्थनेमुळे गांधीजी आपली सुटका करून घेत. प्रार्थना हा त्यांच्या जीवनाचा अविभाज्य भाग होता. जसजसी गांधीजींची ईश्वरावरील श्रद्धा वाढत गेली तसतशी प्रार्थनेची अतुरता अनीवार होत गेली. प्रार्थनेशिवाय त्यांना जीवन निरस आणि शून्य वाटत. शरीराला जसे अन्न तसे आत्म्याला प्रार्थना अपरिहार्य वाटत. वस्तुतः शरीराला अन्नाची तितकी गरज नाही जितकी प्रार्थनेची आत्म्याला आहे. शांती ही प्रार्थनेतून येते म्हणुन प्रार्थना ही मनुष्याच्या जीवनाचा जीव्हाळा व्हायला पाहिजे. प्रत्येकाने आपल्या दिवसाची सुरुवात प्रार्थनेने करावी. प्रार्थना इतकी प्राणवान करावी की, ती आपल्याला संध्याकाळपर्यंत सोडणार नाही. प्रार्थनेनेच दिवसाची समाप्ती करावी म्हणजे रात्र स्वप्न व स्वप्नभय यापासून मुक्त, शांततेत जाईल. प्रार्थनेच्या स्वरूपाबाबत चिंता करू नये. ती कोणत्याही स्वरूपाची, कशीही असो परमात्याशी आपला संवाद घडवून आणील असे तिचे स्वरूप असावे. प्रार्थना करत असताना आपले मन मात्र



इतरत्र भटकू देवू नये. पूर्ण मन प्रार्थनेवर केंद्रीत करावे अशा स्वरूपाची प्रार्थना गांधीजींना अपेक्षित होती. ईश्वरावरील श्रद्धा महत्वाची असून ती श्रद्धाच माणसाला सुरक्षित बचावून नेते. श्रद्धा जी पर्वताला हलवते आणि समुद्राला एका उडीत ओलांडते ती श्रद्धा म्हणजे हृदयस्थ परमात्याचे जिते जागते भान आहे.

गांधीजींच्या मते, प्रत्येक दिवसाची सकाळ ही जगातील कोणालाही मी भिणार नाही, एका ईश्वराचे भय बाळगीन व कोणाचाही मी व्देष करणार नाही तसेच कोणाचाही अन्याय मी सहन करणार नाही व असत्याला मी सत्याने जिंकून आणि असत्याचा प्रतिकार करताना सर्व कष्ट मी सहन करीन या संकल्पनेने व्हायला पाहिजे. प्रत्येकाची सद्सदविवेक बुद्धी ही समान नसते त्यामुळे परस्पराविषयी सहिष्णुता बाळगणे हाच वागणुकीचा सुवर्ण नियम असून या नियमाने जगायला पाहिजे.

गांधीजींच्या मते, जेव्हा जेव्हा आपण संशयात पडाल, आपणास स्वार्थ ग्रासून टाकील तेव्हा आपण आपल्या पाहण्यात आलेल्या अत्यंत दरिद्री, असहाय्य माणसाचा चेहरा डोळ्यासमोर आणावा आणि आपण करावयाचे योजिलेले काम असहाय्य, दारिद्र्य माणसाला काही उपयोगाचे पडेल का असा प्रश्न स्वतःच करून त्यापासून त्याला काही लाभ होणार आहे का? त्यापासून तो आपल्या जीवनाचा व भवितव्याचा स्वामी बनायला काही सहाय्य होणार आहे का? त्यामुळे भुकेल्या आणि अध्यात्मिक दृष्ट्या उपासमार झालेल्या आपल्या लक्षावधी देशबांधवांना स्वराज्य व आत्मराज्य जवळ येणार आहे का? या माध्यमातून आपला संशय व स्वार्थ नाहिसा होईल.

माणसाचे सौंदर्य त्याच्या चारित्र्यात वा शीलत असते, जनावराचे त्याच्या शरीराच्या आकृतीत असते. माणसाबबत त्याच्या चांगले वाईटपणाची कसोटी त्याचे अंतःकरण आहे त्याचे रूप वा त्याची साठविलेली संपत्ती नव्हे. जेव्हा आपण सोन्याच्या संग्रहापेक्षा सत्याचा संग्रह अधिक

दाखवू. सत्ता आणि संपत्ती यांच्या भपक्यापेक्षा अधिक निर्भयता दाखवू तेव्हाच आपले राष्ट्र हे खरे खुरे अध्यात्मिक राष्ट्र होईल. आपली घरे, राऊळे आणि देवळे यांच्यातून संपत्तीच्या निशाण्या तेवढ्या जर आपण झाडून काढल्या तर सेनेचे दुःसह ओझे वाहावे न लागता कितीही शत्रुसेना जरी एकवटल्या तरी त्यांना तोंड देता येईल. गांधीजींचे हे प्रेरक अध्यात्मिक, तात्विक विचार, आजघडीला अत्यंतिक उपयुक्त आहेत.

संदर्भ:-

- १) Gandhi M.K. -My experiement with truth, 1958.
- २) Prabhu R.K.& Rao W.R.-The mind of Mahatma Gandhi oxford University press, 1945
- ३) Tendulkar & Dhavale K.B.-Gandhiji his life & work Bombay, 1945
- ४) गांधी मनु अकला चलो रे
- ५) पटेल रावजीभाई. गांधीजींची साधना.
- ६) भारदे बाळासाहेब.गांधी विचार दर्शन खंड-३ जीवन साधना
महाराष्ट्र गांधी स्मारक निधी प्रकाशन, पुणे १९९४

□□□


PRINCIPAL
RAJIV GANDHI ARTS, COMMERCE
& SCIENCE COLLEGE, KARMA
TQ. & DIST. AURANGABAD